याग मण्डल विधान
एवं
पंच कल्याणक पूजा

कृतिकार

–आचार्य वसुनन्दी मुनिराज

कृति	:	याग मण्डल विधान एवं पंचकल्याणक पूजा
मंगल आशीर्वाद	:	परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज016-17)
कृतिकार	:	आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
संपादन	:	मुनि प्रज्ञानंद
प्राप्ति स्थान	:	• श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बोलखेड़ा (कामां) राजस्थान • अ. क्षे. जय शांतिसागर निकेतन, मंडोला गाजियाबाद (उ.प्र.) • हिमांशु जैन मो. 09024182930
संस्करण	:	प्रथम 1000 (सन् 2018)
प्रकाशक	:	निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

पुण्यार्जक : श्री संतोष कुमार जैन, श्री पंकज जैन, श्री अमित जैन
(मंडी रामदास, मथुरा)

दो शब्द

भगवान जिनेन्द्र की भक्ति परम्परा से मोक्ष सुख को देने वाली तो है ही स्वर्गादिक सुखों की प्राप्ति भी सहज ही हो जाती है। आचार्य पूज्यपाद स्वामी कहते हैं कि-

यत्र भावः शिवं दत्ते द्यौः कियद्दूरवर्तिनी।
यो नयत्याशु गव्यूतिं क्रोशार्द्धे किं स सीदति॥

-इष्टोपदेश

उसी भक्ति के आलम्बन के लिए जैन जगत में अनेक भक्ति काव्यों की रचना की गई है। आज वर्तमान में मंदिरों का निर्माण भी अधिक हो रहा है जिसके कारण पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें भी अधिक होने लगीं है जिस कारण से परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ने अल्प समय में सरल शब्दों में यागमण्डल विधान की रचना की है। जिससे प्रतिष्ठा पात्र सरलता पूर्वक यागमण्डल पाठ पढ़ते हुए भक्ति में लीन हो सकें, जिसको देखकर आराध्य के गुणों का स्मरण सरल भाषा में समझने में कोई भी परेशानी नहीं होती है।

इन आयोजनों में समग्र विधि का क्रम पूर्वक सांगोपांग संकलन की आवश्यकता समझी गई जिसे प. पूज्य मुनि श्री ने अपने अथक प्रयास से शीघ्र सम्पन्न कराके पुस्तकाकार दे दिया।

कृति के प्रथम प्रकाशन पर मेरा कोटि-कोटिशः श्री गुरुचरणों में नमोस्तु। आपका आशीष मेरे ऊपर निरंतर बना रहे ऐसी जीवन पर्यंत अपेक्षा रखता हूँ।

प्रतिष्ठाचार्य
-पं. मनोज शास्त्री, आहार जी

पुरोवाक्

जिनशासन में अनाकार व अमूर्त देवत्व की पूजा आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए हर क्षेत्र और हर काल में प्रचलित रही है। सिद्धों की उपासना द्रव्य से भी की जाती है और भावों से भी। उपासक द्रव्य पूजा भावपूर्वक करते हैं किंतु श्रमण शारीरिक वाचनिक क्रियाओं के साथ-साथ भाव भक्ति करते हैं एवं निर्विकल्प ध्यान को प्राप्त करने के लिए शाश्वत, निरंजन, निरुपम, अविचल, अविनाशी, निकल परमात्मा, सिद्धों का ध्यान करते हैं। इतना ही नहीं निराकार अमूर्त जिन की पूजा के साथ-साथ साकार परमात्मा की पूजा का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। पाँच परमेष्ठी में से चार परमेष्ठी की साकार मूर्ति बनाकर ही उपासना की जाती है। सिद्ध परमेष्ठी की भी साकार मूर्ति बनाकर स्थापना की जा सकती है। सिद्ध परमेष्ठी के बिंब अष्ट प्रातिहार्यादि वैभव से रहित तथा श्रीवत्स, नख, केशादि से विरहित होते हैं। अर्हतादि पंचपरमेष्ठी के बिंब, वेदी, जिनालय, शिखर शुद्धि व कलशारोहण आदि की विधि प्रतिष्ठा ग्रंथों में उल्लिखित है।

जिनबिंबादि प्रतिष्ठा में यागमंडल विधान अनिवार्य रूप से किया जाता है। याग शब्द का अर्थ होता है पूजा, अर्चना, महामह, यज्ञ इत्यादि व मंडल शब्द का अर्थ होता है समूह! यागमंडल का संपूर्ण

अर्थ है पूज्यों के समूह की पूजा, उनके गुणों की पूजा।

जिनशासन में अनादिकाल से पंच परमेष्ठी ही परम पूज्य थे, हैं और रहेंगे। इन पाँच परमेष्ठी के आधार से उनके बिंब, उनके आलय, उनके उपदेश एवं उनकी चेतना का भाव भी पूज्य माना जाता है। लोक व्यवहार में इन्हें नवदेवता के नाम से भी जानते हैं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, जिनधर्म व जिनागम । इतना ही नहीं इन पंच परमेष्ठी के संस्पर्श व सानिध्य में आया धूलि व जल का कण भी पूज्य अवस्था को प्राप्त हो जाता है। उनकी पदरज, गंधोदक या पादपीठ आदि भी देवताओं के द्वारा पूजनीय होते हैं। जैसा कि कहा भी है-

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पापनाशनं।
जिनगंधोदकं वंदे, सर्वविघ्न विनाशनं।।

आचार्य भगवन् श्री मानतुंग स्वामी कहते हैं-

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित पादपीठ,
स्तोतुं समुद्यत मतिर्विगतत्रपोऽहं।
बालं विहाय जल संस्थितमिन्दु बिंब,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।

हे सुरगण पूजित पादपीठ ! बुद्धिहीन होने पर भी जो मैं आपकी स्तुति करने के लिए तत्पर हुआ हूँ, यह मेरी निर्लज्जता एवं धृण्हता ही है। भला, जल में दृश्यमान चंद्रमा के प्रतिबिंब को पकड़ने का साहस एक नादान अबोध बालक के अतिरिक्त और कौन कर सकता है? अर्थात् कोई नहीं।

उद्भूतभीषण-जलोदर भारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत जीविताशाः।

त्वत् पादपंकजरजोऽमृतदिग्ध देहा,
मर्त्या भवन्तिमकरध्वजतुल्यरूपाः।।

हे भव रोग चिकित्सक! जिन मनुष्यों को अत्यन्त भयंकर जलोदर रोग उत्पन्न हो गया हो, फलस्वरूप उसके भार से जिनकी कमर टेड़ी पड़ रही हो। जो नितान्त शोचनीय अवस्था प्राप्त होकर जीने की आशा छोड़ चुके हों। वे यदि आपके चरणकमलों की रज को मानकर शरीर पर लपेट लेते हैं तो वे सचमुच ही कामदेव के समान स्वरूपवान् बन जाते हैं।

अथवा और भी कहा है-

जे गुरु चरण जहाँ धरे, जग में तीरथ जेह।
सो रज मम मस्तक चढ़ो भूधर माँगे एह।।

प्रस्तुत कृति श्री यागमंडल विधान एवं पंचकल्याणक पूजा में प्रथमतः पूर्वाचार्यों व प्रतिष्ठा ग्रंथों के अनुसार पंच परमेष्ठी की पूजन त्रिकालवर्ती भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों के अर्घ्यं, वर्तमान काल में विदेह क्षेत्र में विद्यमान बीस तीर्थंकरों के अर्घ, अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु के गुणों के अर्घ एवं चौंसठ ऋद्धि के अर्घों को अत्यंत सरल, सहज एवं बोधगम्य भाषा में लिखते हुए पूज्य आचार्य श्री ने जिनागम के सिद्धांतों का भी पूर्णतया **ध्यान रखा** है। कहीं भक्ति का अतिरेक दृष्टिगोचर होता है किंतु मर्यादा का उल्लंघन कहीं प्रतीत नहीं हुआ।

समीपस्थ विद्वानों का पूज्य आचार्य श्री से कई वर्षों से आग्रह चल रहा था कि आप यागमंडल विधान की रचना करें। उनके सविनय अनुरोध को स्वीकार करते हुए पूज्य गुरुदेव ने तीन दिन में विहार के दौरान प्रस्तुत विधान को लिखाया।

इस विधान में पूज्य गुरुदेव ने तो सब कुछ सर्वोचित ही लिखाया है किन्तु प्रमादवश या अल्पज्ञता वश इसके संपादन में हमसे जो कोई भी त्रुटि रह गई हो तो सुधी पाठक व विद्वत्जन हमें उन त्रुटियों से अवगत कराने का सविनय अनुग्रह करें। एवं हमारा सत्श्रद्धालु आसन्नभव्यों से सविनय यही अनुरोध है वे इस कृति को हंसवत् गुणग्राही दृष्टि बनाकर भक्ति रस का आनंद लें। नीर क्षीर विवेकी हंस इसीलिए लोक में सम्मानीय होता है क्योंकि वह जल मिश्रित दूध में से मात्र दूध को ही ग्रहण करता है एवं पानी को छोड़ देता है। यद्यपि लोक में जोक की तरह दोष ग्रहण करने वाले व्यक्तियों की भी कमी नहीं है किन्तु नि:संदेह आप जैसे सत् श्रद्धालु भद्रपरिणामी आसन्न भव्यों की अल्पता अवश्य है।

यदि इस कृति से आप किंचित् भी लाभान्वित होते हैं तो हम अपने पुरुषार्थ को और अधिक सार्थक समझेंगे। पूज्य गुरुवर श्री का संयम पथ सदैव आलोकित रहे, इनके आरोग्य की वृद्धि हो, इन्हीं भावनाओं के साथ उनके चरणों मे सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित त्रिकाल नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।

गुरु-चरण चंचरीक
मुनि प्रज्ञानंद

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
मंगलाष्टक	11
विधान की प्रारम्भिक क्रियायें	12
अमृतस्नान मंत्र	12
तिलक मन्त्र	13
दिग्बन्धन मन्त्र	13
परिचारक मन्त्र	13
आत्म रक्षा मंत्र	14
शान्ति मंत्र	14
भूमि शुद्धि मंत्र	14
पात्र शुद्धि मंत्र	14
द्रव्य शुद्धि मंत्र	14
सकलीकरण	15
यज्ञोपवीत धारण	16
जल शुद्धि मंत्र	17
मंगलकलश स्थापना	17
दीपक स्थापना	17
अभिषेक पाठ	18
यन्त्राभिषेक	20
शांतिधारा	23
विनयपाठ	27
पूजा प्रारम्भ	30
पंचकल्याणक अर्घ्य	31
पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य	31
पूजा प्रतिज्ञा पाठ	32
परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ	34
श्री देव शास्त्र गुरु पूजा	35

श्री देव-शास्त्र-गुरु, विदेहक्षेत्र स्थित श्री विद्यमान	
बीस तीर्थंकर एवं अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समुच्चय पूजा	39
समुच्चय चौबीसी पूजा	44
श्री आदिनाथ जिन पूजा	47
श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा	52
श्री शांतिनाथ जिन पूजा	57
पंचकल्याणक	59
जयमाला	60
(छप्पय छन्द)	60
श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा	62
श्री महावीर जिन पूजा	67
नवदेवता पूजन	72
अर्घावली	76
श्री बाहुबलि भगवान का अर्घ्य	85
श्री बाहुबलि भगवान का अर्घ्य	85
समुच्चय महार्घ्य	89
शांति पाठ	90
विसर्जन पाठ	92
याग मण्डल विधान पूजन	93
गर्भ कल्याणक-पूजन	158
जन्म कल्याणक पूजन	165
तप कल्याणक पूजन	173
ज्ञान कल्याणक पूजन	180
मोक्ष कल्याणक पूजन	187
सिद्ध भक्ति	194
हवन विधि	197
शान्त्यष्टकम् (शान्ति भक्ति)	208
मण्डल विसर्जन	210
मंगल ध्वज विसर्जन	211
निर्वाण काण्ड	212

याग मण्डल विधान
एवं पंच कल्याणक पूजा

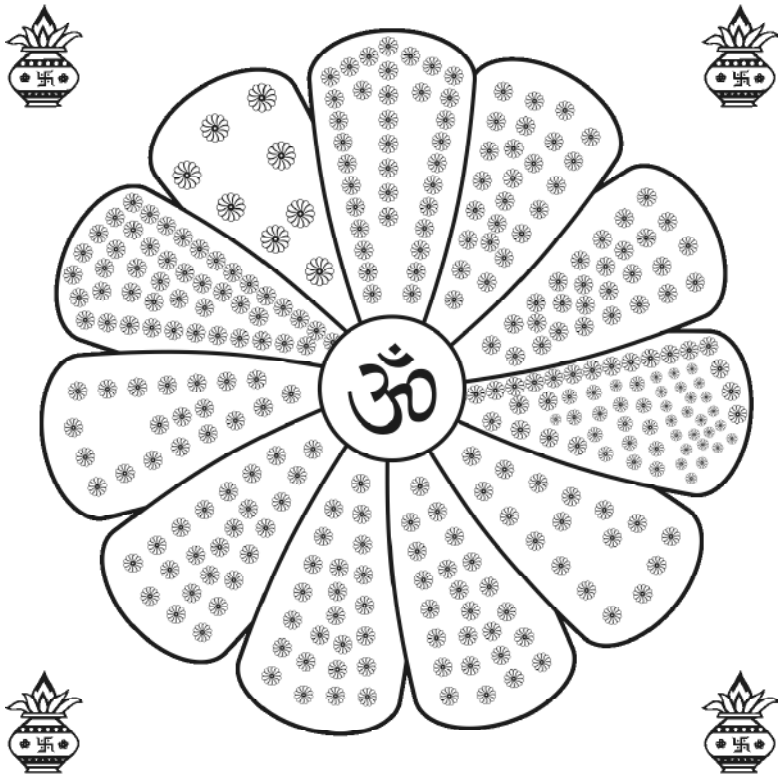

इस विधान में 11 वलय हैं। प्रथम आदि 11 वलयों में क्रमशः अर्घों की संख्या 17, 24, 24, 24, 20, 46, 8, 36, 25, 28 व 64 है।

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त सुपाठकाः मुनिवरः रत्नत्रयाराधकाः
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥1॥

श्री मन्नम्र-सुरा-सुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥2॥

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्त ममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति श्री नगराधिनाथ, जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥3॥

नाभेयादि जिनाधि-पास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तोभरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः सप्तोत्तराविंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥4॥

ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगतापञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग महानिमित्त कुशला येष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥5॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृत्तिमही वीरस्य पावापुरे।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेद शैलेऽर्हताम्।

शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥6॥

ज्योतिर्व्यन्तर भावनामरगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिताः,
जम्बू शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥7॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवे,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर-प्रवेश-महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥8॥

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थ कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि॥9॥

॥ इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम् ॥

विधान की प्रारम्भिक क्रियायें

अमृतस्नान मंत्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्रावय-स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें।)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/जयमानस्य सर्वांगशुद्धि-हेतवे नव तिलकं करोम्यहम्।

1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ, 7. कान, 8. नाभि, 9. हाथ।

दिग्बन्धन मन्त्र

(सभी दिशाओं में बन्द मुट्ठी से पुष्पक्षेपण करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशातः समागत विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशातः समागत विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।

(दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशातः समागत विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूँ फूट स्वाहा।

(पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।

(उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशातः समागत विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।

(सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा। (सात बार)

आत्म रक्षा मंत्र

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय-घातय परविघ्नान् स्फोटय-स्फोटय सहस्रखण्डान कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द-छिन्द परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द वाः वाः क्षां क्षः हूं फट् स्वाहा।

(अपने ऊपर पुष्पक्षेपण करें)

शान्ति मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्व पर-कृच्छ्रद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मंत्र

ॐ शोधयामि भूभागं जिनधर्माभिरूत्सवे।
काल धौतोज्ज्वल स्थूल कलशापूर्णवारिणी॥

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु ह्रूं फट् स्वाहा।

पात्र शुद्धि मंत्र

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नाय, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि।

(पूजा के बर्तन, चटाई आदि पर जल सिंचन कर शुद्ध करें)

द्रव्य शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः असि आ उ सा समस्त तीर्थ पवित्र जलेन शुद्ध पात्र निक्षिप्त पूजा द्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्धि करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

(शिर झुकाते हुये दोनों अंगूठों से नमस्कार करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

(दोनों तर्जनी से नमस्कार करें)

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः

(दोनों मध्यमा से नमस्कार करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

(दोनों अनामिका से नमस्कार करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठकाभ्यां नमः।

(दोनों कनिष्ठा से नमस्कार करें)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः।

(दोनों कर तलों से नमस्कार करें)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

(दोनों कर पृष्ठों से नमस्कार करें)

अंग शुद्धि (दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(सिर का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(मुख का स्पर्श करें)

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं ह्रूँ मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(हृदय का स्पर्श करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(नाभि का स्पर्श करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पैरों का स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां माम् रक्ष रक्ष स्वाहा।

(शरीर पर पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(वस्त्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं ह्रूँ मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पूजा साामग्री के पास पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजास्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(पूजा स्थल पर पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः सर्वजगत रक्ष रक्ष स्वाहा।

(चारों ओर पुष्प क्षेपण करें)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वविघ्न निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

(सब ओर पुष्पक्षेपण करें)

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

(परिचारकों पर पुष्पक्षेपण करें)

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणाय अर्हं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जल शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गंगा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरि-कान्ता सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता सुवर्णरूप्यकूला-रक्ता रक्तोदाः क्षीराम्भोनिधि-जलं-सुवर्णघट-प्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चिता-मोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।)

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पूंगादि फलादि प्रभृति वस्तूनि स्वाहा।
2. ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

मंगलकलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्मणि वीर निर्माण सम्वत्सरे...मासानामुत्तमे मासे...मासे...पक्षे...शुभ तिथौ...वासरे प्रशस्त लग्ने...कार्यस्य निर्विघ्न समाप्त्यर्थंनवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादि शोभितं मंगल कलश स्थापनं करोम्यहम्। श्रीं ह्रवीं क्ष्वीं हंसः स्वाहा।

(ईशान कोण में मंगलकलश स्थापित करें)

दीपक स्थापना

रुचिर दीप्तिकरं शुभ दीपकं, सकल लोक सुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिर जालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

अभिषेक पाठ

श्रीमन्नतामर शिरस्तटरत्नदीप्ति, तोयावभासि चरणाम्बुज युग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत पद प्रदमाभिनम्य, त्वन्मूर्ति षूद्यदभिषेक विधिं करिष्ये॥

अथ पौर्वाह्णिक/माध्याह्णिक/अपराह्नि क देव वन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तव-समेतं श्रीपंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(27 श्वासोच्छ्वास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरण करें)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाजिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूत मुखादयस्ताः।
सद्भाव लब्धि समयादि निमित्त योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

(पुष्पक्षेपण करें)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतौद्यैः, श्री प्रस्तरे पूर्ण शशांककल्पे।
श्री वर्तके चन्द्र-मसीतिवार्तां, सत्यापयंती श्रियमालिखामि॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोम्यहम्।

(अभिषेक की पीठ या थाली में श्रीलेखन करें)

कनकादि-निभं कम्रं, पावन पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिनस्नपनायभक्तितः॥

ॐ ह्रीं पीठस्थापनं करोम्यहम्।

(सिंहासन स्थापित करें)

भृंगार चामर सुदर्पण पीठ कुम्भ
तालध्वजातप निवारक भूषिताग्रे।
वर्धस्वनन्द जय पाठ पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्तमहं श्रयामि॥

वृषभादि सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णु चर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह स्नपनपीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ इति प्रतिमा स्थापनम्।

(प्रतिमा पाण्डुकशिला पर विराजमान करें)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य विधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि वारिभिरपूरय दुद्घ कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम चन्दन भूषिताग्रान्।।
शातकुम्भीय कुम्भौघान्, क्षीराब्धेस्तोय पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुः कोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोम्यहम्।।

(चार कलश स्थापित करें)

आनन्द निर्भर सुर प्रमदादि गानै-
र्वादित्र पूर जय शब्द कलप्रशस्तैः।
उद्गीयमान जगतीपति-कीर्तिमेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म प्रबन्ध निगडैरपि हीनताप्तम्,
ज्ञात्वाऽपि भक्तिवशतः परमादि देवम्।
त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव।
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्वम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

तीर्थोत्तम भवै नीरैः क्षीरवारिधि रूपकैः।

स्नपयामि सुजन्माप्तान्, जिनान् सर्वार्थ सिद्धिदान्॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

सकल भुवन नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषव विधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिष-वन वारां, बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विदधातु भुक्ति सन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्री द्रीं हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेकं करोमि।

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटि,
संलग्न रत्न किरणच्छविधूसरांघ्रिम्।
प्रस्वेद ताप मल मुक्तमपि प्रकृष्टै,-
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाऽभिषिञ्चे॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतु-र्विंशति तीर्थंकर परमदेवं मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे...प्रदेशे....जिलान्तर्गते....नाम्निनगरे...चैत्यालये (मन्दिरे) मण्डपे वीर निर्वाण संवत्सरे...मासानामुत्तमे मासे...मासे....पक्षे.... शुभ तिथौ...वासरे शुभघटी लग्ने शुभ...मुहूर्ते मुन्यार्यिकाश्रावक श्राविकाणां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे

यन्त्राभिषेक

अर्हं मंत्रं नमस्कृत्य, रत्नत्रय तपोनिधिम्।
सिद्धयंत्रं स्नपयामि, सर्वोपद्रव शान्तये॥

ॐ ह्रीं श्री विनायक सिद्ध यंत्रं च जलेन स्नपयामः।

स्नात्वा शुभांवर धराः कृत यत्न योगात्।
यंत्रं निवेश्य शुचि पीठ वरेऽभिषिञ्चेत्॥
ॐ भूर्भुवः स्वरिह मंगल यंत्र मेतत्।
विघ्नौघवारकमहं परिषेचयामि॥

ॐ ह्रीं भूर्भुवः स्वरिह विघ्नौघ वारकं यत्रं वयं परिषेचयामः।

(उपर्युक्त मंत्र पढ़कर यंत्र का अभिषेक करें।)

पानीय चन्दन सदक्षत पुष्प पुञ्ज,
नैवेद्य दीपक सुधूप फलव्रजेन।
कर्माष्टक क्रथन वीर-मनन्त शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा निज यशोधवली कृताशाः,
सिद्धौषधाश्च भव दुःख महागदानाम्।
सद्भव्य हृज्जनित पंक-कबंध कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत शान्ति करा भवन्तु॥

इत्युक्त्वा शान्त्यर्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(शान्तिधारा करें पश्चात् प्रक्षालन विधि करें)

नत्वामुहुर्निज करैरमृतोपमेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्रतव चन्द्र करावदातैः
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त रम्ये,
देहेस्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोम्यहम्।

स्नानं विधायभवतोऽष्ट सहस्र नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसोवचसो विशुद्धिम्।

जिघृक्षुरिष्टमिन तेऽष्ट मयीं विधातुं
सिंहासने विधि वदत्र निवेशयामि।।

ॐ ह्रीं जिन बिम्ब सिंहासने स्थापितं करोम्यहम्।

जलगंधाक्षतैः पुष्पैः, चरु दीप सुधूपकैः।
फलै-रर्घैर्जिनमर्चे, जन्मदुःखाप-हानये।।

ॐ ह्रीं पीठ स्थितजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा परीत्य निज नेत्र ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप हरं धृतमादरेण।।
मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिदं, पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्र चक्र पदवी राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान चरित्र दर्शन लता, संवृद्धि संपादकं,
कीर्ति श्री जयसाधकं तव जिन स्नानस्यगन्धोदकम्।

ॐ ह्रीं जिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(गंधोदक को मस्तक पर लगावे)

इमे नेत्रे जाते सुकृत जल सिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतिजन गणादे-यमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटादशुभतर कर्माटनमभूत्।।
सदेदृक्पुण्यौघौ मम भवतु ते पूजनविधौ।।

इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपाम्यहम्
(पुष्पक्षेपण करें)

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः।
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धामंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मन्त्रेभ्यो नमः सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणा-शेष दोष-कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगाप-मृत्यु-विनाशनाय, सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूँ क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूँ फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोक

तरु सत्प्रातिहार्य-शोभन-पद-प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्व सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्यशोभन-पदप्रदाय-भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय-दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य शोभन-पदप्रदाय-म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्व शांतिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य शोभन-पदप्रदाय-र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभन-पदप्रदाय-घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डल सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल सत्प्रातिहार्य शोभन-पदप्रदाय-झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य शोभन-पद प्रदाय-स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय-छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभन-पद-प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट सहिताय बीजाष्टमण्डनमण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्वशान्तिर्भवतु
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त-कुसलाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अघोरगुण बंभयारीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाण बुद्धीरिसीणं सर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो लोए सव्व सिद्धाय दणाणंसर्वशान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवदो महदिमहावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीणं सर्वशान्तिर्भवतु।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्सं तियं वेणइयं पउंजे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कार एतं सिर-पंचमेण॥

तव भक्ति प्रसादाल्लक्ष्मी-पुर-राज्य-गेह-पद-भ्रष्टोपद्रव-दारिद्रोद्-भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूतपिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्ष-व्यापारवृद्धि रहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्रीशान्तिरस्तु! शिवमस्तु! जयोऽस्तु! नित्यमारोग्यमस्तु! अस्माकं (शान्तिधाराकर्ता का नाम) तुष्टिरस्तु! पुष्टिरस्तु! समृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु सुखमस्तु! अभिवृद्धिरस्तु! दीर्घायुरस्तु! कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु! सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु!

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणमङ्गलरूपमोक्षपुरुषार्थ श्चभवतु।

श्री पद्मप्रभ-चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लिवर्धमान-पुष्पदन्त-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येतेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपतेशान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक-धारा-वर्षणम्

संपूजकानां प्रतिकालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोति शान्तिं भगवान् जिनेंद्रः॥

विनयपाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥

अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥

तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥

हरता अघ अंधियार के, करता धर्मप्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥

धर्मामृत उर जलधि सों ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिंहु जग भूप॥5॥

मैं बंदौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म बंध के छेदने, और न कछू उपाव॥6॥

भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजनको शिवगैल॥8॥

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निर्विषता थाय॥9॥

चक्री खगधर इद्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥10॥

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुदी, जय जय जय जिनदेव॥12॥

थकी नाव भवदधि विषै, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥

रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥

तुमको पूजैं, सुरपती, अहिपति, नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधु में, खेओ लगाओ पार॥17॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजै आप समान॥18॥

तुमरी नेक सुदृष्टितें, जग उतरत हैं पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार॥119॥

जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥

बंदौं पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥

चौबीसों जिनपद नमौं नमौं शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥22॥

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरौं नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥23॥

मंगल जिनवर पदनमौं, मंगल अर्हन्त देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय॥25॥

मंगल सरस्वती मातका, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल नाथूराम यह, भव सागर दृढ़ पोत॥27॥

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोस्तु! नमोस्तु!! नमोस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा।
साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो॥
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पांजलिं क्षिपामि।

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥2॥

अपराजित मंत्रोऽयं, सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥3॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं होइ मंगलं॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥5॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चंदन, तंदुल, पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान, रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्व।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूप फलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(यदि अवकाश हो तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दस अर्घ्य देना चाहिए। नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनाष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तन्दुलपुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिन-गृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्री मज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशम्,
स्याद्वाद - नायक - मनंत - चतुष्टयार्हम्।
श्री मूल संघ-सुदृशां-सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥1॥

स्वस्ति त्रिलोक गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव महिमोदय सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न ललिताद्भुत वैभवाय॥2॥

स्वस्त्युच्छलद्विमल बोध सुधा प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिलोक सकलायत विस्तृताय॥3॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपम्,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः,
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ यज्ञ पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥

अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगलपाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनंतः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्याप्रकंपाद्भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन घ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥

जंघावलि श्रेणि फलांबु-तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥

आमर्ष सर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतः, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥10॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजा

(अडिल्ल छन्द)

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धांत जू।
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर पन्थ जू।।
तीन रतन जग माँहि सो ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्ति प्रसाद परमपद पाइये।।
पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरु पद सार।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गीता छन्द

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर वंदनीक सुपद प्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल देख छवि मोहित सभा।।
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा

मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मल छीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी तपत अति दुर्द्धर खरे।
तिन अहित हरन सुवचन जिनके परम शीतलता भरे।।

तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घिसि सचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा

चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भवसमुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परम पावन जथारथ भक्ति वर नौका सही॥
उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल पुंज धरि त्रय गुण जचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जे विनयवंत सुभव्य उर अंबुज प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजगमाँहिं प्रधान हैं॥
लहि कुंद कमलादिक पहुप भव भव कुवेदनसों बचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा

विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिसबल मदकंदर्प जाको क्षुधा उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशन को सु गरुड़ समान है।।
उत्तम छहों रसयुक्त नित नैवेद्य करि घृत में पचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा

नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने मोह तिमिर महाबली।
तिंहि कर्मघाती ज्ञानदीप प्रकाशज्योति प्रभावली।।
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन के सुभाजन में खचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा

स्व पर प्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्म ईंधन दहन अग्नि समूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगन्धताकरि सकल परिमलता हँसै।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव ज्वलन माँहि नहीं पचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

दोहा

अग्निमाँहि परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लोचन सुरसना घ्राण उर उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी सकल फल गुणसार हैं॥
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन परम अमृतरस सचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा

जे प्रधान फल फलविषैं, पंचकरण रस लीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनम के पातक हरूँ॥
इह भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूँ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा

वसुविधि अर्घ संजोय के अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरु तीन॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार॥1॥

पद्धरी छन्द

कर्मन की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुणगंभीर॥2॥

शुभ समवसरण शोभा अपार, शत इंद्र नमत कर शीश धार।
देवाधिदेव अरहंत देव, वंदौं मन वच तन करि सुसेव॥3॥

जिनकी ध्वनि ह्वै ओंकाररूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप।
दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत।।4।।

सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूँथे बारह सु अंग।
रवि शशि न हरे सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय।।5।।

गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रतनत्रय निधि अगाध।
संसार देह वैराग्य धार, निरवाँछि तपैं शिवपद निहार।।6।।

गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस, भव तारन तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपों मन वचन काय।।7।।

सोरठा

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवै।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्रीजिन के परसादतैं, सुखी रहें सब जीव।
यातैं तन मन वचनतैं, सेवो भव्य सदीव।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री देव-शास्त्र-गुरु, विदेहक्षेत्र स्थित श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर एवं अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समुच्चय पूजा

(दोहा)

देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित्त हुलसाय।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह!

श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुसमूह! श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह! श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अनादिकाल से जग में स्वामिन्, जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय निधि को नहिं पहिचाना।।
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभू के गुण गाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।

भव आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है।।
चंदन सम शीतलता पाने, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान... । चन्दनं। 2
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद बिन फिरा जगत की, लख चौरासी योनी में।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं।।
अक्षय निधि निज की पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान... । अक्षतं। 3
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है।
मन्मथ बाणों से बिंध करके, चहुँ गति दुःख उपजाया है।।
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभू के गुण गाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शांत हुई।
आतमरस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई।।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान... । नैवेद्यं। 5

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
निज गुण दरशायक ज्ञान दीप से, मिटा मोह का अंधियारा।।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान... । दीपं। 6

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगी।।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान... । धूपं। 7

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता बादाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया।
आतमरस भीने निजगुण फल, मम मन अब उनमें ललचाया।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान... । फलं। 8

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्य: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में जिन गुण प्रगट किये।।
ये अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान... । अर्घ्यं। 9

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

देव शास्त्र गुरु बीस जिन, सिद्ध अनंतानंत।
गाऊँ गुण जयमालिका, भव दु:ख नसे अनंत।।

(छन्द भुजंगप्रयात)

नसे घातिया कर्म अर्हंत देवा, करें सुर असुर नर मुनि नित्य सेवा।
दरश ज्ञान सुख बल अनंत के स्वामी, छियालीस गुणयुत महाईश नामी।

तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महामोह विध्वंसिनी मोक्षदानी।
अनेकांतमय द्वादशांगी बखानी, नमो लोकमाता श्रीजैनवाणी।

विरागी अचारज उवज्झाय साधू, दरश ज्ञान भंडार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एकाविहारी, निजानंद मंडित मुकतिपथ प्रचारी।

विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें, विहरमान वंदूँ सभी पाप भाजें।
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी।

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धर ले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तर ले रे।।
ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्य: श्रीअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत भविष्यत् वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ।।
ॐ ह्रीं त्रिकालसम्बन्धी तीसचौबीसी-त्रिलोकसम्बन्धी-कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्यभक्ति आलोचन चाहूँ कायोत्सर्ग अघनाशन हेत।
कृत्रिमा-कृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिनबिम्ब अनेक।।
चतुर निकाय के देव जजैं, ले अष्टद्रव्य निज भक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिव खेत।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धी-समस्तकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालय-सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वंदना करूँ भाव से, सकल कर्म की नाशनहार।।
पंच महागुरु सुमिरन करके, कायोत्सर्ग करूँ सुखकार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा अब मैं भवपार।।
(पुष्पांजलि क्षेपण कर नौ बार णमोकार मंत्र जपें)

समुच्चय चौबीसी पूजा

(चौबोला छन्द)

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चंद पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजित सुरराय।।
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा।।
चौबीसौं श्री जिनचंद, आनंद कंद सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।1।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी।।
चौबीसौं....

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।2।

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे।
मुकताफल की उनमान, पुञ्ज धरौं प्यारे।।
चौबीसौं....

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।3।

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्र धरौं गुणमंड, काम कलंक हरे।।
चौबीसौं....

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।4।

मनमोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने।।
चौबीसौं....

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।5।

तमखंडन दीप जगाय, धारौं तुम आगे।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञान कला जागे।।
चौबीसौं....

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।6।

दशगंध हुताशन माँहि, हे प्रभु खेवत हौं।
मिस धूम करम जरि जाँहि, तुम पद सेवत हौं।।
चौबीसौं....

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।7।

शुचि पक्व सरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।
देखत दृग मन को प्यार, पूजत सुख पायो।।
चौबीसौं....

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।8।

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करौं।
तुमको अरपौं भवतार, भव तरि मोक्ष वरौं।।
चौबीसौं....

ॐ ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।9।

जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हित हेत।
गाऊँ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत॥

(छन्द)

जय भवतम भंजन जन मन कंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा।
शिवमग परकाशक, अरिगण नाशक, चौबीसों जिनराजवरा॥1॥

(छन्द पद्धरि)

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीत वसु अरि तुरंत।
जय संभव भव भय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर॥2॥

जय सुमति सुमति दायक दयाल, जय पद्म पद्मद्युति तनरसाल।
जय-जय सुपार्श्व भव पास नाश, जय चंद्र-चंद्र तन द्युति प्रकाश॥3॥

जय पुष्पदंत द्युति दंत सेत, जय शीतल शीतल गुन निकेत।
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज॥4॥

जय विमल विमल पद देनहार, जय जय अनंत गुन गन अपार।
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत॥5॥

जय कुंथु कुंथुआदिक रखेय, जय अरजिन वसु अरि क्षय करेय।
जय मल्लि मल्ल हत मोह मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत शल्ल दल्ल॥6॥

जय नमि नित वासव नुत सपेम, जय नेमिनाथ वृष चक्र नेम।
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, जय वर्द्धमान शिव नगर साथ॥7॥

(छन्द)

चौबीस जिनंदा आनंद कंदा, पाप निकंदा सुखकारी।
तिन पद जुग चंदा उदय अमंदा, वासव वंदा हितकारी॥8॥

(सोरठा छन्द)

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसौं जिनराजवर।
तिन पद मन वच धार, जो पूजै सो शिव लहै।।9।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ जिन पूजा

(कुसुमलता छन्द)

नाभिराय मरुदेवि के नंदन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वार्थसिद्धितैं आप पधारे, मध्य लोक माँहि जिनराज।।
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिलकर के, अपने कर पूजें प्रभु आज।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संस्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि को उज्ज्वल जल ले, श्री जिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुःख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पाय।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दुःख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।1।

मलयागिरि चंदन दाह निकंदन, कंचन झारी में भर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, भव आताप तुरत मिट जाय।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दुःख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।2।

शुभशालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, अक्षय पद को तुरत उपाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दु:ख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा।3।

कमल केतकी बेल चमेली, श्रीगुलाब के पुष्प मँगाय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, कामबाण तुरत नसि जाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दु:ख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।4।

नेवज लीना षट् रस भीना, श्री जिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ, जिन गुन गावत मन हरषाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दु:ख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।5।

जगमग जगमग होत दसौं दिश, ज्योति रही मंदिर में छाय।
श्रीजी के सन्मुख करत आरती मोह तिमिर नासै दु:खदाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दु:ख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।6।

अगर कपूर सुगंध मनोहर चंदन कूट सुगंध मिलाय।
श्रीजी के सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरे चहुँगति मिटजाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दु:ख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।7।

श्रीफल और बादाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय।
महामोक्ष फल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभु जी के पाँय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दु:ख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।8।

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय,
हो करुणा निधि भव दु:ख मेटो, यातै मैं पूजों प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।9।

पंचकल्याणक अर्घ्यावली

दोहा

सर्वारथ सिद्धि तैं चये, मरुदेवी उर आय।
दोज असित आषाढ़ की, जजूँ तिहारे पाँय॥
ॐ ह्रीं श्री आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

चैत वदी नौमी दिना, जन्म्या श्री भगवान।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजौं धरि ध्यान॥
ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

तृणवत् ऋद्धि सब छांड़ि के तप धार्‌यो वन जाय।
नौमी चैत्र असेत की जजूँ तिंहारे पाँय॥
ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजौं यह थान॥

ॐ ह्रीं श्री फाल्गुनकृष्णैकादश्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान।
भवि जीवों को बोधि के, पहुँचे शिवपुर थान॥

ॐ ह्रीं श्री माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

जयमाला

आदीश्वर महाराज, मैं विनती तुम से करूँ।
चारों गति के माँहि, मैं दुःख पायो सो सुनो॥

अष्ट कर्म मैं एकलो यह दुष्ट महादुःख देत हो।
कबहूँ इतर निगोद में मोकूँ पटकत करत अचेत हो॥
म्हारी दीनतणी सुन वीनती॥1॥

प्रभु! कबहुँक पटक्यो नरक में, जठे जीव महादुःख पाय हो।
निष्ठुर निरदई नारकी, जठै करत परस्पर घात हो॥
म्हारी दीनतणी सुन वीनती॥2॥

प्रभु! नरकतणा दुःख अब कहूँ, जठै करत परस्पर घात हो।
कोइयक बांध्यो खंभसों पापी दे मुद्गर की मार हो।
कोइयक काटे करौंत सों पापी अंगतणी दोय फाड़ हो॥
म्हारी दीनतणी सुन वीनती॥3॥

प्रभु! इहविधि दुःख भुगत्या घणां, फिर गति पाई तिरियंच हो।
हिरणा बकरा बाछला पशु दीन गरीब अनाथ हो।

पकड़ कसाई जाल में पापी काट-काट तन खाय हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।4।।

प्रभु! मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, जापै लाद्यो भार अपार हो।
नहीं चाल्यो जब गिर पर्‌यो, पापी दे सोंटन की मार हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।5।।

प्रभु! कोइयक पुण्य संयोग सूँ, मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो।
देवांगना संग रमि रह्यौ, जठै भोगनि को परिताप हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।6।।

प्रभु! संग अप्सरा रम रह्यो, कर कर अति अनुराग हो।
कबहुँक नंदन वन विषैं, प्रभु कबहुँक वनगृह माँहिं हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।7।।

प्रभु! यहि विधिकाल गमायके, फिर माला गई मुरझाय हो।
देव थिति सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो।
सोच करत तन खिर पड्यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।8।।

प्रभु! गर्भतणा दु:ख अब कहूँ, जठै सकुड़ाई की ठौर हो।
हलन चलन नहिं कर सक्यो, जठै सघन कीच घनघोर हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।9।।

प्रभु! माता खावे चरपरो, फिर लागै तन संताप हो।
प्रभु! जो जननी तातो भखै, फिर उपजै तन संताप हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।10।।

प्रभु! औंधे मुख झूल्यो रह्यो, फेर निकसन कौन उपाय हो।
कठिन कठिन कर नीसर्‌यो, जैसे निसरै जंत्री में तार हो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।11।।

प्रभु! निकसत ही धरत्यां पड्यो, फिर लागी भूख अपार हो।
रोय-रोय बिलख्यो घनो, दु:ख वेदन को नहिं पार हो॥
म्हारी दीनतणी सुन वीनती॥12॥

प्रभु! दु:ख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूँ तिहारे पाय हो।
सेवक अर्ज करै प्रभु मोकूँ, भवोदधि पार उतार हो॥
म्हारी दीनतणी सुन वीनती॥13॥

(दोहा)

श्रीजी की महिमा अगम है, कोई न पावै पार।
मै मति अल्प अज्ञान हूँ, कौन करे विस्तार॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनती ऋषभ जिनेश की, जो पढ़सी मन ल्याय।
सुरगों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय॥

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा

(छप्पय अनौष्ठय चमकालंकार तथा शब्दालंकार शांत रस)

चारुचरन आचरन, चरन चितहरन चिहनचर।
चंद-चंद-तनचरित, चंदथल चहत चतुर नर।
चतुक चंड चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर।
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरधर॥
चर अचर हितू तारन तरन, सुनत चहकि चिरनंद शुचि।
जिनचंद चरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रच्चि रुचि॥1॥

दोहा– धनुष डेढ़ सौ तुंग तन, महासेन नृपनंद।
मातु लछमना उर जये, थापों चंद जिनंद॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

(द्यानतराय कृत नंदीश्वराष्टक की अष्टपदी तथा गरवा आदि अनेक चालों में)

गंगाह्रद निरमल नीर, हाटक भृंग भरा।
तुम चरन जजों वरवीर, मेटो जन्म जरा॥
श्री चंदनाथदुति चंद, चरनन चंद लगै।
मनवचतन जजत अमंद, आतमजोति जगै॥

ॐ ह्रींश्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।।1।।

श्रीखंड कपूर सुचंग, केशर रंग भरी।
घसि प्रासुक जल के संग, भवआताप हरी॥ श्री...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।।2।।

तंदुल सित सोमसमान, सो ले अनियारे।
दिय पुंज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे॥ श्री...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।।3।।

सुरद्रुम के सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै।
तासों पद पूजत चंग, कामविधा जावै। श्री...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् निर्व. स्वाहा।।4।।

नेवज नाना परकार, इंद्रिय बलकारी।
सो लै पद पूजौं सार, आकुलता हारी॥ श्री...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

तमभंजन दीप सँवार, तुम ढिंग धारतु हों।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुण धारतु हों॥ श्री...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।।6।।

दसगंध हुतासन माँहि, हे प्रभु खेवतु हों।
मम करम दुष्ट जरि जाहिं यातैं सेवतु हों॥ श्री...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।।7।।

अति उत्तम फल सुमंगाय, तुम गुण गावतु हों।
पूजों तनमन हरषाय, विघ्न नशावतु हों॥ श्री...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताये फलं निर्व. स्वाहा।।8।।

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमो।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमो॥ श्री...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।9।।

पंचकल्याणक

छंद तोटक (वर्ण 12)

कलि पंचम चैत सुहात अरी, गरभागम मंगल मोद भरी।
हरि हर्षित पूजत मातु पिता, हम ध्यावत पावत शर्मसिता॥1॥

ॐ ह्रीं चैतकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्व. स्वाहा।

कलि पौष एकादशि जन्म लयो, तब लोकविषै सुखथोक भयो।
सुरईश जजै गिरशशी तबै, हम पूजत है नुत शीश अबै॥2॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप दुर्द्धर श्रीधर आप धरा, कलिपोष ग्यारसि पर्व वरा।
निज ध्यान विषै लवलीन भये, धनि सो दिन पूजत विघ्न गये॥3॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां नि:क्रमणमहोत्सव मंडिताय श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर केवल भानु उद्योत कियो, तिहुँलोकतणों भ्रम मेट दियो।
कलि फाल्गुण सप्तमि इंद्र जजैं, हम पूजहिं सर्व कलंक भजैं॥4॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये, गुणवंत अनंत अबाध भये।
हरि आम जजे तित मोद धरे, हम पूजत ही सब पाप हरे॥5॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां-मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार।
गणधर से नहिं पार लहिं, तौं को वरनत सार॥1॥
पै तुम भगति हिये मम, प्रेरै अति उमगाय।
तातैं गाऊँ सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय॥2॥

छन्द पद्धरी (16 मात्रा)

जय चंद्र जिनेंद्र दयानिधान। भवकानन हानन दव प्रमान।
जय गरभ जनम मंगल दिनंद। भवि-जवि विकाशन शर्म कन्द॥3॥

दश लक्ष पूर्व की आयु पाय। मनवांछित सुख भोगे जिनाय।
लखि कारण ह्वै जगतैं उदास। चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुख निवास॥4॥

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग। हरि शिविका सजि धरियो अभोग।
तापै तुम चढ़ि जिनचंदराय। ताछिन की शोभा को कहाय॥5॥

जिन अंग सेत सितचमर ढार। सित छत्र शीस गल गुलक हार।
सित रतन जड़ित भूषण विचित्र। सित चन्द्र चरण चरचैं पवित्र॥6॥

सित तनद्युति नाकाधीश आप। सित शिविका कांधे धरि सुचाप।
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व। सित चित में चिंतत जात सर्व॥7॥

सित चंद नगरतैं निकसि नाथ। सित वन में पहुँचे सकल साथ॥
सितशिला शिरोमणि स्वच्छ छाहँ। तिस तप तित धारयो तुम जिनाह॥8॥

सित पयको पारण परम सार। सित चंद्रदत्त दीनों उदार।
सित कर में सो पय धार देत। मानो बांधत भवसिंधु सेत॥9॥

मानो सुपुण्य धारा प्रतच्छ। तित अचरजपन सुर किय ततच्छ॥
फिर जाय गहन सित तप करंत। सित केवल ज्योति जग्यो अनन्त॥10॥

लहि समवसरन रचना महान। जाके देखत सब पाप हान॥
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग। सब शोक तनो चूरै प्रसंग॥11॥

सुर सुमन वृष्टि नभतें सुहात। मनु मन्मथ तजि हथियार जात॥
बानी जिनमुख सों खिरत सार। मनु तत्व प्रकाशन मुकुर धार॥12॥

जहँ चौंसठ चमर अमर दुरंत। मनु सुजस मेघ झरि लगिय तंत॥
सिंहासन है जहँ कमल जुक्त। मनु शिव सरवरको कमल-युक्त॥13॥

दुंदुभि जित बाजत मधुर सार। मनु करमजीतको है नगार॥
शिर छत्र फिरै त्रय श्वेत वर्ण। मनु रतन तीन त्रय ताप हर्ण॥14॥

तन प्रभातनों मंडल सुहात। भवि देखत निज भव सात सात॥
मनु दर्पण द्युति यह जगमगाय। भविजन भव मुख देखत सु आय॥15॥

इत्यादि विभूति अनेक जान। बाहिज दीसत महिमा महान॥
ताको वरणत नहिं लहत पार। तौ अंतरंग को कहै सार॥16॥

अनअंत गुणनिजुत करि विहार। धरमोपदेश दे भव्य तार।।
फिर जोग निरोधि अघाति हान। सम्मेदथकी लिय मुकतिथान।।17।।

'वृन्दावन' वंदत शीश नाय। तुम जानत हो मम उर जु भाय।।
तातै का कहों सु बार बार। मनवांछित कारज सार सार।।18।।

(घत्तानन्द छन्द)

जय चंदजिनंदा, आनंदकंदा, भवभयभंजन राजैं हैं।।
रागादिक द्वंदा हरि सब फंदा, मुकति मांहि थिति साजे हैं।।19।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चौबोला)

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं।
ताके भव भवके अघ भाजैं, मुक्तिसार सुख ताहि सजैं।।20।।
जगके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं।
वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं।।21।।

इत्याशीर्वादः

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

श्री शांतिनाथ जिन पूजा

सर्वारथ सुविमान त्याग गजपुर में आये।
विश्वसेन भूपाल तासु के नन्द कहाये।।
पंचम चक्री भये मदन द्वादशवें राजैं।
मैं सेऊँ तुम चरण तिष्ठिये ज्यों दुख भाजैं।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पंचम उदधि तनो जल निरमल कंचन कलश भरे हरषाय।
धार देत ही श्रीजिन सन्मुख जन्म जरा-मृत दूर भगाय॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।।1।।

मलयागिर चंदन कदली नंदन कुंकुम जल के संग घिसाय।
भव आताप विनाशन कारण चरचूं चरण सबैं सुखदाय॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व.स्वाहा।।2।।

पुण्य राशि सम उज्ज्वल अक्षत शशि मरीचि तसु देख लजाय।
पुंज किये तुम चरणन आगे अक्षय पद के हेतु बनाय॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।।3।।

सुर पुनीत अथवा अवनी के कुसुम मनोहर लिये मंगाय।
भेंट धरत तुम चरणन के ढिंग ततक्षिन कामबाण नस जाय॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।।4।।

भाँति भाँति के सद्य मनोहर कीने मैं पकवान संवार।
भर थारी तुम सन्मुख लायो क्षुधा वेदनी वेग निवार॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय, क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्व. स्वाहा।।5।।

घृत स्नेह करपूर लाय कर दीपक ताके धरे प्रजार।
जग मग जोत होत मन्दिर में मोह अन्ध को देत सुटार॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपम् निर्व. स्वाहा॥6॥

देवदारु कृष्णागरु चन्दन तगर कपूर सुगन्ध अपार।
खेऊँ अष्ट करम जारन को धूप धनंजय माहि सुडार॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्व. स्वाह॥7॥

नारंगी बादाम सुकेला एला दाड़िम फल सहकार।
कंचन थाल माँहिं धर लायो अरचत ही पाऊँ शिव नार॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्व. स्वाहा॥8॥

जल-फलादि वसु द्रव्य सवारे अर्घ चढ़ाये मंगल गाय।
बखत रतन के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राज कराय॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजें रोग शोक दु:ख दारिद जाय।
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥9॥

पंचकल्याणक

(छन्द उपगति)

भादव सप्तमी श्यामा सर्वारथत्याग गजपुर आये।
माता ऐरा नामा, मैं पूजूँ अर्घ शुभलाये॥
ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे तीरथ-नाथं, वर जेठ असित-चतुर्दशी सोहै।
हरिगण नावैं माथं, मैं पूजूं शांति चरण-युग जोहै॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस-जेठ-अंधयारी, कानन में जाय योग प्रभु लीन्हा।
नवनिधि-रत्न सुछांरी मैं बंदूँ आत्मसार जिन चीन्हा॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष दसें उजियारा, अरिघाति ज्ञान भानु जिन पाया।
प्रातिहार्य-वसुधारा, मैं सेऊं सुर-नर जासु यश गाया।

ॐ ह्रीं पोषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मेद-शैल भारी हनकर अघाति मोक्ष जिन पाई।
जेठ-चतुर्दशि-कारी, मैं पूजूं सिद्ध थान सुखदाई॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छप्पय छन्द)

भये आप जिन देव जगत् में सुख विस्तारे।
तारे भव्य अनेक तिनों के संकट टारे॥
टारे आठों कर्म मोक्ष-सुख तिनको भारी।
भारी विरद निहार लही मैं शरण तिहारी॥

तिहारे चरणन को नमूं दुःख दारिद्र-संताप हर॥
हर सकल कर्म छिन-एक में, शांति-जिनेश्वर शांति कर॥1॥

दोहा- सारंग लक्षण चरण में उन्नत धनु चालीस।
हाटक वर्ण शरीर द्युति, नमूँ शांति जग-ईश॥2॥

(छन्द भुजंगप्रयात)

प्रभु आपने सर्व के फन्द तोड़े, गिनाऊँ कछू में तिन्हें नाम थोड़े।
पड़ो अंबु के बीच श्रीपाल राई, जपो नाम तेरे भए थे सहाई॥3॥

धरौ राय ने सेठ को सूलिका पै, जपी आपके नाम की सार जापै।
भये थे सहाई तबै देव आये, करी फूल वर्षा सिंहासन बनाये॥4॥

जबै लाख के धाम वह्नि प्रजारी, भयो पांड़वो पै महा कष्टभारी।
जबै नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी विदुर ने वही राह दीनी॥5॥

हरी द्रोपदी धातकी खण्ड माँही, तुम्ही वहाँ सहाई भला और नाहीं।
लियो नाम तेरो भलो शील पालो, बचाई तहां तै सबै दुःख टालो॥6॥

जबै जानकी राम ने जो निकारी, धरे गर्भ को भार उद्यान डारी।
रटो नाम तेरो सबै सौख्यदाई, करी दूर पीड़ा सुक्षण ना लगाई॥7॥

व्यसन सात सेवे करें तस्कराई, सुअंजन से तारे घड़ी न लगाई।
सहे अजंना चंदना दुःख जेते, गये भाग सारे जरा नाम लेते॥8॥

घड़े बीच में सासु ने नाग डारो, भलो नाम तेरो जु सोमा संभारो।
गई काढ़ने को भई फूलमाला, भई है विख्यातं सबै दुःख टाला॥9॥

इन्हें आदि देके कहाँ लों बखाने, सुनो विरद भारी तिहुँ-लोक जानें।
अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरो, बड़ी नाव तेरी रती बोझ मेरो॥10॥

गहो हाथ स्वामी करो वेग पारा, कहूँ क्या अबै आपनी मैं पुकारा।
सबै ज्ञान के बीच भासी तुम्हारे करो देर नाहीं मेरे शांति प्यारे॥11॥

(छंद)

श्री शांति तुम्हारी कीरत भारी सुर नरनारी गुणमाला।
'बख्तावर' ध्यावे 'रतन' सु गावे मम दुख दारिद सब टाला ॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्व. स्वाहा।इति।

अजी एरानन्दन छवि लखत ही आप शरणं।
धरै लज्जा भारी करत थुति सो लाग चरणं।।
करै सेवा सोई लहत सुख सो-सार क्षण में।
घने दीना तारे हम चहत है बास तिन में।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

(गीता छन्द)

वर स्वर्ग प्राणत को विहाय सुमात वामा सुत भये।
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर चरन जिनके सुर नये।।
नव हाथ उन्नत तन विराजै उरग लच्छन पद लसैं।
थापूँ तुम्हें जिन आय तिष्ठो करम मेरे सब नसैं।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संस्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चामर छन्द)

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइके।
हेमपात्र धारि के सु आपको चढ़ाइके।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।1।

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये।
आप चरण चर्च मोह ताप को हनीजिये।। पार्श्वनाथ...

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।2।

फेन चंद के समान अक्षतान् लायकैं।
चरण के समीप सार पुंज को रचायकैं।। पार्श्वनाथ...
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपद्प्राप्तये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।3।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनायकैं।
धार चरण के समीप काम को नशायकैं।। पार्श्वनाथ...
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।4।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने।
आप चरण अर्चतें क्षुधादि रोग को हने।। पार्श्वनाथ...
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।5।

लाय रत्नदीप को सनेह पूर के भरूँ।
वातिका कपूर बारि मोह ध्वांत को हरूँ।। पार्श्वनाथ...
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।6।

धूप गंध लेयके सुअग्नि संग जारिये।
तास धूप के सुसंग अष्टकर्म बारिये।। पार्श्वनाथ...
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।7।

खारिकादि चिरभटादि रत्न थाल में भरूँ।
हर्ष धारिके जजूँ सुमोक्ष सौख्य को वरूँ।। पार्श्वनाथ...
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।8।

नीर गंध अक्षतान पुष्प चारु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीजिये।। पार्श्वनाथ...
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।9।

पंचकल्याणक अर्घ्यावली

शुभ प्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये।
वैशाख तनी दुतिकारी, हम पूजें विघ्न निवारी॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशी पौष विख्याता।
श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

कलि पौष एकादशि आई, तब बारह भावन भाई।
अपने कर लौंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवन को सुख दीना॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

सित सातैं सावन आई, शिव नारि वरी जिनराई।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजें मोक्ष कल्याना॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

जयमाला

(छन्द मत्तगयन्द)

पारसनाथ जिनेंद्र तने वच, पौन भखी जरते सुन पाये।
कर्‌यो सरधान लह्यायो पद आन, भये पद्‌मावती शेष कहाये॥
नाम प्रताप टरैं संताप, सुभव्यन को शिवशर्म दिखाये।
हे अश्वसेन के नंद भले, गुण गावत हैं तुमरे हर्षाये॥

(दोहा)

केकी कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ।
लक्षण उरग निहार पग, वंदों पारसनाथ॥1॥

(मोतियादाम छन्द)

रची नगरी छह मास अगार, बने चहुँ गोपुर शोभ अपार।
सु कोट तनी रचना छवि देत, कंगूरन पै लहकैं बहुकेत॥2॥

बनारस की रचना जु अपार, करी बहु भाँति धनेश तैयार।
तहाँ विश्वसेन नरेन्द्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार॥3॥

तज्यो तुम प्राणत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन।
तबै सुर इंद्र नियोगनि आय, गिरीन्द्र करी विधि न्हौन सु जाय॥4॥

पिता घर सौंपि गये निजधाम, कुबेर करे वसु जाम जु काम।
बढ़े जिन दोज मयंक समान, रमैं बहु बालक निर्जर आन॥5॥

भए जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत्त महा सुखकार।
पिता जब आन करी अरदास, करो तुम ब्याह वरो मम आस॥6॥

करी तबनाहिं रहे जगचंद, किये तुम काम कषाय जु मंद।
चढ़े गजराज कुमारन संग, सु देखत गंग तनी सुतरंग॥7॥

लख्यो इक रंक करे तप घोर, चहूँ दिसि अग्नि बलै अति जोर।

कहे जिननाथ अरे सुन भ्रात, करे बहु जीवन की मत घात॥8॥

भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव।
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्म रिषीसुर आय॥9॥

तबहिं सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निजकंध मनोग।
कियो वनमाँहिं निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनन्दकंद॥10॥

गहे तहँ अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पयदान महा सुखकार, भई पनवृष्टि तहाँ तिहिं बार॥11॥

गये तब कानन माँहिं दयाल, धर्‌यो तुम योग सबहिं अघटाल।
तबै वह धूम सुकेतु अयान, भयो कमठाचर को सुर आन॥12॥

करै नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरब बैर विचार गहीर।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर॥13॥

रह्यो दशहूँ दिश में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सु रुंडन के बिन मुण्ड दिखाय, पड़ै जल मूसलधार अथाय॥14॥

तबै पद्मावति कंत धनिंद, नये जुग आय जहाँ जिनचंद।
भग्यो तब रंक सु देखत हाल, लह्यो तब केवलज्ञान विशाल॥15॥

दियो उपदेश महाहितकार, सुभव्यन बोधि सम्मेद पधार।
'सुवर्णभद्र' जहँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिवनारि लही वसु रिद्ध॥16॥

जजूँ तुम चरन दोउ कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर।
कहै 'बखतावर रत्न' बनाय, जिनेश हमें भव पार लगाय॥17॥

(घत्ता)

जय पारस देवं, सुरकृत सेवं, वंदत चरण सुनागपती।
करुणा के धारी, पर उपकारी, शिवसुखकारी कर्महती॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल)

जो पूजै मन लाय भव्य पारस प्रभु नित ही।
ताके दु:ख सब जाय भीति व्यापै नहिं कित ही॥
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे।
अनुक्रमसों शिव लहै, 'रत्न' इमि कहें पुकारे॥

॥इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री महावीर जिन पूजा

(मत्तगयंद छन्द)

श्रीमत वीर हरें भव पीर, भरें सुख सीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरि पंकति मौलि सु आई॥
मैं तुमको इत थापत हों प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणा धन धारक देव, इहाँ अब तिष्ठहुँ शीघ्रहि आई॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचन भृंग भरो।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करो॥
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा॥।

मलयागिर चंदनसार, केसर संग घसौं।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसों॥

श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।2।

तंदुल सित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरौं अविरुद्ध, पावों शिवनगरी।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.स्वाहा।3।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथ भंजन हेत, पूजों पद थारे।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।4।

रस रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।5।

तम खंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।6।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा॥ श्री वीर...

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।7।

रितुफल कल वर्जित लाय, कंचनथार भरों।
शिवफलहित हे जिनराय, तुम ढिंग भेंट धरों॥
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।8।

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों॥
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।9।

पंचकल्याणक अर्घ्यावली

(राग टप्पा)

नाथ! मोहि राखो हो शरणा, श्री वर्द्धमान जिनरायजी,
गरभ साढ़ सित छट्ठ लियो थित, त्रिशला उर अघहरना॥
सुर सुरपति तित सेव करो नित, मैं पूजूँ भवतरना।
नाथ! मोहि राखो हो शरणा।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुंडलपुर कन वरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना।

नाथ! मोहि राखो हो शरणा।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजौं तुम चरना।
नाथ! मोहि राखो हो शरणा।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

शुक्ल दशैं बैसाख दिवस अरि, घाति चतुक क्षय करना।
केवल लहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुखभरना।
नाथ! मोहि राखो हो शरणा।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

कार्तिक श्याम अमावस शिव तिय, पावापुरतैं वरना।
गण फनिवृन्द जजैं तित बहुविध, मैं पूजों भयहरना।
नाथ! मोहि राखो हो शरणा।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

जयमाला

(छन्द हरिगीतिका-28 मात्रा)

गणधर अशनिधर चक्रधर, हलधर गदाधर वरवदा।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरशूलधर सेवहिं सदा॥
दु:खहरन आनंदभरन तारन, तरन चरन रसाल है।
सुकुमाल गुण मनिमाल उन्नत, भाल की जयमाला है॥

(छन्द घत्ता)

जय त्रिशालानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंदवरं।
भवताप निकंदन, तनकन मंदन, रहित सपंदन नयनधरं॥

(छन्द त्रोटक)

जय केवलभानु कला सदनं, भवि कोक विकासन कंद वनं।
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञान दृगांवर चूर करं॥1॥

गर्भादिक मंगल मंडित हो, दुःख दारिद को नित खंडित हो।
जगमाँहिं तुम्हीं सतपंडित हो, तुम ही भवभाव विहंडितयो॥2॥

हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो।
लहि केवलधर्म प्रकाश कियो, अबलों सोई मारग राजति हो॥3॥

पुनि आप तने गुणमाहिं सही, सुर मग्न रहैं जितने सबही।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं, लय माननि सों मनभावत हैं॥4॥

पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषै पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहां तननं तननं॥5॥

घननं घननं घनघंट बजै, दृमदं दृमदं मिरदंग सजै।
गगनांगन गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता॥6॥

धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभ में, इकरूप अनेक जु धारि भ्रमें॥7॥

किन्नर सुर बीन बजावत हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावत हैं।
करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं॥8॥

इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करें प्रभुजी तुमरी।
तुमही जगजीवन के पितु हो, तुमही बिनकारन तैं हितु हो॥9॥

तुमही सब विघ्न विनाशन हो, तुमही निज आनंदभासन हो।
तुमही चित चिंतित दायक हो, जगमाँहिं तुम्हीं सबलायक हो॥10॥

तुमरे पन मंगल माँहिं सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सबही।
हम तो तुमरी शरणागत हैं, तुमने गुन में मन पागत है॥11॥

प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलों वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलों तुम ध्यान हिये वरतों, तबलों श्रुत चिंतन चित्त रतों॥12॥

तबलों व्रत चारित चाहुत हों, तबलों शुभभाव सुगाहतु हों।
तबलों सतसंगति नित्त रहो, तबलों मम संजम चित्त गहो॥13॥

जबलों नहिं नाश करों अरि को, शिव नारि वरों समता धरि को।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी॥14॥

(घत्ता छन्द)

श्रीवीर जिनेशा नमित सुरेशा, नागनरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावैं विघन नशावैं, वाँछित पावैं शर्म वरा॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

श्री सन्मति के जुगल पद, जो पूजैं धरि प्रीत।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

नवदेवता पूजन

स्थापना

त्रैलाक्य में तिहुँ काल में नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक साधु मुनिवर नंदिता॥
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत जिन धर्म कल्याणक कहा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा॥

दोहा- नवदेवों को भक्ति वश आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर लहूँ उभय साम्राज।।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (छंद-हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन ताप हारक चंदनं।
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के।
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं।
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुधा नाशती।
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ गगन आँगन में चमकते ज्योति ग्रह सम दीप हैं।
विधि मोहनी के नाश हेतु, आये आप समीप हैं।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दु:ख नाशती।
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये।
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना।
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतु, भक्तिरस में मैं सना।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म जिनआगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

छंद-लक्ष्मीधरा

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं। नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।।
प्रतिहार्यं युतं वीतरागं वरं। पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।1।।

सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा। अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं। पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।2।।

दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं। संघ संचालकं सूरि आराधकं।।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं। पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।3।।

हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो। भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं। पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।4।।

राग द्वेषादि को साधु संहारते। देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं। पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।5।।

भेद दो श्रावका और साधू कहा। तारता धर्म संसार से है अहा।।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं। पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।6।।

देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही। गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं। पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।7।।

सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है। पूजते जो भवी होय मुक्ति कांत है।।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं। पूजता भक्ति से देव सौख्य करं।।8।।

तोरणा द्वार घंटा ध्वजा सज्जिता। देव प्रक्षाल पूजा सदा अर्चिता।।
शुभ्र चैत्यालयं पाप संहारकं। पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।

घत्ता- **अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक साधु मुनि।**
श्री चैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता आज गुनि।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिनधर्म जिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रन हू तैं, थुति पूरी न करी है।।
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो, भवतारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा।
मेटो भकंदा सब दुःखदंदा, 'हीराचंदा' तुम वंदा।।
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी, अंतरयामी अभिरामी।
शिवपुर विश्रामी निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।।

ॐ ह्रीं श्रीअनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ्य

कृत्याकृत्रिम चारु चैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्।
वंदे भावन व्यंतर द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान्।।
सद्गंधाक्षत पुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्।
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये।।

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालयसंबंधि-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षेषु-वर्षान्तर-पर्वतेषु नंदीश्वरे याानि च मंदरेषु।
यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानां॥

मालिनी

अवनि - तल - गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
वन - भवन - गतानां दिव्य - वैमानिकानां॥
इह मनुज-कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवर - निलयानां भावतोऽहं स्मरामि॥

शार्दूलविक्रीडित

जंबू-धातकि-पुष्कारार्द्ध-वसुधा-क्षेत्र त्रये ये भवाः,
चन्द्रांभोज-शिखंडि-कण्ठ-कनक-प्रावृंघनाभा जिनाः।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षण-धरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः।
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो-जिनेभ्यो-नमः॥

स्रग्धरा

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजत-गिरिवरे शाल्मलौ जंबूवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकरे रुचिके कुंडले मानुषांके।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधि-मुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवने महितले यानि चैत्यालयानि॥

शार्दूलविक्रीडित

द्वौ कुंदेंदु-तुषार-हार धवलौ द्वाविंद्रनील-प्रभौ,
द्वौ बंधूक-सम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ।
शेषाः षोडश जन्म-मृत्यु-रहिताः संतप्त-हेम-प्रभाः,
ते संज्ञान-दिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि-कृत्रिमाकृत्रिम-जिन-चैत्यालयेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

इच्छामि भंते! चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तीसुवि लोयेसु भवणवासिय वाण-विंतर-जोयसिय-कप्पवासिय त्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ण्हाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति अहमवि इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं।

अथ पौर्वाह्निक-माध्याह्निक-आपराह्निक-देववंदनायां-पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वंदना-स्तव-समेतं श्रीपंचमहागुरु-भक्तिं कायोत्सर्गं करोम्यहम्॥

तीस चौबीसी अर्घ्य

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ्य कर में नवीना है।
पूजता पाप छीना है, 'भानुमल' जोड़ि कीना है।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै।
सात शत बीस जिनराजै, पूजता पाप सब भाजै॥

ॐ ह्रीं पांच भरत, पांच ऐरावत, दस क्षेत्र के विषै (संबंधी) तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी का अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करौं।
तुमको अरपौं भवतार, भव तरि मोक्ष वरौं॥

चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।
पद जजत हरत भकंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांत-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्योअनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ अर्घ्य

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि-बलि जाऊँ मनवच काय।
हो करुणानिधिा भव दुख मेटो, यातें मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ का अर्घ्य

जल फल सब सज्जै बाजत बज्जै, गुन-गन रज्जै मन भज्जै।
तुअ पद जुग मज्जै सज्जन जज्जै, ते भव भज्जै निज कज्जै।।
श्री अजित जिनेशं नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजौं ख्याता जग्गेशं।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवनाथ का अर्घ्य

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप फल अर्घ किया।
तुमको अरपौं भाव भगतिधर, जै जै जै शिव रमनि पिया।।
संभव जिन के चरन चरचतैं, सब आकुलता मिट जावे।
निजि निधि ज्ञान दरश सुख वीरज, निराबाध भविजन पावे।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदननाथ का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही।
नचत रचत जजौं चरन जुग, नाय-नाय सुभाल ही॥
कलुष ताप निकंद श्रीअभिनंद, अनुपम चंद हैं।
पद वंद वृंद जजें प्रभू, भव दंद फंद निकंद हैं॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ का अर्घ्य

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय।
नाचि राचि शिरनाय समरचौं, जय-जय जय-जय जिनराय॥
हरि हर वंदित पाप निकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय।
तुम पद पद्म सद्म शिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभु का अर्घ्य

जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगति भाव उमगाय।
जजौं तुमहिं शिवतिय वर जिनवर, आवागमन मिटाय।
मन वच तन त्रय धार देत ही, जनम जरा मृत जाय।
पूजौं भावसों, श्रीपद्मनाथ पद सार, पूजौं भावसों।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपार्श्वनाथ का अर्घ्य

आठों दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय॥
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो॥
तुम पद पूजौं मन वच काय, देव सुपारस शिवपुर राय।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र

सजि आठों द्रव्य पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजौं अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।।
श्री चंद्रनाथ दुतिचंद, चरनन चंद लगे।
मन वच तन जजत अमंद, आतम जोति जगे।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र

वसु विधि अर्घ्य बनाय मनोहर, श्री जिन मन्दिर जावो।
अष्टकर्म के नाश करन को, श्री जिन चरण चढ़ावो।।
चंचल चित को रोक चतुर्गति, चक्रभ्रमण निरवारो।
चारु चरण आचरण चतुरनर चन्द्रप्रभ चित धारो।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत का अर्घ्य

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मनवचतन हुलसाय।
तुमपद पूजों प्रीतिलायकै, जय जय त्रिभुवनराय।।
मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी अरज सुनीजे।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शीतलनाथ का अर्घ्य

कंश्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे,
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे।
रागादिदोष मलमर्दनहेतु येवा,
चर्चों पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र

जल मलय तंदुल सुमन चरु अरु दीप धूप फलावली।
करि अरघ चरचौं चरन जुग प्रभु मोहि तार उतावली॥
श्रेयांसनाथ जिनंद त्रिभुवन वंद आनंदकंद हैं।
दु:खदंद फंद निकंद पूरनचंद जोति अमंद हैं॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य का अर्घ्य

जलकल दरव मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेतु हे श्रीपति, निकट धरों यह लाई॥
वासुपूज्य वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई॥
बाल ब्रह्मचारी लखि जिनको, शिव तिय सनमुख धाई॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

विमलनाथ का अर्घ्य

पाएँ हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य देने लाए।
होवे सिद्धों में वास, भावना यह भाए॥
हे विमलनाथ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तनाथ का अर्घ्य

शुचि नीर चन्दन शालि शंदन, सुमन चरु दीवा धरों।
अरु धूप जुत मैं अरघ करि, कर जोर जुग विनती करों॥
जग पूज परम पुनीत मीत, अनंत संत सुहावनो।
शिव कंत वंत मंहत ध्यावौं, भ्रंत वंत नशावनो॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

धर्मनाथ का अर्घ्य

प्रभु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्य बनाए।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ॥
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ का अर्घ्य

जल-फलादि वसु द्रव्य सवारें अर्घ चढ़ायें मंगल गाय।
बखत रतन के तुम ही सहिब दीजे शिवपुर राज कराय॥
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद जाय।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी।
फल जुत जजन करौं मन सुख धरि, हरो जगत् फेरी॥
कुंथु सुन अरज दास केरी, नाथ सुन अरज दास केरी।
भव सिन्धु पर्‌यो हो नाथ, निकारो बाँह पकर मेरी॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरनाथ जिनेन्द्र

शुचि स्वच्छ पटीरं, गंध गहीरं, तंदुल शीरं पुष्प चरुँ।
वर दीपं धूपं, आनंद रूपं, ले फल भूपं अर्घ करूँ।
प्रभु दीनदयालं, अरिकुल कालं, विरद विशालं सुकुमालम्।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अर गुनमालं वरभालम्।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ का अर्घ्य

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजौं भगति बढ़ाई।
शिवपद राज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई।
राग दोष मद मोह हरन को, तुम ही हो वरवीरा।
यातैं शरन गही जगपति जी, वेग हरो भवपीरा।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रतनाथ का अर्घ्य

जल गंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजौं वरौं।
पूजौं चरन रज भगति जुत, जातैं जगत् सागर तरौं॥
शिव साथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनि गुनमाल हैं।
तसु चरन आनंद भरन तारन, तरन विरद विशाल हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ का अर्घ्य

जल फलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारत ही भवभय हरं॥
जजुत हौं नमि के गुण गायके, जुग पदांबुज प्रीति लगायके॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ का अर्घ्य

जल फल आदि साजि शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्टम छिति के राज करन को, जजौं अंग वसु नाय॥
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ का अर्घ्य

नीर गंध अक्षतान पुष्प चारु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीजिये॥

पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ का अर्घ्य

संघर्षों में उपसर्गों में तुमने समता का भाव धरा।
आदर्श तुम्हारा अमृत बन, भक्तों के जीवन में बिखरा।।
मैं अष्टद्रव्य से पूजा का, शुभथाल सजाकर लाया हूँ।
जो पदवी तुमने पाई है, मैं भी उस पर ललचाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर जिनेन्द्र

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरौं।
गुण गाऊँ भव दधितार, पूजत पाप हरौं।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबलि भगवान का अर्घ्य

वसु विधि के वश वसुधा सबही परवश अति दुख पावैं।
तिहि दुख दूर करन को भविजन अर्घ जिनाग्र चढ़ावैं।।
परमपूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी।
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबलि भगवान का अर्घ्य

हूं शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भवलोक हमारा वासा ना।
रिपु राग रु द्वेष लगे पीछे, यातें शिव पथ को पाया ना।।

निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ्य संजो कर लाया हूँ।
हे बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीजिनेन्द्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण भावना का अर्घ्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करौं मनलाय।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद दाय।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु जिनालय अर्घ्य

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाजी को करौं प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय।।
ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनसम्बन्ध्यशीतिजिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप जिनालय अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हौं।
'द्यानत' कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हौं।।
नंदीश्वर श्रीजिनधाम बावन पूज करौं।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरौं।।
नंदीश्वरद्वीप महान्, चारों दिश सोहे।
बावन जिनमंदिर जान, सुर नर मन मोहे।।
ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण धर्म अर्घ्य

आठों दरब संभार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव आताप निवार, दस लच्छन पूजौं सदा॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री रत्नत्रय अर्घ्य

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रयायानर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धचक्र अर्घ्य

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमें, चरु प्रचुर स्वाद सुविधि धनी॥
वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजित कर्म अरि सब दलमले॥
ते क्रमावर्त नशाय युगपत ज्ञान निर्मल रूप हैं।
दुख जन्म टार अपार गुण सूक्षम सरूप अनूप हैं॥
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य अदूज शिवकमलापती।
मुनि ध्येय सेय अमेय चहुँगुण, ज्ञेय द्यो हम शुभमती॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनाहत-पराक्रमाय सकलकर्मविमुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये श्री सम्मत्तणाण-दंसणवीर्य-सुहमत्त-अवग्गहणं-अगुरुलघु-अव्वावाहं अष्टगुणसंयुक्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनायकयन्त्र अर्घ्य

सुवरण के थाल भराये, शुचि आठों द्रव्य मिलाये।
गुरुपंच परम सुखदाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलोत्तम-शरणभूतेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥

नवदेवता अर्घ्य

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधिा लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले॥
नवदेवताओं की सदा, जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि, मंगल पाय शिवकान्ता वरें॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि-नवदेवेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सरस्वती अर्घ्य

जल चंदन अक्षत, फूल चरु अरु, दीप धूप अति ग्ल लावे।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुखपावे॥
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥

सप्तर्षि अर्घ्य

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना॥
मन्वादि चारण ऋद्धि धारी, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हटे सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-सप्तऋषिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु फल, दीप धूपायन धरों,
द्यानत करो निर्भय जगत सों, जोरकर विनती करों।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाश को,
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास को॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलौक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंच मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजि भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के।।6।।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्योनमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्माय नमः, सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जलके विषैं थलके विषैं आकाशके विषैं गुफाके विषैं पहाड़के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्योनमः, विदेहक्षेत्रे

विहरमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप सम्बन्धी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसम्बन्धि अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्योनमः, सम्मेदशिखर कैलाश-चंपापुर-पावापुर-गिरनार-सोनागिर-मथुरा-तारंगा-आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री-मूडबिद्री-देवगढ़-चन्देरी-पपौरा-हस्तिनापुर-अयोध्या-राजगृही-चमत्कारजी-श्रीमहावीरजी-पद्मपुरी-तिजारा-बड़ागांव-आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे...नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे...मासे शुभे...पक्षे शुभ...तिथौ...वासरे.....मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविकाणां-सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तयेसम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ

(गीता छन्द)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एकसौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें॥1॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक॥2॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥3॥
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को॥4॥

(वसन्ततिलका)

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इंद्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप,
मेरे लिये करहु शांति सदा अनूप॥5॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को,
यतीनकों को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,
कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे॥6॥

(स्रग्धरा)

होवै सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी॥7॥

(दोहा)

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज॥8॥

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्व्रतों का सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का॥9॥
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलौ सेऊँ चरण जिन के, मोक्ष जौ लौ न पाऊँ॥10॥

(आर्या)

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्तिपद मैंने॥11॥
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से॥12॥
हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का, क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तै परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण।
आए जो जो देवगण पूजे भक्ति प्रमान।
ते अब जावहु कृपा करें अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

याग मण्डल विधान पूजन

स्थापना (गीतिका छंद)

सर्वज्ञ जिन परमातमा, शत इंद्र आदि वंदिता।
मुक्ति रमा के कंत सूरि, पाठका मुनि नंदिता॥
ये पंच गुरु जग में सदा ही, पाप मल क्षालन करें।
अर्चना पूजा थुति शुभ, नित नियम पालन करें॥

दोहा- पंच गुरू को भाव युत, हृदय कमल पधराय।
याग मंडल पूजकर, अघ समूह नश जाय॥

ॐ ह्रीं जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधाने सर्वयागमण्डलोक्ता जिनमुनय! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

(चाल-सोलहकारण पूजन)

रत्न कलश में भरकर नीर, पूजों पंच गुरु गुणधीर,
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज॥
पंच कल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय,
पूज्य ऋषिराज...॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्विपञ्चाशत चंदन लाय, पंच गुरु के चरण चढ़ाय।
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज॥

पंचकल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय।
पूज्य ऋषिराज...।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण चंद्र सम तंदुल लाय, अक्षय पद के हेतु चढ़ाय।
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज।।
पंचकल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय।
पूज्य ऋषिराज...।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

षटऋतु के सब सुमन मंगाय, जिनवर पूज काम नश जाय।
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज।।
पंचकल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय।
पूज्य ऋषिराज...।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस मिश्रित व्यंजन लाय, क्षुधा नशाने नित्य चढ़ाय।
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज।।
पंचकल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय।
पूज्य ऋषिराज...।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोघृत के शुभ दीप जलायें, मोह नाशने तव पद आये।
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज।।

पंचकल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय।
पूज्य ऋषिराज...।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविध धूप अग्नि में खेय, कर्म नाशकर शिव सुख देय।
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज।।
पंचकल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय।
पूज्य ऋषिराज...।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष मनोहर सुफल मँगाय, शिव पद हेतु चरण चढ़ाय।
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज।।
पंचकल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय।
पूज्य ऋषिराज...।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक शुभ द्रव्य मिलाय, पद अनर्घ्य के हेतु चढ़ाय।
पूज्य ऋषिराज, जय-जय पंच गुरु जिनराज।।
पंचकल्याणक पूज रचाय, बिंबादि सुप्रतिष्ठ कराय।
पूज्य ऋषिराज...।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे सर्वयज्ञेश्वर-जिनमुनिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलय

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, सकल केवली परमातम।
शुद्ध बुद्ध निरुपम अविकारी, नित्य निरंजन जिन आतम॥
मन वच तन को शुद्ध बनाकर, वसुविध द्रव्य चढ़ाता हूँ।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, तव चरणों में आता हूँ॥

ॐ ह्रीं अनन्तभवार्णवभयनिवारकानन्तगुणस्तुताय अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

द्रव्य भाव नौ कर्म रहित श्री, शिव रामा भरतार कहे।
लोक शिखर पर राजित हैं जो, मम उर में वे नित्य रहें॥
सकल कर्म के नाश करन को, हम तव पूज रचाते हैं।
भव सागर को पार करें हम, यही भावना भाते हैं॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशक-निजात्मतत्त्व-विभासक-सिद्ध- परिमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

पंचाचार सदा पालें जो, भव्यों का करते उपकार।
माँझी बनकर नैया खेते, फँसे हुए हैं जो मँझधार॥
षट्त्रिंशत गुणधारी भगवन्, द्वार तुम्हारे आया हूँ।
रत्नत्रय की निधि पाने को, चित का पात्र बनाया हूँ॥

ॐ ह्रीं अनवद्यविद्योतन-आचार्यपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब, के पाठी मुनिवर विद्वान्।
धर्म देशना देते निशदिन, साधक गण में आप महान्॥
स्वपर ज्ञान का दीप जलाते, नाशें जो त्रय तम विकराल।
ऐसे पाठक गुरु के पद में, वंदन मेरा रहे त्रिकाल॥

ॐ ह्रीं द्वादशांगपरिपूर्णश्रुतपाठनोद्यत-बुद्धि-विभवोपाध्याय- परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

पंच महाव्रत समिति गुप्ति धर, दश धर्मों को जो धारें।
विषय कषाय आरंभ परिग्रह, सबसे चित को निरवारें॥
ज्ञान-ध्यान-तप लीन निरंतर, समता रस के जो भोगी।
नित प्रति वंदन करूँ मुनि का, जो निर्ग्रंथ महायोगी॥

ॐ ह्रीं घोरतपोऽभिसंस्कृत-ध्यानस्वाध्यायनिरत-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

मंगल

(छंद-दोहा)

अर्हत् जिन मंगल सदा, अरि रज रहस विहीन।
शाश्वत मंगल धाम वे, रहें स्वात्म नित लीन॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिमंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

कर्म रहित सिद्धातमा, मुक्ति रमा के कंत।
मं हारक सुख देय नित, वे प्रभु सिद्ध अनंत॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

साधु मंगल जगत् में, करें लोक उपकार।
अघ मल हारक सुखद शुभ, खड़े मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं साधुमंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

जिनवृष मंगल करत है, तीन लोक तिहुँ काल।
सुख वांछक भवि जीव नित, नमते ताँहि त्रिकाल॥

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्ममंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

उत्तम

(छंद-चौपाई)

जिनवर लोक माँहि हैं उत्तम, ध्यान धरें वे रहें गुणोत्तम।
वीतराग गतद्वेष हितैषी, हे सर्वज्ञ स्वात्म अन्वेषी॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥10॥

सकल सिद्ध तिहुँ कर्म विहीना, शाश्वत शुद्ध आत्मपद लीना।
ध्यान सिद्ध का कर्म विनाशे, उत्तम चिन्मय ज्ञान प्रकाशे।।
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

उत्तम सूरि पाठक साधु, कांक्षा छोड़ नित्य आराधूँ।
रत्नत्रय की निधि जो देते, भव पीड़ा पल में हर लेते।।
ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

हिंसा रहित धर्म हितकारी, प्राणी मात्र को नित्य सुखारी।
दुख सागर से पार लगावें, धर्मोत्तम जिन सिद्ध बनावे।।
ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

शरण

(छंद-चउबोला)

जिनका आश्रय पाने से अघ, सर्व नष्ट हो जाते हैं।
मंगल उत्तम शरण रूप जिन, को हम अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
ॐ ह्रीं अर्हत्शरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

कर्म हीन वे सिद्ध निरंजन, तीन लोक के स्वामी हैं।
प्राणी मात्र को आश्रय दाता, पर से पूर्ण अकामी हैं।।
ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

शरण लहूँ मैं सूरी वर की, पाठक साधु मुनि प्यारे।
पाप ताप संताप मिटे मम, संयम को निज में धारे।।
ॐ ह्रीं साधुशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

तीन लोक में है सुखकारक, प्राणी मात्र उपकारी है।
जो भी शरण गहे भवि इसकी, जिनवृष दुख अपहारी है।।
ॐ ह्रीं धर्मशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

पूर्णार्घ

घत्ता- अरिहंत जिनेश्वर, सिद्ध महेश्वर, साधु मुनीश्वर धर्म गहुँ।
मंगल सर्वोत्तम, शरण जिनोत्तम, शिव पाने मैं नित्य चहुँ।

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्ब-प्रतिष्ठोत्सवे अर्हत्परमेष्ठि-प्रभृति-धर्म-शरणान्तप्रथम वलयस्थित-सप्तदश-जिनाधीशयज्ञदेवताभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

भूतकाल चौबीस तीर्थंकर अर्घावली

तर्ज-ओ बुलाय लो.....

निर्वाण जिनेश्वर स्वामी, निज पद में पूर्ण विरामी।
वसु कर्म पूर्णत: नाशे, निज आतम तत्त्व प्रकाशे।।

ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

श्री सागर जिनवर ध्याऊँ, अरु मोक्ष लक्ष्मी पाऊँ।
जिन भक्ति पार उतारे, मम सारे काम सँवारे।।

ॐ ह्रीं श्रीसागरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

महासाधु आप शिव नेता, तुम ही हो कर्म विजेता।
मैं कर्म विजय कर पाऊँ, तबलो तुमको नित ध्याऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहासाधुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

सर्वज्ञ विमल जिनदेवा, मैं करूँ चरण तव सेवा।
पूजन कर कर्म खपाऊँ, मैं भवदधि को तर जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

आभा है शुद्ध तुम्हारी, महिमा गाते नरनारी।
शुद्धाभ देव तुम प्यारे, भवदधि से हमको तारें।।

ॐ ह्रीं श्रीशुद्धाभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

श्रीधर श्री जी हैं प्यारे, मुक्ति श्री चित में धारे।
निज सर्व श्री को पाऊँ, पद अम्बुज हृदय बसाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री श्रीधरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

श्री दत्त अभय श्री देवें, जो भविजन जिन पद सेवें।
मैं नित प्रति पूज रचाऊँ, और आठों कर्म नशाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री श्रीदत्तजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

सिद्धों सी आभा तेरी, भव भव की मेटे फेरी।
सिद्धाभ जिनेश्वर अर्चूं, निज आतम की निधि चर्चूं।।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धाभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

तुम त्रिविध कर्ममल हीना, श्री अमल प्रभु सुख दीना।
हम सर्व पाप मल धोवें, शुभ बीज मोक्ष के बोवें।।
ॐ ह्रीं श्रीअमलप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

उद्धार देव मुनि वंदित, स्वातम में नित आनंदित।
उद्धार करें सब जग को, दर्शाते हैं शिव मग को।।
ॐ ह्रीं श्रीउद्धारदेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

तप अग्नि कर्म जलाए, श्री अग्नि देव कहलाए।
हम भक्ति अग्नि बनाकर, शिव पाएँ आत्म तपाकर।।
ॐ ह्रीं श्रीअग्निदेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

श्री संयम हैं शिव नेता, अरु इंद्रिय कर्म विजेता।
संयम धरि पाप नशाऊँ, मुक्ति श्री को परिणाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्रीसंयमजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

श्री शिवदेवा तीर्थंकर, हो प्राणी मात्र क्षेमंकर।
शिवदेव नाथ नित ध्याऊँ, चरणों की पूज रचाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्रीशिवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

मैं पुष्प अंजलि लाया, पुष्पांजलि चरण चढ़ाया।
दिन रैन जजें तुम चरणा, निश्चित अब भवदधि तरना॥
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पाञ्जलिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

उत्साह जिनेश्वर स्वामी, उत्साह भरे शिवगामी।
उत्साह पूर्वक ध्याऊँ, मैं उत् का शाह बन जाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्रीउत्साहजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

हे परमेश्वर जिन देवा, करते हम तव पद सेवा।
गुरु सेवा है सुखदायी, नित पूजत पाप नशायी॥
ॐ ह्रीं श्रीपरमेश्वरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

सर्वज्ञ देव जिन स्वामी, हो ज्ञानेश्वर जगनामी।
शुभ केवल बोधि पाने, हम आये अर्घ्य चढ़ाने॥
ॐ ह्रीं श्रीज्ञानेश्वरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

हो विगत कर्म मल देवा, हे विमलनाथ जिनदेवा।
निज आतम शुद्ध बनाने, आए हम तव गुण गाने॥
ॐ ह्रीं श्रीविमलेश्वरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

यश धारक श्री जिननाथा, सुरगण नावे निज माथा।
जो पद रज माथ लगावें, भव सागर से तिर जावें॥
ॐ ह्रीं श्रीयशोधरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

हे कृष्णमति तीर्थेशा, पूजें शक्रादि हमेशा।
हमने तव पूज रचाई, निज आतम की निधि पाई॥
ॐ ह्रीं श्रीकृष्णमतिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

तुम ज्ञानमति सिद्धीश्वर, पूजें तुमको योगीश्वर।
तुम चरणों लगन लगावें, निज आतम ज्योति जलावें॥
ॐ ह्रीं श्रीज्ञानमतिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

सर्वज्ञ देव गुणधीरा, जय शुद्ध मति जिन वीरा।
तुम चरणों धोक लगाऊँ, आतम का वैभव पाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्रीशुद्धमतिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

श्री भद्र भद्र भवि कर्ता, शिव रमणी के शुभ भर्ता।
भव सागर शोषक भानू, मम चित्त सदा तुम आनू॥
ॐ ह्रीं श्री श्रीभद्रजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

तुम नंत चतुष्टयधारी, हे नंतवीर्य हितकारी।
जो चरणन पूज रचावें, वे मुक्तिमहल में जावे॥
ॐ ह्रीं श्रीअनंतवीर्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

घत्ता- हे भूत जिनेशा, परम महेशा, आत्म गुणेशा तीर्थंकर।
श्री भरत ठान के, जिन प्रमाण के, प्राणी मात्र को क्षेमंकर॥
ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्ब-प्रतिष्ठामहोत्सवे यागमण्डलेश्वर द्वितीय-वलयोन्मुनि-निर्वाणाद्यन्तवीर्यान्तेभ्यो भूतजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय
वर्तमान काल चौबीस तीर्थंकर अर्घावली

तर्ज-जय केवल भानु.....

जय ऋषभदेव नाभिनंदा, भवि पूज लहें नित आनंदा।
अष्टापद मोक्ष पधारे जिन, पूजें पद अंबुज हम निश दिन॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

हे तुरिय काल आदि जिनवर, हे अजितनाथ श्री मुक्तिवर।
जय अजित अजितपद देनहार, वंदन करते हम बार-बार॥
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

संभव भव भय करते विदीर्ण, वसु कर्मन को तुम किये जीर्ण।
मुक्ति वनिता तुम परिणायी, निज चेतन शाश्वत निधि पायी॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

तीर्थंकर श्री जिन अभिनंदन, भवि जन करते नित-नित वंदन।
वंदन बंधन का हर्ता है, शिव सुख का निश्चित कर्ता है॥
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

श्री सुमति सु मति के दाता हैं, तीर्थेश आप विख्याता हैं।
हर कुमति सुमति हम पा जाएँ, तव सन्निधि में हम आ जायें॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

श्री पद्म प्रभो के पद पंकज, भविजन धरते निज उर अंबुज।
मिथ्यातम सब मिट जाता है, चिन्मय प्रकाश मिल जाता है॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

जय श्री सुपार्श्व भव पाश नशें, मुक्ति निकेत में नित्य बसें।
तव दर्शन सब अघहारी है, पूजक बनता अविकारी है॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

श्री चन्द्रप्रभो द्युति इंदु सी, महिमा अचिन्त्य तव सिंधु सी।
तव भक्ति मोह तिमिर हरती, भव्यों को मुक्ति सुख करती॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

श्री सुविधि नाथ शिव विधि कर्ता, संपूर्ण कुविधि के तुम हर्ता।
निज आतम वैभव हम पायें, निशदिन तव शुभ मंगल गाएँ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

जय शीतल जिन शशि शीत करं, संसार ताप अघ तिमिर हरं।
भविजन पद अंबुज चित्त धरं, रत्नत्रय पा बने मुक्ति वरं॥
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

श्रेयस्कर श्रेयनाथ भगवन्, हम पूजें तुमको मन वच तन।
तुम विश्व अमंगल हारक हो, लोकत्रय में सुख कारक हो॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥11॥

श्री वासुपूज्य जिन नमूँ तुम्हें, हे बालयतीश्वर जजूँ तुम्हें।
तुम काम विनाशक देव महा, भवि चरण पूज लहें मोक्ष अहा॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥12॥

विमलेश्वर विमलमती धारी, कांपिल्य नगर जिन अवतारी।
भवदधि शोषक तुम जिन रवि हो, अक्षोभ अखंड महाकवि हो॥
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥13॥

निज गुण अनंत धारी मुनिवर, कामादि शत्रु जीते जिनवर।
तुम नंत भवों के नाशक हो, चैतन्य सुगुण सुविकासक हो॥
ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥14॥

हे धर्मनाथ जिन तीर्थंकर, मोहादि शमन को शिव शंकर।
तव अंक पाए भवि हो निशंक, तव भक्ति क्षालती पाप पंक॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥15॥

अघ शांतिकरण जिन शांतिनाथ, पद अंबुज में भवि रखें माथ।
तव अर्घ देय मिलता अनर्घ, भवि पाते तब अपवर्ग स्वर्ग॥
ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥16॥

कुन्थ्वादि जीव रक्षा करेय, भविजन को प्रतिक्षण सुक्ख देय।
तुम घाति अघाति नाश कीन, हम रहें चरण में सदा लीन॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥17॥

कर्मारि अष्ट पर विजय पाये, श्री अर जिनवर की शरण आये।
पूजें तुमको वसु द्रव्य लेय, वसु गुण देते सबको अजेय॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥18॥

अघ मोह मल्ल नाशक सुवीर, श्री मल्लिनाथ जिन गुण सुधीर।
रति कामदेव नाशक सुदेव, अक्षय निधि पाते भवि सदैव।।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

मुनिसुव्रत व्रत दायक पुमान्, मुनिगण पूजें चित धरें ध्यान।
तव अर्चन नित शिव सौख्य देत, भवि पूज लहें मुक्ति निकेत।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

चिन्मय मणि सम नमि जिन सुदेव, भविजन करते तुमरी सुसेव।
भव पंच विनाशक गुण निधान, भवि पूज लहें नित तत्त्व ज्ञान।।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

हरिवंश तिलक नेमि जिनेश, राजुल तज आप बने शिवेश।
चिद्कला प्रकाशक पूर्ण इंदु, हो नंत गुणों के आप सिंधु।।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

चिंतामणि पारसनाथ भूप, पूजक पायें निज गुण अनूप।
सब वांछा पूरण करत आप, चिद् शांति लहे तज भवाताप।।
ॐ ह्रीं श्रीपारसनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

श्री वर्द्धमान सन्मति सुवीर, कर्मारि जीत बने महावीर।
अतिवीर नाम बल नंत देत, स्वर्गापवर्ग का मुख्य हेत।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्य

दोहा- वृषभादि महावीर को, पूजूँ मन वच काय।
ऋद्धि सिद्धि संपति मिले, नाक मोक्ष पद पाय।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्ब-प्रतिष्ठोत्सवे यागमण्डले मखमुख्यार्चित-तृतीय वलयोन्मुद्रित-वर्तमान-चतुर्विंशति-जिनेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय
भविष्य काल के चौबीस तीर्थंकरों की अर्घावली

तर्ज- मेरे यार सुदामा रे....

पूजूँ भावी तीर्थेश, भाई जिनमंदिर में आके।
पूजा महापद्म की कर ले, अपना पाप तिमिर तू हर ले,
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।
बोलूँ जयकारा रे में आके भाई जिनमंदिर में आके।
पूजूँ भावी तीर्थेश, भाई जिनमंदिर में आके।।

ॐ ह्रीं श्रीमहापद्मजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

श्री सुरदेव सु पूजित स्वामी, अक्ष विषय से पूर्ण अकामी।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
वसु द्रव्य चढ़ाऊँ रे, भाई जिनमंदिर में आके।।

ॐ ह्रीं श्रीसुरदेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

जगपूजित सुपार्श्व जिन अनुपम, पूजक पाते वैभव निरुपम।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
अनिमेष निहारूँ रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

जिनवर स्वयं प्रभु कल्याणी, भवदधि तारक जिनवर वाणी।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्तिरमा को तू भी वर ले।।
धर्म की महिमा गाले रे भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीस्वयंप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

श्री सर्वात्मभूत जिनदेवा, शत इन्द्रादिक करते सेवा।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
प्रभु भक्ति कर ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वात्मभूतजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हे जिन देवपुत्र सुख आकर, भव आतप को आप सुधाकर।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्तिरमा को तू भी वर ले।।
आतम निधि पाले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवपुत्रजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

पुण्योदय भव्यों का आया, जिन कुलपुत्र सुयश सुर गाया।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्तिरमा को तू भी वर ले।।
पूजार्चन कर ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीकुलपुत्रजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

पाप विनाशक देव उदंका, अर्चा से धुलती विधि पंका।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
निज दर्शन कर ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीउदंकजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

श्री प्रोष्ठिल जिन को नित ध्याऊँ, पूजा करके शिव सुख पाऊँ।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्तिरमा को तू भी वर ले।।
सम्यक्दृष्टि हो जा रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीप्रोष्ठिलजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

अठ दश दोष रहित जिन स्वामी, श्री जयकीर्ति त्रिभुवन नामी।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
प्रभु छवि बसा ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीजयकीर्तिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

सद्व्रत के मुनिसुव्रत दानी, महिमा गाते गणधर ज्ञानी।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्तिरमा को तू भी वर ले।।
निज शांति पा ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

अर जिन वीतराग जितद्वेषी, भव्य जनों के आप हितैषी।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्तिरमा को तू भी वर ले।।
स्वातम सुख पा ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीअरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

श्री निष्पाप प्रभु को ध्याते, पापों के घन दूर भगाते।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
भक्ति रस बरसे रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीनिष्पापजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

हैं जिन निष्कषाय विधि जेता, स्तुति करते अक्ष विजेता।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
वांछित फल पा ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीनिष्कषायजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

जिन सुख दर्श ज्ञान के दाता, विपुल जिनेश्वर शीश झुकाता।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
भव सागर तिर ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीविपुलजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

निर्मल भाव बनाकर आया, निर्मल जिन को चित्त बसाया।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
बहु पुण्य कमा ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीनिर्मलजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

जय हो चित्रगुप्त जिनदेवा, पूजन से मिले मुक्ति मेवा।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले।।
वृष ध्यान बढ़ा ले रे, भाई.....।।

ॐ ह्रीं श्रीचित्रगुप्तजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

समाधिगुप्त प्रभु अकलंका, भक्ति हरती पाप कलंका।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले॥
संयम निधि पा ले रे, भाई.....॥

ॐ ह्रीं श्रीसमाधिगुप्तजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

स्वयंभू देव तेरा यश गाया, तुमसा ही बनने को आया।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले॥
प्रभु की गाथा गा ले रे, भाई.....॥

ॐ ह्रीं श्रीस्वयंभूजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

श्री जिन अनिवर्तक शुभ कर्ता, तेरा नाम मात्र अघ हर्ता।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले॥
प्रभु माला जप ले रे, भाई.....॥

ॐ ह्रीं श्रीअनिवर्तकजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

जयदेवा प्रभु की जय करता, जीवन में सदैव जय वरता।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले॥
जीवन मंगल कर ले रे, भाई.....॥

ॐ ह्रीं श्रीजयदेवजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

जयवंतो जिनदेव विमल हो, विमलमति मम भाव विमल हो,
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले॥
शुभ सन्मति पा ले रे, भाई.....॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

जय जिन देवपाल जग वंदित, सुरगण पूजें हों आनंदित।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले॥
सब कर्म खपा ले रे, भाई.....॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवपालजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

जिनवर नंतवीर्य बलधारी, बल पाऊँ मैं विधि क्षयकारी।
योगत्रय से पूजन कर ले, मुक्ति रमा को तू भी वर ले॥
नर भव सफल बना ले रे, भाई.....॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतवीर्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

पूर्णार्घ्य

दोहा- भरत क्षेत्र भावी जजूँ, तीर्थंकर भगवान।
बद्धांजलि सिर नायकर, सदा करूँ गुणगान॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे यागमण्डले मखमुख्यार्चित-चतुर्थ वलयोन्मुद्रितानागत-चतुर्विंशति-महापद्माद्यनंतवीर्यांतेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलय

विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थंकर अर्घावली

(छंद-चउबोला)

भक्ति भाव से तव चरणों की, भविजन पूजन करते हैं।
विदेह क्षेत्र के तीर्थंकर जिन, सीमंधर उर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

युगमंधर तमहर जिन स्वामी, धर्मप्रवर्तक कहलाते।
स्वात्म निधि को पाने भविजन, तव चरणों में नित आते॥

ॐ ह्रीं श्रीयुगमन्धरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

रत्नत्रय है प्रबल सहारा, बाहू जिन भवि को देते।
शाश्वत अंधकार को क्षण में, दिव्य ध्वनि से हर लेते॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

महासुबाहु जिनवर प्यारे, महाव्रतों के संपोषक।
जिन शासन के आप सूर्य हैं, पाप पयोधि अवशोषक॥
ॐ ह्रीं श्रीसुबाहुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति।।4।।

सम्यक बोधि के संजातक, नाम सारथक निज कीना।
आप शरण बिन भवि जीवों का, रहे व्यर्थ में है जीना॥
ॐ ह्रीं श्रीसंजातकजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

अर्घ चढ़ाऊँ स्वयं प्रभु को, पद अनर्घ्य मिल जाएगा।
रुद्ध होए भवकानन का मग, मुक्ति द्वार खुल जाएगा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीस्वयंप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ऋषभानन ऋषि का आनन तो, आभा दिव्य नित्य देता।
जो भी भविजन अर्चा करता, मोह तिमिर को हर लेता॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभाननजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

बल अनंत के धारी जिनवर, शाश्वत शिव के दाता हो।
नंतवीर्य की पूजा करते, मिलती शाश्वत साता हो॥
ॐ ह्रीं श्रीअनंतवीर्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

सूर्य समा आभा तव मन की, मोहतिमिर त्रय दूर करे।
सूरि प्रभो की पूजा करके, को ना मुक्ति वाम वरे॥
ॐ ह्रीं श्रीसूरिप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

भव विशाल यह दुख दायक है, भव-भव नाच नचाता है।
श्री विशाल प्रभ पूजन करता, वही मोक्ष पद पाता है॥
ॐ ह्रीं श्रीविशालप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

नाथ वज्रधर अघ संहारक, प्रभुवर पूर्ण अकामी हो।
तीर्थ प्रवर्तक भवदधि तारक, निज परिणति अनुगामी हो॥
ॐ ह्रीं श्रीवज्रधरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

निर्मल शाश्वत पूर्ण विकासी, चंद्रानन अनुपम स्वामी।
शुद्ध चेतना की परिणति में, अविचल अक्षय अविरामी।।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्राननजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

हे जिन घोर मोह तम हारक, चंद्रबाहु जिन कहलाते।
नाम मात्र स्मरण जो करते, पद अनर्घ वे पा जाते।।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रबाहुजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

अक्ष विषय ही महाभुजंगा, उनके नाशक जिनवर हैं।
देव भुजंगम तीर्थंकर प्रभु, मुक्ति रमा के प्रियवर हैं।।
ॐ ह्रीं श्रीभुजंगमजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ईशों के ईश्वर तीर्थंकर, धर्म तीर्थ के कर्ता हैं।
नादिकाल से पतितजनों के, शिवनायक शिवकर्ता हैं।।
ॐ ह्रीं श्रीईश्वरजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

क्षेमंकर क्षेमंधर स्वामी, अरि रज रहस विनाशक हैं।
"नेमिप्रभ" मम हृदय विराजें, जो मम चित्त विकासक हैं।।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

सेना वीरसेन जिनवर की, कर्म सैन्य को चूर करे।
गुण अनंत चिन्मय जिन पाकर, मुक्तिरमा को शीघ्र वरें।।
ॐ ह्रीं श्रीवीरसेनजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

सर्वभद्र कर्ता परमेश्वर, महाभद्र भवि सुखकारी।
द्रव्यभाव नो कर्म विनाशक, आत्मसिद्धि के अधिकारी।।
ॐ ह्रीं श्रीमहाभद्रजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

यश धारक यशकारक जिनवर, शुभ्रदेव यश नित गाते।
यश सुर सरिता में अवगाहन, कर भवि नित अति हर्षाते।।
ॐ ह्रीं श्रीदेवयशोजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

मोह शत्रु को जीत अजित जिन, शिव रामा वरने चाले।
अजित वीर्य जिन की थुति गाऊँ, भविजन के नित रखवाले॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितवीर्यजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

घत्ता- विंशति तीर्थंकर, सर्व हितंकर, विदेह क्षेत्र के सुर पूजित।
हम अर्घ्य चढ़ायें, तव गुण गाएँ, तव पद में चित आनंदित॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे मखमुखार्चित-पञ्चमवलयोन्मुद्रित विदेहक्षेत्र-सुषष्ठिसहितैकशतजिनेशसंयुक्त-नित्यविहरमाणविंशतिजिनेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

षष्टम् वलय
अरिहंत परमेष्ठी के 46 मूलगुणों की अर्घावली

(तर्ज- वंदे जिनवर...)

जन्म के दस अतिशय

कामदेव से भी अति सुंदर, रूप आपका मनहर है,
भावी सिद्ध पूजते तुमको, तू ही सच्चा जिनवर है।
अतिशय रूप जन्म का अतिशय, सुर नर द्वारा वंदित है,
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयसुन्दररूपजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

औदारिक तन तो स्वभाव से, दुर्गंधी ही देता है,
हे जिनवर तव रूप मनोहर, सदा सुगंधित रहता है।
देह सुगंधित अतिशय तन का, सुर नर द्वारा वंदित है,
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धिततनजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

नरतिर्यंच देह में निश्चित, श्रम से स्वेद निकलता है,
श्री जिनेन्द्र तव तन है अनुपम, लेश स्वेद नहीं दिखता है।
निःस्वेदत्व देह जिन अतिशय, सुर नर द्वारा वंदित है,
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है।।

ॐ ह्रीं अर्हं पसेवरहिततनजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

अतिशय निर्मल देह सुपावन, तीर्थंकर की मनहारी।
युत आहार निहार रहित जिन, गाऊँ तव गुण अघहारी।।
देह निहार रहित जिन अतिशय, सुर नर द्वारा वंदित है।
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है।।

ॐ ह्रीं अर्हं निहाररहितदेहजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

कभी भूलवश भी श्री मुख से, निंद्य वचन नहीं उच्चारें।
हितकारी मित मधुर वचन ही, शोभित तुमसे हैं प्यारे।।
हित मित प्रिय वचन जिन अतिशय, सुर नर द्वारा वंदित है।
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है।।

ॐ ह्रीं अर्हं हितमितप्रियवचनजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

सीमित बल होता प्राणी में, आप असीमित बलधारी।
इंद्रादिक से पूजित जिनवर, महिमा त्रिभुवन में न्यारी।।
अतुल वीर्य अतिशय युत जिनवर, सुर नर द्वारा वंदित हैं।
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुलबलजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

क्षीरोदधि सम धवल रक्त तव, वात्सल्य का द्योतक है।
प्राणीमात्र को नंद प्रदाता, धर्म मार्ग संपोषक है।।
श्वेत रुधिर अतिशय युत जिनवर सुर नर द्वारा वंदित है।
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतरुधिरजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

एक हजार आठ शुभ लक्षण, तव तन में देखे जाते।
नौ सौ व्यंजन शत अठ लक्षण, आगम में लेखे जाते।।
सहस आठ लक्षण अतिशय जिन, सुर नर द्वारा वंदित है।
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्त्रअष्टोत्तर-शुभलक्षणजन्मातिशयसंयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

शुभ थानक में सुखद आकृति, अंग अवयवों की होती।
समचतुस्र संस्थान निरख भवि, श्रद्धा वृद्धिंगत होती।।
सम चतुस्र संस्थान जिनेशा, सुर नर द्वारा वंदित है।
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है।।

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुस्रसंस्थानजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

वज्र वृषभ नाराच आपका संहनन जग में उत्तम है।
अस्थि वेष्टन तथा कीलियाँ, वज्रमयी सर्वोत्तम है।।
वज्रवृषभ नाराच युक्त जिन, सुर नर द्वारा वंदित है।
अर्घ चढ़ा जो पूजा करता, रहे परम आनंदित है।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराचसंहननजन्मातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

(तर्ज-सोलहकारण भाय...)

चउ दिश शत योजन तक शुभ्र सुभिक्ष है।
जिन सूरज का अतिशय लगता ऋक्ष है।।
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतयोजनसुभिक्षकेवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

केवलज्ञानी नित्य गगन में गमन करें।
इंद्रादि आसन्न भव्य नित नमन करें।।
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें।।

ॐ ह्रीं अर्हं गगनगमनकेवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

जिनवर का मुखमंडल चहुँ दिश दिखता है।
दर्शन कर भवि कर्म पुण्य में लिखता है।।
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखप्रतिभासकेवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

हिंस्य भावना कभी नहीं मन में रहती।
तव सन्मुख वात्सल्य दया सरिता बहती।।
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें।।

ॐ ह्रीं अदयाभावरहित-केवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

जिन समीप उपसर्ग नहीं किंचित् होता।
पापी बन कर पुण्यवान् अघमल धोता।।
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें,
भक्ति से जिनभक्त कर्म निश्चित दहें।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्गरहित-केवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

कवलाहार न होता केवलज्ञानी के।
कर्म क्षीण होते निश्चित वृष ध्यानी के।।
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहाररहित-केवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

सर्वज्ञान विद्या के स्वामी माने हैं।
इसीलिये ईश्वर ये जग पहचाने हैं।।
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्याईश्वरत्व-केवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

प्रभु के नख केशों की वृद्धि ना होती।
तव सन्निधि में भवि पाता शिव का मोती।।
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें।।

ॐ ह्रीं अर्हं नखकेशवृद्धिरहित-केवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

पलक झपकती नहीं केवली जिनवर की।
रहती नासा दृष्टि मुक्ति वधु वर की॥
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनिमिषदृगकेवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥19॥

नहीं कभी छाया पड़ती केवलि जिन की।
शब्दों में ना बाँध सके महिमा उनकी॥
अतिशय केवलज्ञानी के गुरुवर कहें।
भक्ति से भवि पाप कर्म निश्चित दहें॥

ॐ ह्रीं अर्हं छायारहित-केवलज्ञानातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥20॥

देवकृत 14 अतिशय

तर्ज- मेरी लगी प्रभु संग प्रीत

है अर्द्धमागधी भाष, भविजन कल्याणी।
सुन निज हित करते आप, जग के सब प्राणी॥
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्द्धमागधीभाषादेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥21॥

हो आपस में शुभ प्रेम, मैत्री भाव धरे।
हों शांत क्रूर परिणाम, भक्ति कुंभ भरें॥
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं परस्परमैत्रीभावदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥22॥

नित स्वच्छ दिशा दश होय, नंदामृत बरसे।
तुम चरण बिना जग जीव, उस सुख को तरसे॥
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं दशदिशनिर्मलदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥23॥

होता निरभ्र आकाश, नहिं घन कृष्ण दिखें।
नहिं धूमकेतु विद्युत, विधि शिवपथ की लिखें॥
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाकाशदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥24॥

फल पुष्प मनोहर नित्य, सब ऋतु के साजें।
होवे आनंद अपार, जिनवर जहाँ राजें॥
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वऋतुफलफूलयुतवृक्षदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥25॥

निर्मल वसुधा हो जात, हीरक सम जानो।
शुभ सुखद परस लें भव्य, अतिशय तुम मानो॥
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं आदर्शवत्भूमिदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥26॥

द्वि शत पच्चीस कमल, जिन पगतल सोहें।
हैं सप्त-सप्त सब ओर, भविजन मन मोहे।।
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं पगतलद्विशतपंचविंशतिस्वर्णकमलदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

मिल देव करें जयकार, भू नभ हो गुंजित।
आनंदित हैं सब जीव, मन हो सुख मंडित।।
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयकारध्वनिदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

शुभ मंद सुगंध बयार, पुनि-पुनि वहाँ चाले।
मानो संदेशा देत, प्रभुवर गुण गाले।।
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंदसुगंधबयारदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

प्यारी गंधोदक वृष्टि, मन को शुद्ध करे।
आसन्न भव्य कर भक्ति, मुक्ति वाम वरे।।
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं गंधोदकवृष्टिदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

कंटक कंकर अरु शूल, भू से हट जाते।
पग पग पर सुमन-सुमन, खिलते मुस्काते।।
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कंटकभूमिदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

सम्पूर्ण सृष्टि के जीव, हर्षित तब होते।
जिनदर्शन करके भव्य, निज अघ मल धोते।।
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्प्रदेशेहर्षभावदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

जिनधर्म चक्र गतिमान, जिनवर के आगे।
सब शीश झुकाते भव्य, अवगुण सब भागे।।
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रप्रवर्तन-देवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

जिन धर्म सभा के मध्य, मंगल द्रव सोहें।
वसु गुण प्रतीक वसु द्रव्य, भविजन मन मोहें।।
शुभ देव रचित जग पूज्य चौदह अतिशय हैं,
इन युत पूजूँ जिनदेव, होते अघ क्षय हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमंगलद्रव्यदेवकृतातिशय-संयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

अष्ट प्रातिहार्य

(छंद-दोहा)

तरु अशोक हरता सदा, भविजन के अघ शोक।
भविजन तरु अविलोक कर, देय भक्तिवश धोक॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरु-सत्प्रातिहार्यमंडित-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

सिंहासन सोहे विमल, भानु उदय गिरि जान।
भविजन नित अर्चा करें, जिन बनने भगवान॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन-सत्प्रातिहार्यमंडित-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

तीन छत्र मानों कहें, त्रिभुवन के तुम नाथ।
नाथों के भी नाथ जिन, तव चरणों में माथ॥

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्यमंडित-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

सप्तभवों को भव्य जन, भामण्डल में देख।
मिथ्यात्रय को त्यागकर, पाते सम्यक् रेख॥

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डल-सत्प्रातिहार्यमंडित-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

दिव्य ध्वनि सर्वांग से, ॐ कार मय होय।
चउ संध्या में नित खिरे, सर्व कर्ममल धोय॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्यमंडित-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

पुष्पवृष्टि सुर नित करें, कर निज निर्मल भाव।
भक्ति भेद अभेद है, शिव का एक उपाव॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्यमंडित-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

यक्ष राज नित ढोरते, चौंसठ चँवर पुनीत।
जो भविजन भक्ति करे, मिले आप सा मीत॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतु:षष्टी-सत्प्रातिहार्यमंडित-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

धर्म सभा में देवगण, करें दुंदुभि नाद।
दूर क्षेत्र के भव्य सुन, करें जिनेश्वर याद॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभि:-नाद-सत्प्रातिहार्यमंडित-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

अनंत चतुष्टय

तर्ज-अनादि काल से.....

कर्म मोहनी पूर्ण नाश कर, सुख अनंत निज में पाया।
ऐसा अनुपम सुख पाने को, मेरा मन भी ललचाया॥
घाति कर्म नाशकर प्रभु तो, हुए केवली जिन स्वामी।
श्री जिन गुण का सुमिरन करके, बनें आप पद अनुगामी॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतसुखगुणसंयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ज्ञानावरणी कर्म नष्ट कर, तुमने पाया केवलज्ञान।
उसी ज्ञान को पाने हेतु, धरुँ चित्त में तेरा ध्यान॥
घाति कर्म नाशकर प्रभु तो, हुए केवली जिन स्वामी।
श्री जिन गुण का सुमिरन करके, बनें आप पद अनुगामी॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतज्ञानगुणसंयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

दर्शनावरणी की नव प्रकृति, नष्ट पूर्णत: कर डाली।
दर्शन नंत-सु पाया जिनने, दर्शन कर हम निधि पाली॥

घाति कर्म नाशकर प्रभु तो, हुए केवली जिन स्वामी।
श्री जिन गुण का सुमिरन करके, बनें आप पद अनुगामी॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शनगुणसंयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

आतम बल को जागृत करके, अंतराय विधि नाश किया।
निज की शक्ति नंत पाने मैं, तव चरणों में वास किया॥
घाति कर्म नाशकर प्रभु तो, हुए केवली जिन स्वामी।
श्री जिन गुण का सुमिरन करके, बनें आप पद अनुगामी॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्यगुणसंयुक्त-श्रीअर्हत्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

पूर्णार्घ्य

घत्ता– दस जन्म के अतिशय, केवल अतिशय, सुरकृत अतिशय चित्त धरुँ।
वसु प्रातिहार्यमय, नंत चतुष्टय, प्रगटे चिन्मय मुक्ति वरुँ॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे मखमुखार्चित-षष्टमवलयोन्मुद्रितअरिहंत परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सप्तम वलय

सिद्ध परमेष्ठी के आठ मूलगुणों की अर्घावली

(छंद-त्रिभंगी)

जग जिसका दासा, मोह विनाशा, तत्त्व प्रकाशा अविकारी।
शुभ सम्यग्दर्शन, तेरा अर्चन, शिव श्री परसन सुखकारी॥
सिद्धों का वंदन, मेटे क्रंदन, भज शिव नंदन शिव पाने।
निज निधि प्रगटाकर, कर्म मिटाकर, आत्म दिवाकर विधि हाने॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

कर्मन की प्रकृति, महाविकृति, आत्म संस्कृति गुण चाहूँ।
आवरण ज्ञान को, भव विधान को, नाश मान को बुध पाऊँ॥
सिद्धों का वंदन, मेटे क्रंदन, भज शिव नंदन शिव पाने।
निज निधि प्रगटाकर, कर्म मिटाकर, आत्म दिवाकर विधि हाने॥
ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुणयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

दर्शन आवरणी, भव दुख करणी, नश जिन तरणी मैं पाऊँ।
अरु सर्वदर्शी बन, ध्या आतम धन, भव कानन ना भरमाऊँ॥
सिद्धों का वंदन, मेटे क्रंदन, भज शिव नंदन शिव पाने।
निज निधि प्रगटाकर, कर्म मिटाकर, आत्म दिवाकर विधि हाने॥
ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

विघ्न प्रचारक, भव दुख कारक, शिव सुख हारक कर्म महा।
अंतराय विनाशे, शक्ति प्रकाशे, आतम वासे सिद्ध अहा॥
सिद्धों का वंदन, मेटे क्रंदन, भज शिव नंदन शिव पाने।
निज निधि प्रगटाकर, कर्म मिटाकर, आत्म दिवाकर विधि हाने॥
ॐ ह्रीं अनंतबलगुणयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

विधि कर्म वेदनी, नित असेवनी, तज कुटेवनी शिव बाधक।
तुम नष्ट किया जिन, ध्यान रात दिन, अव्याबाध तिन आराधक॥
सिद्धों का वंदन, मेटे क्रंदन, भज शिव नंदन शिव पाने।
निज निधि प्रगटाकर, कर्म मिटाकर, आत्म दिवाकर विधि हाने॥
ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

यह तन का बंधन, देता क्रंदन, आयु निबंधन दु:खकारी।
विधि आयु नष्ट कर, अवगाहन वर, मुक्ति इष्ट वर हितकारी॥
सिद्धों का वंदन, मेटे क्रंदन, भज शिव नंदन शिव पाने।
निज निधि प्रगटाकर, कर्म मिटाकर, आत्म दिवाकर विधि हाने॥
ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुणयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

आतम प्रदेश वसि, नाम कर्म नशि, योगत्रय कसि गुण पाया।
सूक्ष्मत्व निराला, दिव्य उजाला, गुणमणिमाला भवि गाया।।
सिद्धों का वंदन, मेटे क्रंदन, भज शिव नंदन शिव पाने।
निज निधि प्रगटाकर, कर्म मिटाकर, आत्म दिवाकर विधि हाने।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुणयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

दुठ गोत्र कर्म तज, चेतन गुण भज, निज स्वभाव सज मुक्ति वरूँ।
लोकाग्र निवासी, बन निजवासी, अगुरु सुभासी शीश धरूँ।।
सिद्धों का वंदन, मेटे क्रंदन, भज शिव नंदन शिव पाने।
निज निधि प्रगटाकर, कर्म मिटाकर, आत्म दिवाकर विधि हाने।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणयुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

पूर्णार्घ्य

घत्ता- वसुगुणयुत जिनवर, मुक्तिवधूवर, तव चरणों में माथ धरुँ।
सिद्धालय वासी, आत्म निवासी, तव पद पाने पूज करुँ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे मखमुख्यार्चित-सप्तमवलयोन्मुद्रित-सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वलय

आचार्य परमेष्ठी के 36 मूलगुणों की अर्घावली

तर्ज- पीछी रे पीछी.....

पंचाचार

अष्ट अंग धरि दोष पचीसों तिन को नित ही तजिये।
दर्शनाचार आचरें जे मुनि तिनको नित ही भजिये।।
पंचाचार धारते सूरि कर्म कालिमा धोते।
इस युग में तीर्थंकर वत् ही वे प्रामाणिक होते।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचार-संयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

अष्टभेद त्रय दोष रहित सत् ज्ञान महासुखकारी।
भक्ति व्रत तप संयम हेतु यही प्रबल हितकारी।।
पंचाचार धारते सूरि कर्म कालिमा धोते।
इस युग में तीर्थंकर वत् ही वे प्रामाणिक होते।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचार-संयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार औ अनाचार से हीना।
तेरह विध चारित्र बिना वे व्यर्थ मानते जीना।।
पंचाचार धारते सूरि कर्म कालिमा धोते।
इस युग में तीर्थंकर वत् ही वे प्रामाणिक होते।।

ॐ ह्रीं चारित्राचार-संयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

द्वादश विधि तप को जो धारें, कर निरोध इच्छा का।
तप साधन में बने सहायक, करें त्याग भिक्षा का।।
पंचाचार धारते सूरि कर्म कालिमा धोते।
इस युग में तीर्थंकर वत् ही वे प्रामाणिक होते।।

ॐ ह्रीं तपाचार-संयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

निज शक्ति को नहीं छिपाते, तप व्रत संयम पालें।
निज पर के कल्याण हेतु वे, मोक्ष मार्ग अपना लें।।
पंचाचार धारते सूरि कर्म कालिमा धोते।
इस युग में तीर्थंकर वत् ही वे प्रामाणिक होते।।

ॐ ह्रीं वीर्याचार-संयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दस धर्म

तर्ज- हे गुरुवर धन्य....

उत्तम क्षमा धरो तुम चेतन, भव-भव में सुखदायी है।
क्षमा धारी सूरी मुनिवर की, महिमा सुरनर गायी है।।

उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमापरमधर्मधारकाचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

उत्तम मार्दव मान नाशकर, विनय भाव प्रकटाता है,
धारण करते सूरी इसको, अतः मोक्ष मिल पाता है।।
उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्म-धुरन्धराचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

मायाचारी जग की जननी, सूरीवर तज देते हैं,
उत्तम आर्जव धर्म पालकर, चेतन की सुध लेते हैं।।
उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी है।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी है।।
ॐ ह्रीं उत्तमार्जवधर्मपरिपुष्टाचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

लोभ पाप का बाप बखाना, शौच लोभ परिहारी है।
उत्तम शौच धर्म इस जग में, आतम को सुखकारी है।।
उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मधारकाचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

सत्य धर्म तो तीन लोक में, सब धर्मों का प्राण कहा,
सूरिवर धारें हैं इसको, पाते हैं फिर मोक्ष महा।।
उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।
ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मप्रतिष्ठिताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

पंच अक्ष मन को बस करना, इंद्रिय संयम कहलाता।
प्राणी मात्र की रक्षा करना, प्राणी संयम सुखदाता।।
उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तमद्विविध-संयमपात्राचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

द्वादश विध तप की शुभ वह्नि, कर्मेंधन दहकाती है।
द्वादश तप की निधि सूरी को, निश्चित नित्य लुभाती है।।
उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपोऽतिशयधर्म-संयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

परवस्तु का त्याग करें वे, हर विभाव के त्यागी हैं।
आतम में रुचि रखें निरंतर, शुद्धातम अनुरागी हैं।।
उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्यागधर्मप्रवीणाचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

किंचित् भी परद्रव्य न मेरे, भाव अकिंचन चित धारें।
कर्म शत्रु का करें पराभव, गुण निधि से नित श्रृंगारें।।
उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिञ्चनधर्मसंयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

पर द्रव्यों का मोह त्यागकर, ब्रह्म लीन तुम नित रहते।
मुक्तिरमा को वरने हेतु, सकल परिषह तुम सहते।।

उत्तम क्षमा आदि दस वृष तो, जीवमात्र हितकारी हैं।
श्रमण धर्म शाश्वत ये जग में, सूरि मूलगुण धारी हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्म-महानुभाव-महनीयाचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

बारह तप

(छंद-अडिल्ल)

अनशन तप धारें नित मुनिवर, तप करके बनते जो जिनवर।
तप है निश्चित कर्म विदारक, प्राणी मात्र को नित सुखकारक।।

ॐ ह्रीं अनशनतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ऊन उदर आहार करें नित, रखें शुद्ध निर्मल निज का चित।
ऊनोदर तप मानो पावक, सूरीगण जिसके आराधक।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

गुड़ घृत तेल दूध दधि तजकर, लवण त्याग करके वृष भजकर।
रस परित्याग स्वात्म रस पाकर, इंद्रिय बनती है फिर चाकर।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

द्रव्य क्षेत्र की सीमा लेकर, वृत्ति परिसंख्या तप धरकर।
अक्ष निरोध करें वे निशदिन, कर्म घातकर बनते हैं जिन।।

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यानतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

वंदन समता स्वाध्याय नित, ध्यान करें मुनि एकाग्री चित।
विविक्त शय्यासन विधि नाशक, सूरीवर हैं आत्म उपासक।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

काय क्लेश तप कर्म विशोधक, शीत ऊष्ण में समता बोधक।
देह कष्ट से रहें विरत नित, भावी सिद्ध बनें वे विधि जित।।
ॐ ह्रीं कायक्लेशतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

व्रत में दोष लगे प्रमादवश, शुद्धि करन को प्रायश्चित तप।
मन की निर्मलता का द्योतक, चित्त गुणों का नित उद्योतक।।
ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

विनय अस्त्र सब कर्म विजितकर, बन जाते हैं सद्गुण आकर।
द्वार मोक्ष का विनय सुपावन, सूरीवर को नित मन भावन।।
ॐ ह्रीं विनयतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

वैय्यावृत्ति स्वर्ग सुख कारण, निश्चित करता कर्म निवारण।
इस तप से बनते तीर्थंकर, प्राणी मात्र को नित्य हितंकर।।
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तितपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

स्वाध्याय नित ज्ञान गुणाकर, भवाताप का सदा सुधाकर।
तप करता है निज पर का हित, धर्म ध्यान है इसके आश्रित।।
ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

नित्य ममत्व भाव को तजकर, आत्मगुणों में नित्य रागकर।
तप व्युत्सर्ग कर्म प्रक्षालक, सूरीगण हैं इसके पालक।।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ध्यान लगाते मन को वशकर, तप को तपते इंद्रिय कसकर।
आतम हित का है सम्यक् पथ, मुक्तिरमा तक जाने का रथ।।
ॐ ह्रीं ध्यानावलम्बनतपोऽभियुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

तीन गुप्ति

चाल- हे गुरुवर धन्य.....

शुभ वा चिंतन अशुभ मिटाकर, मनोगुप्ति सूरी पालें।
पूरब संचित तथा अनागत, कर्म साधना से टालें।।
तीन गुप्ति धारक सूरीवर, जगत्पूज्य नित कहलाते।
इसीलिये तो भविजन तुमरी, श्रद्धायुत पूजा गाते।।
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसम्पन्नाचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।
मिष्ट इष्ट प्रिय मधुर वचन भी, सूरीवर ना उच्चारें।
वचन गुप्ति का पालन करके, कर्म शत्रु को संहारें।।
तीन गुप्ति धारक सूरीवर, जगत्पूज्य नित कहलाते।
इसीलिये तो भविजन तुमरी, श्रद्धायुत पूजा गाते।।
ॐ ह्रीं वचनगुप्तिधारकाचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।
नश्वर तन की चेष्टाएँ सब, सुखदमयी या अशुभमयी।
तजते हैं जो सूरि मुनि वह, काय गुप्ति है त्यागमयी।।
तीन गुप्ति धारक सूरीवर, जगत्पूज्य नित कहलाते।
इसीलिये तो भविजन तुमरी, श्रद्धायुत पूजा गाते।।
ॐ ह्रीं कायगुप्तिसंयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

षट् आवश्यक

छंद-चउबोला

इष्टानिष्ट पदारथ जग के, साम्य भाव तिन में धारें।
सूरी की समता को लखकर, कर्म शत्रु भी नित हारें।।

षट् आवश्यक धारी भगवन्, कर्मों का संहार करें।
शीघ्र भवोदधि तरकर के वे, मुक्तिरमा का वरण करें॥
ॐ ह्रीं सामायिकावश्यककर्मधारि-आचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

एक-एक तीर्थंकर की शुभ, भक्ति वंदना कहलाती।
पूर्वबद्ध कर्मों की लड़ियाँ, निमिष मात्र में खुल जाती॥
षट् आवश्यक धारी भगवन्, कर्मों का संहार करें।
शीघ्र भवोदधि तरकर के वे, मुक्तिरमा का वरण करें॥
ॐ ह्रीं वन्दनावश्यकनिरताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

चतुर्विंशति तीर्थंकर का स्तव, पाप पंक प्रक्षाल करे।
शिव कारक वसु विधि संहारक, तीर्थंकर थुति सूरि करे॥
षट् आवश्यक धारी भगवन्, कर्मों का संहार करें।
शीघ्र भवोदधि तरकर के वे, मुक्तिरमा का वरण करें॥
ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसंयुक्ताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

व्रत के दोषों को हरने में, प्रतिक्रमण इक साधन है।
मोक्ष महल में ले जाने का, ये शुभ सम्यक् वाहन है॥
षट् आवश्यक धारी भगवन्, कर्मों का संहार करें।
शीघ्र भवोदधि तरकर के वे, मुक्तिरमा का वरण करें॥
ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकनिरताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

दोष अनागत में ना होवे, अतः वद्य का त्याग करें।
प्रत्याख्यान हृदय में धरकर, शुद्धातम से राग करें॥
षट् आवश्यक धारी भगवन्, कर्मों का संहार करें।
शीघ्र भवोदधि तरकर के वे, मुक्तिरमा का वरण करें॥
ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यककर्मनिरताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

देहादिक सब परद्रव्यों से, ममता के वे त्यागी है।
कायोत्सर्ग करें सूरी वर, भव तन भोग विरागी है॥

षट् आवश्यक धारी भगवन्, कर्मों का संहार करें।
शीघ्र भवोदधि तरकर के वे, मुक्तिरमा का वरण करें।।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गावश्यकनिरताचार्य-परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।36।।

घत्ता- हे सूरी साधक, निज आराधक, तव गुण मैं भी चित्त गहुँ।
तव गुण छत्तीसा, नावें शीशा, पूजा कर शिव पंथ लहुँ।।
ॐ ह्रीं अस्मिन् प्रतिष्ठोत्सवे मखमुखार्चितअष्टमवलयोन्मुद्रिताचार्य-परमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नवम वलय
उपाध्याय परमेष्ठी के 25 मूलगुणों की अर्घावली

तर्ज- हिन्दी भक्तामर भक्त अमर नत.....

11 अंग

आचारंग आचरण कहता, जो शिव सुख का कारण है।
सहस अठारह पद गर्भित हैं, करता कर्म निवारण है।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं अष्टादशसहस्रपदाचारांगज्ञाता-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सूत्र कृतांग दूसरा जानो, निज पर धर्म सिखाता है।
पद छत्तीस सहस है जिसमें, जो मम चित्त लुभाता है।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं षटत्रिंशत्सहस्रपदसंयुक्त-सूत्रकृतांगज्ञाता-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

तृतीय अंग में द्रव्य भेद का, पूर्ण ज्ञान जिन सिखलाया।
सहस बयालिस पद का धारक, ठाण अंग जो कहलाया।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं द्विचत्वारिंशत्पदसंयुक्त-स्थानांगज्ञाता-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से, गुण समत्व जिसमें देखे,
एक लाख चौंसठ हजार शुभ, पद समवाय अंग लेखे।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं एकलक्षषष्टिपदन्याससहस्रसमवायांगज्ञाता-उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

जीवों के हैं भेद अनेकों, षष्टि सहसा प्रश्नोत्तर।
द्वि लक्षा अरु सहस अठाईस, व्याख्या प्रज्ञप्ति उत्तर।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रींद्विलक्ष-अष्टविंशतिसहस्रपदर्रजित-व्याख्याप्रज्ञप्त्यांगउपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

धर्म कथाओं से जो गर्भित, ज्ञातृ कथांग कहाता है।
पाँच लाख छप्पन हजार पद, धर्म स्वरूप दिखाता है।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं पंचलक्षषट्पंचाशत्सहस्रपदसंगत-ज्ञातृधर्मकथांगधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

श्रावक वृष का वर्णन जिसमें, है उपासकाध्यनन महा।
लक्षैकादश सहस रु सत्तर, पद का धारक अंग कहा।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं एकादशलक्षसप्ततिसहस्रपद-शोभितोपासकाध्ययनांग-धारकोपाध्याय-परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

अन्तःकृत केवलि दश जो हर, तीर्थकाल में होते हैं।
सहस तेइस सौ अठवीसा पद, अंतर का मल धोते हैं।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं त्रिविंशतिलक्ष-अष्टविंशतिसहस्रपद-शोभितांतःकृतदशांग धारकोपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

पंचानुत्तर में जन्मे जो, सह उपसर्ग मुनि ज्ञानी।
लाख बानवे सहस चवालिस, पद कहते केवलज्ञानी।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं द्विनवतिलक्षचतुर्चत्वारिंशत्पद-शोभितानुत्तरोपपादिककांग-धारकोपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

न्याय युक्त सब उत्तर देवा, अंग प्रश्न व्याकरण कहा।
सोलह सहस रु लक्ष तिरानव, ज्ञानामृत से भरा महा।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।
ॐ ह्रीं त्रिनवतिलक्षषोडशसहस्रपद-शोभितप्रश्नव्याकरणांग-धारकोपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

चेतन के सब भाव कर्म की, दशा सभी दर्शाता है।
चतु अशीति लख कोटि इक पद, सूत्र विपांग कहाता है।।
परम पूज्य पाठक मुनिवर जी, अंग एकादश ज्ञाता हैं।
श्रावक मुनि के वृष उपदेशक, अक्षय शांति प्रदाता हैं।।

ॐ ह्रीं एककोटि-चतुरशीति-सहस्रपद-शोभितविपाकसूत्रांग-धारकोपाध्याय-परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

14 पूर्व

छंद-गीतिका

दृष्टिवाद सुभेद पन है, पूर्वगत जिसमें सुभग।
एक कोटि पद युता, उत्पाद दर्शाता सुमग।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

पूर्व अग्रायणी दूजा, द्रव्य नय दुर्नय कहे।
अस्तिकाय रु तत्त्व आदिक, छ्यानवे लख पद गहे।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

पूर्व शुभ वीर्यानुवादा शक्ति तन चेतन कहे।
लाख सत्तर पद सुभग ये, मोक्ष के प्रेरक रहें।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

अस्ति नास्ति प्रवाद पूरब, सप्त भंग विवेचना।
साठ लख पद से सुशोभित, नित्य करते अर्चना।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

पूर्व ज्ञान प्रवाद पंचम, ज्ञान का वर्णन करे।
इक ऊन कोटि एक पद सु, चित्त को निर्मल करे।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

पूर्व सत्य प्रवाद षष्टम, वचन सब उल्लेखता।
कोटि षट पद उर धरे जो, मोक्ष पद को लेखता।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

पूर्व आत्म प्रवाद सप्तम, आत्म द्रव्य को कहे।
छब्बीस कोटी पदयुता जो, निज हृदय पाठक गहें।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

पूर्व कर्म प्रवाद अष्टम, कर्म का पूरण कथन।
कोटि अस्सी लाख पद में, लिखित सब श्रुत को नमन।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

पूर्व प्रत्याख्यान नौवाँ, त्याग का वर्णन करे।
लाख चौरासी पदों में, श्रुत सदा अर्चन करें।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

पूर्व शुभ विद्यानुवादं , नेक विद्या का धनी।
एक कोटि लक्ष दस पद, धारते ऋषिगण मुनी।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

पूर्व शुभ कल्याणवादं, ग्रह गमन वह भाषता।
पद सुशोभित कोटि छब्बिस, जैन आगम शासता।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

पूर्व यह प्राणानुवादं, शल्य औषधि विधि कहे।
कोटि तेरह पद विभूषित, पूज्य गुण पाठक लहे।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं प्राणप्रवादपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

पूर्व शुभ किरिया विशालं, शुभ कला विस्तार है।
कोटि नव पद से सुशोभित, देत शिव का द्वार है।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

लोक बिंदु सार पूरब, गणित अरु शिवमग कहे।
कोटि द्वादश अर्द्ध शत लख, साधु जिनमें नित रहे।।
पूर्व उत्पादादि चौदह, ज्ञान के भंडार हैं,
गुण सदा पाठक सुधी के, पूजते सुखसार हैं।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यबिन्दुपूर्वधारकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

पूर्णार्घ्य- (घत्ता)

शुभ गुण पच्चीसा, पूज्य मनीषा, हे पाठकगण नमन करुँ।
निर्मल मति पाऊँ, शीश नवाऊँ, ध्यान तिहारा चित्त धरुँ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठामहोत्सवविधाने मुख्यपूजार्हनवम-वलयोन्मुद्रित-द्वादशांग-श्रुतदेवताभ्यस्तदाराधकोपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम वलय

साधु परमेष्ठी के 28 मूलगुणों की अर्घावली

पंचमहाव्रत

छंद-गीतिका

मुनिराज हिंसा पाप को, योगत्रय से त्यागते।
चेतना की निधि निरखने, अहर्निश जो जागते।।

निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सत्यव्रत शाश्वत धरम, अघ पंक को शुचि नीर है।
धारण करें नित वीर जो, नाशते जग पीर है।।
निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

परकीय वस्तु को कभी, निर्ग्रंथ मुनि गहते नहीं।
गृहस्वामी की अनुमति बिना, वे भवन में रहते नहीं।।
निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

भेद अठदश सहस व्रत के, जो जिनागम में कहे।
शीलव्रत में लीन मुनिवर, ब्रह्म में ही नित रहे।।
निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

चेतन अचेतन भेद दो, संग के जिन ने कहे।
ग्रंथ अंतर बाह्य तजकर, पूर्ण निर्ग्रन्था भए।।
निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रहमहाव्रतधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

पंच समिति

दिवस के परकाश में, चउकर मही लखकर चलें।
धारते ईर्या समिति मुनि, कर्म पर्वत को दलें।।
निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

इष्ट मिष्ट सुशिष्ट भाषा, बोलते ज्ञानी मुनी।
आसन्न भवि को भासती, मानो प्रभुवर की ध्वनि।।
निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

बत्तीस अंतर विघ्न तज, दोष वे छ्यालिस तजें।
भक्ति नवधा युक्त मुनि, आहार तप हेतू गहें।।
निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

सब वस्तुओं को शोधकर, नित्य परिमार्जन करें।
आदान निक्षेपण समिति, पालकर करुणा धरें।।
निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

निर्जन्तु ठान विलोक मुनि, बाह्य मल को त्यागते।
उत्सर्ग समिति पाल साधु, आत्म सुध में लागते।।

निर्ग्रन्थ साधु मुनि जग के, मूलगुण पालन करें।
भक्तजन तव अर्चना कर, शीघ्र भव सागर तिरें।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समितिधारकसाधुपरमेष्ठिभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

पंच इन्द्रिय रोध

तर्ज- जगत में जिसका.....

स्पर्शन के विषै आठ हैं, मुनिजन इंद्रिय जीते।
कर निरोध पंचाक्षी का वे, बन गए नित्य अजीते।।
जगत में साधु निर्मोही बन जीते।।

ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रिय-विकार-विरत-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

रसना इंद्रिय से रस पीकर, प्राणी रहते रीते।
इसीलिये मुनि आतम का रस, अंतराय बिन पीते।।
जगत में साधु निर्मोही बन जीते।।

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रिय-विकार-विरत-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

गंध सुगंधित या दुर्गन्धित, सभी द्रव्य जगती के।
आतम की जो गंध निरंतर, ग्रहण करें मुनि नीके।।
जगत में साधु निर्मोही बन जीते।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रिय-विकार-विरत-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

पंच वर्ण है विषय नयन के, बचकर मुनिवर जीते।
शुद्धातम का रूप निरखते, सब ही लागे फीके।।
जगत में साधु निर्मोही बन जीते।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रिय-विकार-विरत-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

कणेन्द्रिय के विषय सात हैं, मनरंजन जग जी के।
आतम की ध्वनि जो सुन लेवें, उनको लागे फीके॥
जगत में साधु निर्मोही बन जीते॥

ॐ ह्रीं श्रोतेन्द्रिय-विकार-विरत-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥15॥

षट् आवश्यक

छंद-लक्ष्मीधर

जन्म हो मृत्यु वा लाभ हानि तथा,
सुक्ख वा दुक्ख में एक होते सदा।
मित्र हो शत्रु या स्वर्ग पाताल हो,
साम्य सद्भाव का चित्त में वास हो॥

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यक-गुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥16॥

एक तीर्थेश भक्ति कही वंदना,
शुद्ध हो भावना पाप का बंध ना।
क्रंदना नाश वो नित्य प्राणी करे,
पूज्यता पाय के मुक्ति वामा वरे॥

ॐ ह्रीं वन्दनावश्यक-गुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥17॥

पूज्य तीर्थंकरा नाथ चौबीस हैं,
नित्य आराध्य वे तीन लोकेश हैं।
भक्ति नीरं शुभं पाप प्रक्षालता,
साधु पूजें सदा कर्म को टालता॥

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यक-गुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥18॥

भूल अज्ञान से दोष जो हो लगा,
द्रव्य वा भाव से हो व्रतों में दिखा।
मेटने दोष को मैं प्रतिक्रम करूँ,
चित्त शुद्धी करूँ, दोष सारे हरुँ।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यक-गुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

टालने दोष भावी सदा शक्तितः।
पालते साधुजन प्रत्याख्यानं अतः।।
भक्ति श्रद्धा युतं जो इसे धारता।
धर्म ये नित्य ही जीव उद्धारता।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यक-गुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

नेह को देह से त्याग मंत्रं जपें,
बाह्य अभ्यंतरं नित्य वे भी तपें।
काय उत्सर्ग ये मोक्ष का मूल है,
साधु वे पाय संसार का कूल है।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यक-गुणधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

सात विशेष गुण

तर्ज- सोलह कारण भाय.....

चार तीन दो मास अनंतर लोंच करें,
जीव दया पालन हेतु व्रत आचरें।
सप्त विशेष गुणों को यतिवर धारते,
रत्नत्रय को धारें स्वात्म सम्हारते।।

ॐ ह्रीं कृतकेशलोचन-नियमधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

यथाजात निर्ग्रंथ मुनि सुर पूजित हैं।
गुण आचेलक से गुरु आप विभूषित हैं।।
सप्त विशेष गुणों को यतिवर धारते,
रत्नत्रय को धारें स्वात्म सम्हारते।।

ॐ ह्रीं सर्वथावस्त्रत्याग-नियमधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

आप स्वभाविक निर्मल चित शोधन करें।
न्हवन त्याग पावन तप का पालन करें।।
सप्त विशेष गुणों को यतिवर धारते।
रत्नत्रय को धारें स्वात्म सम्हारते।।

ॐ ह्रीं अस्नान-नियमधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

भूमि शयन करें वे तन सुख त्यागते।
आत्म ध्यान में रहे निरंतर जागते।।
सप्त विशेष गुणों को यतिवर धारते,
रत्नत्रय को धारें स्वात्म सम्हारते।।

ॐ ह्रीं भूशयन-नियमधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

राग द्वेष तजने को दंत न धोवते।
सहें परिषह विषम स्वात्म गुण पोषते।।
सप्त विशेष गुणों को यतिवर धारते,
रत्नत्रय को धारें स्वात्म सम्हारते।।

ॐ ह्रीं दन्तधोवनवर्जन-नियमधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

एक बार आहार लेय तप वृद्धि को।
करपात्री मुनि लहें स्वात्म समृद्धि को।।
सप्त विशेष गुणों को यतिवर धारते,
रत्नत्रय को धारें स्वात्म सम्हारते।।

ॐ ह्रीं एकभुक्त-नियमधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ठाड़े लेय अहार ध्यान की सिद्धि को।
वांछा रहित मति लहते सब रिद्धि को।।
सप्त विशेष गुणों को यतिवर धारते,
रत्नत्रय को धारें स्वात्म सम्हारते।।

ॐ ह्रीं अस्थितभोजन-नियमधारक-साधुपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

पूर्णार्घ्य (घत्ता छंद)

साधु मुनि ध्यानी, यतिवर ज्ञानी, निर्मोही तव ध्यान करुँ।
निर्ग्रंथ दिगम्बर, शीश चरण धर, पूजन से सब क्लेश हरुँ।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठोत्सवे मुख्यपूजार्ह-दशम वलयोन्मुद्रित-साधुपरमेष्ठिभ्यो-सतन्मूलगुणग्रामेभ्यश्च पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादश वलय

64 ऋद्धिधारी मुनीश्वरों की अर्घावली

छंद-चौपाई

गुण सुद्रव्य पर्याय अनंता, युगपत जाने श्री भगवंता।
शुभ केवलि ऋद्धिधर मुनिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।

ॐ ह्रीं सकललोकालोकप्रकाशक-केवलज्ञानऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

अन्य चित्त का चिंतन जाने, ऋजु औ विपुलमति पहचाने।
मनःपर्यय ऋद्धिधर मुनिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।
ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

द्रव्य आदि की ले मर्यादा, जाने वे प्रत्यक्ष अबाधा।
अवधिज्ञान ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।
ॐ ह्रीं अर्हं अवधिबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

भरे कोष्ठ में धान हैं माने, इक पद से जिन आगम जानें।
कोष्ठ ऋद्धि के धारी ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।
ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

बीज समा बहु अर्थ प्रदायक, बीज बुद्धि ऋद्धि सुख दायक।
बीज बुद्धि ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।
ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

विविध शब्द नर विविध जो कीना, युगपत् पृथक-पृथक मुनि चीन्हा।
अवधिज्ञान ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।
ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

इक पद जान भाव सब जाने, ग्रंथ सार मुनिवर पहचाने।
शुभ पादानुसारि ऋद्धीश्वर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।
ॐ ह्रीं पादानुसारिबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

वस्तु दूरगम्य जो होती, मुनि के स्पर्श गम्य वे होतीं।
दूर स्पर्श ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।
ॐ ह्रीं दूरस्पर्शबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

हों पदार्थ दूर स्थित जग के, स्वाद गम्य हों वे मुनिवर के।
दूर स्वाद ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर।।
ॐ ह्रीं दूरास्वादनबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

बहुत सुदूर क्षेत्र जो अर्था, गंध ज्ञान में मुनि समर्था।
दूर गंध ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं दूरगंधबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥10॥

चक्षु क्षयोपशम मुनि का भारी, देखें दूर वस्तु जग सारी।
जय दूर अवलोकन ऋषिधर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं दूरावलोकनबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥11॥

दूरवर्ती शब्दों की ध्वनि को, सुन सकते साधक मुनिवर वो।
दूरश्रवण ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं दूरश्रवणबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥12॥

दश पूर्वी विद्या के स्वामी, बिन अभ्यास अर्थ सब जानी।
दश पूरब ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं दशपूर्वबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥13॥

मुनिवर चौदह पूर्व सु ज्ञाता, पढ़ मुहूर्त में लहते साता।
चउदस पूर्व ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥14॥

व्यंजन स्वर ले आदि निमित्ता, बतलाते सब देव पवित्रा।
अष्टांग निमित ऋद्धीश्वर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्तबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥15॥

बिन अध्ययन मुनिवर अति ज्ञानी, भेद सभी समझाते ध्यानी।
प्रज्ञाश्रमण ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥16॥

बिन उपदेश आत्म विधि जानें, शाश्वत सिद्ध अभेद सु मानें।
जय प्रत्येक ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥17॥

न्याय आदि जानें शिव नेता, परवादी के आप विजेता।
जय वादित्व ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥18॥
जल के ऊपर थलवत् चालें, जीवों के प्रति करुणा पालें।
जलचारण ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं जलचारणऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥19॥
बिन वक्री घुटने भू से जो, चउ अंगुल ऊपर चाले वो।
जय जंघा चारण ऋद्धीश्वर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं जंघाचारणऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥20॥
गमन करें तंतु पर स्वामी, किंचित् कष्ट न पावे प्राणी।
जय तंतुचारण ऋद्धीश्वर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥21॥
पुष्प गमन करि बिना विराधन, भवि करते तेरा आराधन।
चारण पुष्प ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं पुष्पचारणक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥22॥
पत्रों पर यदि निज पग धरते, जीव मरें ना करुणा करते।
चारण पत्र ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं पत्रचारणक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥23॥
बीजों पर भी पग यदि धरते, महिमा जीव नहीं वे मरते।
चारण बीज ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं बीजचारणक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥24॥
पीड़ा जीव तनिक नहिं पाते, श्रेणीवत ध्यानी मुनि जाते।
जय श्रेणी चारण ऋद्धीश्वर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं श्रेणीचारणक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥25॥

यदि पावक पर कदम बढ़ाए, बाधा कोई जीव न पाए।
चारण अग्नि ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं अग्निचारणक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।
नहीं कष्ट जीवों को होवे, गगन गमन कर निज अघ धोवे।
नभ चारण ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं नभचारणक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।
ऋद्धि विक्रिया भेद सुपावन, मुनि अणु सम कर लेते निज तन।
जय अणिमा ऋद्धीधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं अणिमाविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।
ऋद्धि से उन्नत तन करते, भवि जीवों के अघ मल हरते।
जय महिमा ऋद्धीधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं महिमाविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।
मुनि का दीर्घ शरीर विशाला, अर्कतूल सम लगता आला।
जय लघिमा ऋद्धीधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं लघिमाविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।
यदि तन मुनि अति सूक्ष्म दिखावे, इंद्रादिक से ना हिल पावे।
जय गरिमा ऋद्धीधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं गरिमाविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।
भू पर रह छू सकते वीरा, ग्रह नक्षत्र आदि वे धीरा।
जय श्री प्राप्ति ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।
भू पर जल सम ही लहराते, तन के नाना भेद बनाते।
जय प्राकाम्य ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

साधक निर्मोही योगीश्वर, तीन लोक स्वामी परमेश्वर।
जय ईशत्व ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥34॥
श्रद्धायुत जो भव्य निहारे, क्षणभर में वश होए तुम्हारे।
जय वशित्व ऋद्धीधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं वशित्वविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥35॥
पर्वत छिद्र रहित जो होवें, पार होए मुनि अघ मल धोवें।
अप्रतिघात ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥36॥
धन्य धन्य मुनिवर तप धारी, दृष्टि अगोचर हों अविकारी।
अन्तर्धान ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं अन्तर्धानविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥37॥
इच्छित नाना रूप बनाते, तप वृद्धि कर कर्म खपाते।
कामरूपित्व ऋद्धिधर ऋषिवर, उभय सौख्य पाते पूजन कर॥
ॐ ह्रीं कामरूपित्वविक्रियाऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥38॥

दोहा

आजीवन बढ़ते रहें, मुनिवर के उपवास।
उग्र तपः ऋद्धीश को, पूज लहूँ निजवास॥
ॐ ह्रीं उग्रतपोतिशयऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥39॥
मासों के उपवास कर, तन द्युति रहे अपार।
दीप्त तपः ऋद्धीश को, पूज होऊँ भव पार॥
ॐ ह्रीं दीप्ततपोऽतिशयऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥40॥
नहिं निहार मुनिराज के, पर लेते आहार।
तप्ततपः ऋद्धीश को, प्रणमूँ बारम्बार॥
ॐ ह्रीं तप्ततपोऽतिशयऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥41॥

मास पक्ष उपवास महा, दीर्घ दीर्घ व्रत मान।
महातपः ऋद्धीश का, करूँ चित्त नित ध्यान॥

ॐ ह्रीं महातपोतिशयऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥42॥

घोर-घोर तप नित करें, संयम गिरि सम साध।
घोर तपः ऋद्धीश को, भवि निशदिन आराध॥

ॐ ह्रीं घोरतपोऽतिशयऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥43॥

घोर पराक्रम ऋद्धि कि, महिमा ऐसी जान।
इन युत ऋषि को कष्ट दे, पाता दुःख निधान॥

ॐ ह्रीं घोरपराक्रमऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥44॥

ब्रह्मलीन ऋषिवर रहें, दर्शन रोग नशाय।
घोर ब्रह्मचारी मुनी, पूजूँ मन वच काय॥

ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचर्यतपोऽतिशयऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥45॥

द्वादशांग चिंतन करें, मुनि इक मुहुरत माँहि।
मन बल ऋद्धिधर नमूँ, मोक्ष निकेतन जाँहि॥

ॐ ह्रीं मनोबलऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥46॥

शुद्ध पाठ श्रुत का सकल, करते मुहुरत माँहि।
वच बल ऋद्धिधर नमूँ, मोक्ष निकेतन जाँहि॥

ॐ ह्रीं वचनबलऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥47॥

हिला सके तीनों भुवन, ऋद्धि महिमा गाए।
काय वीर्य ऋद्धीश को, पूज मोक्ष पद पाए॥

ॐ ह्रीं कायबलऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥48॥

नख केशादिक संस्पर्श, आधि व्याधि विनशाय।
आमर्षौषधि ऋद्धि धर, ऋषिवर के गुण गाए॥

ॐ ह्रीं आमर्षौषधिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥49॥

मुख से उपजे मैल जो, भवि का रोग नशाय।
खेल्लौषधि ऋषि ऋद्धि धर, भक्ति वश गुण गाए॥
ॐ ह्रीं खेल्लौषधिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।
साधक मुनि का जल्ल भी, मेटे तन का रोग।
जल्लौषधि ऋद्धीश को, नमू तजूँ भव भोग॥
ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।
मुनिवर का मल सहज ही, करे औषधि काम।
मल्लौषधि ऋद्धीश को, पुनि-पुनि करहुँ प्रणाम॥
ॐ ह्रीं मल्लौषधिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।
साधक का मलमूत्र भी, दिव्यौषधि बन जाय।
विडौषधी ऋद्धीश को, नमहूँ भक्ति जगाय॥
ॐ ह्रीं विडौषधिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।
संस्पर्शित मुनि देह से, वायु रोग नशाय।
सर्वौषधि ऋद्धीश को, पूजूँ मन वच काय॥
ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।
सुन मुनि के अमृत वचन, प्राणी निर्विष होए।
आस्याविष ऋद्धीश को, पूज पाप मल धोए॥
ॐ ह्रीं आस्याविषऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।
दयामयी मुनि दृष्टि से, विष निर्विष हो जाए।
दृष्टि निर्विष ऋद्धीधर, ऋषिवर के गुण गाए॥
ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।
निकले मुख से क्रोध वश, 'मर जाओ' मर जाए।
आशीर्विष रस ऋद्धिधर, नित मम चित्त लुभाए॥
ॐ ह्रीं आशीर्विषऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

क्रोधित मुनि दृष्टि पड़े, प्राणी मृत्यु पाए।
दृष्टिविष रस ऋद्धिधर, बसें हृदय में आए।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

क्षीर रहित आहार भी, स्वाद क्षीर का देय।
क्षीरस्रावी रस ऋद्धिधर, नाम प्रतिक्षण लेय।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावीरसऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

मिष्ट रहित आहार भी, मीठा स्वाद बनाय।
मधुस्रावी रस ऋद्धिधर, अर्चा को पद आय।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावीऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

घृत विहीन आहार भी, घृत का स्वाद बनाय।
घृतस्रावी रस ऋद्धिधर, तव पूजन को आय।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावीऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

विष भी मुनि कर पात्र में, शुभ अमृत बन जाय।
अमृतस्रावी ऋद्धिधर, की शुभ पूज रचाय।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावीऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

इस ऋद्धियुत जो मुनि, घर अहार ले आए।
चक्री सेना भी यदि, भोज करे कम नाए।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

इस ऋद्धियुत जो मुनि, जिस स्थान ठहराये।
छोटा भी होवे यदि, चक्री कटक समाय।।

ॐ ह्रीं अक्षीणसंवासऋद्धिधारकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

पूर्णार्घ्य

घत्ता- हे ऋद्धीश्वर, महामुनीश्वर, तुम गुण पाकर स्वात्म भजुँ।
निर्मल जल सा मन, शुभ ऋद्धि धन, पाने को ऋषिराज जजूँ।।

ॐ ह्रीं सकलऋद्धिसम्पन्नसर्वमुनिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिन चैत्यालय

हरिगीतिका छंद

कृत्रिम अकृत्रिम सब जिनालय, पंक अघ क्षालन करे।
सद्दृष्टि वा सद्ज्ञान चारित, के निमित कारण बने॥
अति भक्ति श्रद्धा से सहित, चैत्यालयों की वंदना।
पूजें भविक जिन नित्य प्रति जो, पाप का हो बंधना॥

ॐ ह्रीं सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिन चैत्य

अति सौम्यता युत सुखद मनहर वीतरागी बिंब की।
सर्वज्ञ हितकर पाप नाशक, अर्चना जिन बिंब की॥
शुभ चैत्य वंदन पूज अर्चन, भव्य को सुख से भरें।
होवें मनोरथ पूर्ण सारे, मुक्ति वामा को वरें॥

ॐ ह्रीं सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिन आगम

सर्वज्ञ जिनवर आप्त वर्णित, गण अधिप संग्रह करें।
निर्ग्रंथ मुनिवर बद्धलिपि कर, भव्य का नित हित करें॥
शाश्वत जिनागम मोक्ष पथ के, मग प्रतीकात्मक रहें।
स्वाध्याय पन विधि से करें, ते भव्य भवकानन दहें॥

ॐ ह्रीं स्याद्वादमुद्रांकितपरम-जिनागमायऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिनधर्म

जिन धर्म शाश्वत शीलमय है, वा चरितमय है कहा।
सम्यक्त्व आदिक तीन रूपा, व्रत अहिंसादिक अहा॥

उत्तम क्षमादि स्वरूप दस हैं, अरु दयादि विशेषता।
धारे श्रमण श्रावक धरम जो, आत्म वैभव देखता।।

ॐ ह्रीं दशलक्षणोत्तमादित्रिलक्षण-सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्ररूप-तथामुनि गृहस्थाचार-भेदेन द्विविध-तथादयारूपत्वेनैकरूप-जिनधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

दोहा- अरिहंतादि पंच गुरू, पूजूँ शक्ति प्रमाण।
भक्ति का फल मैं चहूँ निज वैभव निर्वाण।।

जय वीतराग सर्वज्ञ देव, शत इंद्र करें तव नित्य सेव।
परमात्म सकल हितकर जिनेश, तुम परम ज्योति जिनवर महेश।।
जय सकल कर्म से हीन आप, हे सिद्ध शुद्ध निश्चल अपाप।
तुम नित्य निरंजन कर्म हीन, निज आतम में रहते सुलीन।।
हो मुक्तिरमा के आप कंत, हे सिद्ध अकल निर्मल अनंत।
आचार्य मध्य दीपक महान, कलियुग के ये तीर्थेश जान।।
तुम पंचाचार धरें विशेष, पाते तव आश्रय भवि अशेष।
शिष्यानुग्रह में तुम प्रवीण, तव दर्श मात्र करि पाप क्षीण।।
पाठक मुनिवर हैं ज्ञान मूर्ति, सद्ज्ञान ज्योति की करे पूर्ति।
ये द्वादशांग पाठी महान, करते निशदिन सब कर्म हान।।
निर्ग्रंथ साधु हैं मोक्ष पंथ, भविजन बनते हैं मुक्ति कंत।
आरंभ-विषय अरु पाप हीन, मिथ्यात्व भाव कीने सुक्षीण।।
शुद्धात्म निधि नित लखे आप, नशते भव तन अरु मोह ताप।
हैं पंच गुरु परमेष्ठि देव, वृष नाव सदा भव सिंधु खेव।।
तुम शाश्वत जिन आनंद रूप, भवि पूज लहें आतम स्वरूप।
हम श्रद्धा भक्ति सहित आए, योगत्रय से गुण आप गाए।।

सब रोग शोक भय होय नष्ट, वृषभानु रूप हर तिमिर कष्ट।
वसुनंदी पूजकर इह विधान, भव सुख पा नंतर सिद्ध थान॥
दोहा- पंच गुरु की अर्चना, अघ भव पाँच नशाय।
पंचम गति अरु ज्ञान को, मंडल याग दिलाय॥

ॐ ह्रीं सर्वयागमण्डलदेवताभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि ॥

गर्भ कल्याणक-पूजन

तीर्थंकरों के गर्भ आदि, पंच कल्याणक कहे,
शुभ गर्भ है जिनमें प्रथम महिमा कहाँ लौ हम कहें।
स्वयमेव के कल्याण हेतु, चरण जिनवर के जजूँ,
मोह ममता द्वेष तजकर स्वात्म गुण मैं नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति-तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति-तीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशति-तीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

शशि किरण सम नीर निर्मल, सिद्ध चरण चढ़ावता।
जरा मृत्यु जन्म नाशै, भावना ये भावता॥
गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

मलयागिरि का शुभ्र चंदन, देह का आतप हरे।
जिनदेव की अर्चा करें तो, शांति शाश्वत चित धरे॥

गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥

मोती समा तंदुल अखंडित, जिन चरण आगे धरूँ।
अक्षय निधि को प्राप्त करने, देव तव अर्चन करूँ॥
गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥

सज्जनों के चित्त हारक, सुमन नित्य विधेय हैं।
जिनवर चरण में जो धरे, बनता वो अक्ष विजेय है।
गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

षटरसों से युक्त मनहर, मिष्ट व्यंजन नित भखे।
भक्ति वश जिन चरण चर्चूं, सौख्य आतम का चखे॥
गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सुर वृक्ष ज्योतिरांग दीपक, बाह्य तिमिर विनाशते।
दीप से जिनराज पूजूँ, आत्म तत्त्व प्रकाशते॥
गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

मनहर सुगंधित धूप दशविध, अनल में खेकर जजूँ।
शुद्धात्मा से सर्व गुण को, सिद्ध बनने मैं भजूँ।।
गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से सुफल की कामना ले, षट्ऋतु के फल लिये।
किंतु जिन पूजा बिना ना, मोक्ष फल उनने दिये।।
गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

अष्ट कर्म निवारने को, अष्ट द्रव्य चढ़ावता।
अष्ट भू पर वास हो, वसुयाम ये ही चाहता।।
गर्भादि पाँचों शुभ कल्याणक, भव्य का हित साधते।
स्वात्म हित के हेतु हम यहाँ नित्य जिन आराधते।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गर्भ कल्याणक के अर्घ

(दोहा)

कृष्ण दोज आषाढ़ को, गर्भ माँहि जिनराज।
ऋषभदेव तीर्थेश पद, सफल होंय सब काज।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तिथि है मावस जेठ की, अजितनाथ तीर्थेश।
विजया माँ के गर्भ में, आये पुण्य जिनेश।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णामावस्यांगर्भमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मात सुषैणा जगत में, पूज्य नृपति दृढ़राज।
फागुन श्वेता अष्टमी, गर्भे संभव राज।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनशुक्ल-अष्टम्यांगर्भमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जननी सिद्धार्था सुधी, गर्भ आए तीर्थेश।
सित वैसाखी षष्टमी, नंदन पूजि विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लषष्टम्यांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सुमति नाथ जिनदेव जी, जगत पूज्य तीर्थेश।
श्रावण शुक्ल दोज को, पूजूँ गर्भ विशेष।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणशुक्लद्वितीयायांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मात सुसीमा पद्म की, पूज्यनीय कहलाय।
श्यामल षष्टी माघ की, नाथ गर्भ में आए।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णाषष्टम्यांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सुपार्श्व प्रभु की गर्भ तिथि, षष्ठी भादों श्वेत।
देव करें तव वंदना, स्वयं मुक्ति फल हेत।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रपदशुक्लषष्टम्यांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

चैत कृष्ण की पंचमी, वरषे रतन अपार।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, तिष्ठे चन्द्र कुमार।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णपंचम्यांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

फाल्गुन वदी नवमी तिथि, गर्भ मांहि जिननाथ।
जयरामा युत अवनि को, तुमने किया सनाथ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णनवम्यांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

चैत कृष्ण की अष्टमी, शीतल गर्भ मँझार।
नंदा अति नंदित हुई, देव करें जयकार।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णाअष्टम्यांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्येष्ठ वदी षष्ठी दिना, श्रेयांस प्रभु भगवान।
वेणु श्री के गर्भ का, देव करें गुणगान।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णषष्टम्यांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

षष्ठी असित अषाढ़ की, जयावती गुणवान।
इंद्र गर्भ पूजा करें, वासुपूज्य भगवान।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़कृष्णषष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्येष्ठ वदी दशमी सुभग, माँ कुक्षि जिन आए।
सुरपति उत्सव अति किया, विमलनाथ जगराय।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णदशम्यांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कार्तिक तिथि एकम वदी, देव किया गुणगान।
जय श्यामा के गर्भ में, अनंतनाथ भगवान।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तेरस सुदी वैशाख नु, माँ सुप्रभा अमलान।
धर्मनाथ भगवान का, इन्द्र करें गुणगान॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लत्रयोदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

भादों वदी शुभ सप्तमी, पुण्य हुआ विस्तार।
माँ ऐरा के गर्भ में, विश्व शांति आधार॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रपद कृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

श्रावण वदि दशमी दिना, धन्य श्रीमती मात।
श्री जी आये गर्भ में, हुआ ज्ञान परभात॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

फागुन सुत तृतीय दिवस, गर्भ आए अरनाथ।
धन्य प्रभु अब पायेंगे, मुक्ति वधू का साथ॥18॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

चैत्र शुक्ल एकम दिना, लोक पूज्य सुखकार।
विश्व मिहिर श्री मल्लि प्रभु, प्रभावती माँ धार॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लप्रतिपदायांगर्भ मंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

श्रावण की द्वितीया वदी, गर्भ धार मुनि नाथ।
मात पदमावती सुधी, मुनिसुव्रत जिननाथ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दौज वदी आश्विन तिथि, लिया गर्भ में धार।
वप्रा माँ जगतीतल की, बनी स्वयं आधार।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं अश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कार्तिक सित षष्टी दिना, तीन लोक की शान।
मात शिवा के गर्भ में, प्रकटे श्री भगवान।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिकशुक्लषष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

स्वर्ग सु प्राणत से चये, वामा गर्भ सिधार।
राध वदी द्वितीया तिथि, पार्श्व प्रभु अवतार।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुचि शुक्ल षष्ठी दिना, वर्धमान का वास।
धरि त्रिशला हर्षित हुयीं, हुये दोष अवकाश।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़ शुक्लषष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर जननी महा, लोक पूज्य विख्यात।
शक्रादि मिल पूजते, द्रव्य लेय वसु मात्र।।

जय तीर्थंकर जननी महान, हैं लोक पूज्य शुभ पात्र जान।
नगरी की रचना करें देव, तव अष्ट कुमारी करें सेव।।
देवों द्वारा शुभ रत्नराशि, मानो बरसे नित सौख्य राशि।
आनंद मग्न सब भव्य जीव, मानो कि स्वर्ग सुख लें सदीव।।
जग जननी सोलह स्वप्न देख, आनंदित मन में हों विशेष।

होते प्रभात निज स्वामी पास, निज स्वप्न फलों की लेय आस॥
प्रभु तात स्वप्न का फल कहें, तब देवी गर्भ में जिन रहें।
तीर्थेश लोक कल्याण हेत, स्वातम वैभव अरु शिव निकेत॥
छप्पन अरु अष्ट कुमारिकाएँ, माँ की सेवा में चित लगाएँ।
पितु मात खुशी का नहिं पार, सुर नर आदि हरषें अपार॥
सोलह भावन पूरब में भाय, जननी सोलह सपने दिखाय।
तस फल स्वरूप षोडश सु लाभ, भवि सुनते पाते शांति भाव॥
चारों निकाय के देव आय, जिन तात मात पूजा रचाय।
कल्याणक गर्भ सु पुण्य रूप, प्रत्यक्ष लखे हों मुक्ति भूप॥

दोहा- कल्याणक शुभ गर्भ जिन, हरें सर्व संताप।
पूजक निश्चित आप सम, बने नशें सब पाप॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

जन्म कल्याणक पूजन

स्थापना

इन्द्रादिकों ने हर्ष वश, उत्सव जनम का शुभ किया,
तीर्थंकरों के उत्सवों से, सुफल निज भव का लिया।
तीर्थंकरों का जन्म शुभ, तिहुँ लोक में शांति करे,
जो भव्य आश्रय पाए इनका, शीघ्र भव सागर तिरें॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तश्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तश्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तश्रीऋषभादिमहावीरपर्यंत-चतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं॥

अष्टक

(तर्ज- श्री वीर महाअतिवीर..)

शशि धवल चाँदनी तुल्य निर्मल जल धारा।
जिन चरण चढाऊँ आज, धुलता अघ सारा॥
कल्याणक जन्म मनाय, तीर्थंकर अर्चन।
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

बावन चंदन ले आय, तन का ताप हरे,
जिन चरणन देत चढाय, मुक्ति आप वरे।
कल्याणक जन्म मनाय तीर्थंकर अर्चन,
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

तंदुल अखंड भरि थाल, रवि अंशु सोहे।
अक्षय पद पाने आज, जिनपद हम मोहें॥
कल्याणक जन्म मनाय तीर्थंकर अर्चन,
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।

सुरतरु के सुमन अनूप, काम विनाश करें।
तज जग कन्या को भव्य, मुक्ति वाम वरे॥
कल्याणक जन्म मनाय तीर्थंकर अर्चन,
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

बहु इष्ट मिष्ट स्वादिष्ट नेवज शुभ लाया।
श्री जिन के चरण चढाय, मन अति हर्षाया॥
कल्याणक जन्म मनाय तीर्थंकर अर्चन,
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रत्नों के दीप जलाय, आरति नित्य करें।
जिन चरणन देत चढाय, सम्यग्ज्ञान वरें॥
कल्याणक जन्म मनाय तीर्थंकर अर्चन,
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

दश विध धूप जलाय, वसुविधि नाश करूँ।
निज चिद्गुण सब प्रगटाय मुक्ति निवास करूँ॥
कल्याणक जन्म मनाय तीर्थंकर अर्चन,
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

षट्ऋतु के फल निष्फल, ना शिव फल देते।
तव पद चर्चे जो भव्य, दुख सब हर लेते॥
कल्याणक जन्म मनाय तीर्थंकर अर्चन,
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

जल चंदनादि वसु द्रव्य पंचगुरू अर्चूं।
लहे सिद्ध निधि वो भव्य, मैं भी पद चर्चूं॥

कल्याणक जन्म मनाय तीर्थंकर अर्चन,
वसु गुण पाने को भव्य, करते जिन चर्चन॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

जन्म कल्याणक के अर्घ

छंद- ओ बुलाय लो.....

वदी नौमि चैत सुहाई, नाभि आँगन शहनाई।
बाजे मृदंग बहु भाँति, नारी शुभ मंगल गाती॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णनवम्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सित दसैं माघ की आई, श्री अजितनाथ जिनराई।
जितशत्रु सदन बधाई, सुर नृत्य करें इह आई॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लदशम्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

कार्तिक सुदी पूनम के दिन, संभव जिन पूजैं निशदिन।
दृढ़राज भूप घर उत्सव, सुरगण मिल करें महोत्सव॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायांजन्ममंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

द्वादश सित माघ की पावन, खुशियों का अतिशय सावन।
स्वयंवर नृप के नंदन, श्री अभिनंदन को वंदन॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लद्वादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

ग्यारस शुभ चैत सुदी को, भूपाल मेघरथ जी को।
देवें सुर मनुज बधाई, जन्मे सुमति जिनराई॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लैकादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

श्री धरण पद्म जिन ताता, वदि तेरस कार्तिक ख्याता।
सुरनर मुनि पूज रचावें, कल्याणक जन्म मनावें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

द्वादशी सित जेठ सुहानी, जन्मे सुपार्श्व जिन स्वामी।
सुप्रतिष्ठित नृप बहु हरषे, चहुँ ओर रत्न शुभ बरसें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ग्यारस शुभ पौष वदी की, जन्में श्री चन्द्र गुणी जी।
महासेन तात तुम जानो, मैं पूजन बहु हरसानो।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णएकादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सित एकम् मंगसिर जानो, प्रभु जन्म सुखद है मानो।
सुग्रीव जनक हैं थारे, तिहुँलोक करे जयकारे।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायांजन्ममंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वदी माघ द्वादशी नन्दा, जन्मैं शीतल आनंदा।
दृढरथ श्री गुणी भूपाला, सुरवृष्टि करें पुहुमाला।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णद्वादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वदी ग्यारस फाग की आई, श्रेयस जन्में जिनराई।
श्री विष्णु देव तव जनका, जन-जन का हर्षा मनका।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णैकादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वदी चौदस फागुन माँही, श्री वासुपूज्य शिवराही।
जन्मैं वसुपूज्य निकेतन, हम पूजैं शुद्ध सुचेतन॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

है माघ चतुर्थी शुभ सित, कृतवर्मा नृप अति हर्षित।
जन्मे श्री विमल सुनाथा, हम नावत नित-नित माथा॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लचतुर्थ्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

द्वादश वदी ज्येष्ठ सुहानी, नृपसिंह सेन गुणज्ञानी।
सुरपति जन्मोत्सव कीना, हम पूजें चरण जजीना॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सुदी तेरस माघ महीना, जन्मे श्री धर्म प्रवीना।
भानु नृप खुशी मनाए, रत्नों के कोष लुटाए॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लत्रयोदश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

माह शुक्र पक्ष अंधियारा, तिथि चौदस शांति प्यारा।
पितु विश्वसेन का लाला, तिहुँ लोक करे उजियारा॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

पड़वा वैशाख सुदी तब, श्री कुन्थुनाथ जन्मे तब।
पितु शूरसेन हर्षाये, गजपुर में मंगल छाए॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लप्रतिपदायांजन्ममंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अघहन सित चौदस आई, श्री अरहनाथ जिनराई।
शुभ जन्म लिया इस भू पर, मैं अर्घ चढ़ाऊँ चितधर॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अघहन उजियारी ग्यारस, खुशियाँ बरसीं बन बारिस।
भूपति श्री कुम्भ निकेतन, बरसें मूंगा माणिक धन॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दशमी वैशाख वदी शुभ, फैलो सुमित्र नृप को यश।
सौधर्म सुतांडव कीना, धर सहस नेत्र लख लीना॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखकृष्णदशम्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

आषाढ़ कृष्ण दशमी को, करने उजियारा भू को।
नमि सूर्य उदित हो आया, नृपराज विजय मनभाया॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़कृष्णदशम्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सावन वदि छट्ठ सुहानी, जन्मे श्री नेमि स्वामी।
मही रत्न गर्भा कहलाई, सुर रत्न वृष्टि करवाई॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणशुक्लषष्ठ्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दिन पौष वदी ग्यारस था, सुत अश्वसेन पारस का।
शुभ न्हवन हेतु मेरू पर, उतरा सुरलोक मही पर॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णैकादश्यांजन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

तेरस सित चैत लुभानी, सन्मति प्रभु छटा सुहानी।
हुई सिद्धारथ घर वृष्टि, हैरण्य मयी हुयी सृष्टि॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

जयमाला

(मराठी चाल)

जन्म कल्याण प्रभु का निराला, त्रयलोकों में करता उजाला।
गुथूं जिनवर प्रभु भक्ति माला, प्रभू जन्म पूजन करूँ मैं नित ही॥

स्वर्ग आदि से च्युत होके आए, माता के गर्भ में वे सिधाए।
गीत सुर नर सभी मिलके गायें, प्रभु जन्म पूजन करूँ मैं नित ही॥

दुंदुभि शंख घंटा सु साजे, भेरी इंद्र विमानों में राजे।
जन्म होते स्वतः ही ये बाजे, प्रभु जन्म पूजन करूँ मैं नित ही॥

क्षीर सिंधु से जल भरके लाए, जिन न्हवन मेरूगिरि पर कराए।
शचि श्रृंगार शिशु का कराए, प्रभु जन्म पूजन करूँ मैं नित ही॥

देख अंगुष्ठ दायां विचारी, चिह्न तेरा कहें निर्विकारी।
बालपन से ही त्रय ज्ञान धारी, प्रभु जन्म पूजन करूँ मैं नित ही॥

इंद्र सौधर्म तांडव रचाए, नाट्य आनंद सबको लुभाए।
लख प्रभु नेत्र सहस बनाए, प्रभु जन्म पूजन करूँ मैं नित ही॥

जय तीर्थेश वृष तीर्थ कर्ता, मोह मद राग द्वेषादि हर्ता।
शीश तेरे चरण नित्य धरता, प्रभु जन्म पूजन करूँ मैं नित ही॥

घत्ता- सुजन्म कल्याणक, जग हितकारक, तीर्थंकर तव ध्यान धरुँ।
जिनपूज रचाऊँ, तव गुण गाऊँ, अर्चन कर निज पुण्य भरुँ॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त-श्रीवृषभादिवीरांत-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

तप कल्याणक पूजन

स्थापना

वैराग्य को धारण किया तुम, आत्म वैभव जान कर।
तन भोग भव नश्वर गिने तुम, नित्य आतम मानकर॥
चेतना की सिद्धि पाने, जाय वन दीक्षा धरी।
भाव समता धारकर जिन, कुमति ममता की हरी॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्री वृषभादि महावीर-पर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरा:! अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्री वृषभादिमहावीर-पर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरा:! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-श्री वृषभादिमहावीर-पर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरा:! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं॥

अष्टक

(तर्ज- दर्शविशुद्धि भावना...)

क्षीरोदधि का निर्मल नीर, भव भव की मेटे सब पीर।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन तन का ताप हरे, जिन पद अर्चें पाप हरें।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत है अक्षय फलदाय, जिन पद पूजें पाप नशाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।

पुष्प मनोहर काम विनाश, जिनवर पूज लहूँ शिववास।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

क्षुधा वेदनी होवे नाश जिन पद चरु धरूँ ले आस।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दीपक भव का तिमिर हरे, आरति कर चिद् ज्योति भरे।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

वसु विधि कर्म नाश के काज, वह्नि धूप जलाए आज।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

मोक्ष महाफल की अरदास, सिद्धालय में हो मम वास।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

नीरादिक वसु मंगल द्रव्य, पूज लहें निज सिद्धि भव्य।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।
तप कल्याणक पूज रचाय तीर्थंकर होवें सुखदाय।
नमूँ जिनदेव सिद्ध साक्षी दीक्षा स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तप कल्याणक के अर्घ

छंद-चौपाई

नीलांजना की मृत्यु जानी, उमड़ा वैराग्य कल्याणी।
जाकर के सिद्धारथ वन को, तप कीना शिव रमा वरन को।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णानवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देखा उल्कापात विनश्वर, जाना सांसारिक सुख नश्वर।
अजित देव तप धारण कीना, नृपति हजार संग चल दीना।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख विघटन मेघों का भारी, तत्क्षण जानी सृष्टि सारी।
मुक्ति रमा से परिणाने को, चले प्रभु दीक्षा पाने को।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लपूर्णिमायां तपोमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उमड़ा जब वैराग सुपावन, लौकांतिक कीना शुभ वंदन।
अभिनन्दन जिन दीक्षा धारी, माघ शुक्ल द्वादश तिथि प्यारी।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण हुआ जब जिन को, शुभ वैशाख सुदी नौमी को।
तप धारा नशने विधि पहरा, धारण करने मुक्ति सेहरा।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लनवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जानी जब नश्वरता जग की, आस हुई शुभ मुक्ति गगन की।
ऊर्ज वदी तेरस वह प्यारी, पद्मप्रभ जिन दीक्षा धारी।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देखा जब पत्तों को झड़ते, राज्य त्याग करने को अड़ते।
पहना तब मुक्ति का बाना, मानो मोक्ष महल परिधाना।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन सर्वार्थ नागतरु श्रेष्ठा, धारा तप बनने जग ज्येष्ठा।
चंद्र देव पद पद्म नमामि, बनने चले मुक्ति के स्वामी।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग ना मन को भाया, सिद्धालय का वास लुभाया।
मार्गशीर्ष शुक्ला एकम को, दीक्षा धारी अघ मेटन को।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्ल प्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिम का नाश हुआ जब देखा, जगत् अथिर तज शिवमग पेखा।
माघ द्वादशी कृष्ण पक्ष में, धारि दीक्षा सहेतुक वन में।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन अंधियारी एकादश, लौकान्तिक सुरगण गाया यश।
श्रेयनाथ जिन दीक्षा धारी, पद पाने अविकल अविकारी।।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस तिथि फागुन शुभ श्यामा, तप धारो दुर्द्धर अभिरामा।
बालयति हे प्रथम जिनेश्वर, मदन विनाशक हे! योगीश्वर।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर अति निर्मल भाव विशुद्धा, मघ सुदि चौथ भई अति शुद्धा।
तप धार्‌यो जिनवर निज चित्ता, भव भोगन से हुये विरक्ता।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात हुआ जब भारी, तब प्रभु ने वैराग्य विचारी।
पीपल वृक्ष सहेतुक वन था, ज्येष्ठ कृष्ण द्वादश का दिन था।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीरण तृण सम भोग विचारे, राज-पाट सब करे किनारे।
भाद्र शुक्ल तेरस तप धारो, नाथ आप निज धर्म सम्हारो।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रशुक्लत्रयोदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहुँचे नाथ आम्र कानन में, दीक्षित हुये नंद तरुतल में।
मदन बारवें हे चक्रीश्वर, देव आप षोडश तीर्थंकर॥16॥
ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम् सुदी वैशाख नवीना, षट्खंडी भू भी तजदीना।
पंच मुष्टि कर ध्यान लगाया, सहेतुक वन पावन कहलाया॥17॥
ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्रि तीर्थ मदनेश्वर अर जिन, देख पयोधर विघटन इक दिन।
मार्गशुक्ल दशमी घर छोड़ा, तप धर नाता शिव से जोड़ा॥18॥
ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जग की माया नहीं भायी, लौकान्तिक गुणगाथा गायी।
मल्लिनाथ मंगसिर सित ग्यारस, चले चाखने मुक्ति का रस॥19॥
ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वैशाख वदी दशमी को, चल दिए प्रभु मुक्ति वरने को।
पंचमुष्टि कर दीक्षा धारी, मुनिसुव्रत जय देव तुम्हारी॥20॥
ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपिन चैत्र तरु बकुल सुपावन, मुक्ति का करने अभिवादन।
त्रयशत राजा सह नमि जिन ने, धारि दीक्षा मुक्ति वर बनने॥21॥
ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़कृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग लगे जग के जब फीके, वन सहकार बास तरु नीचे।
नेमी जिन दृढ़ दीक्षा धारी, विधि क्षय करने की तैयारी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणशुक्लषष्ठम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज पाट वैभव तज करके, अश्वत्था वन में जाकर के।
तप लीना सब विधि हरने को, मोक्ष महल में पग धरने को।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चले राज्य वैभव तज सारा, जाना जब संसार असारा।
कानन नाथ साल तरु छाया, पंचमुष्टि कर तप अपनाया।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भव तन भोग शरीर से, धारा तुम वैराग।
बाह्याभ्यंतर संग सब, सिद्ध साक्षी में त्याग।।

(चौपाई)

जय जय तीर्थंकर जिन स्वामी, जिन दीक्षा ली तुम शिव गामी।
भाव विरक्ति का मन आया, लौकांतिक सुर तव गुण गाया।।

नर सुर इंद्र अरु विद्याधर, वन में चाले शिविक उठाकर।
पंचमुष्टि कचलोंच सु कीना, हुए दिगम्बर आतम लीना।।

नृप गृह प्रथम पारणा पाई, पंचाश्चर्य हुए सुखदायी।
दुर्द्धर तप तुमने बहु कीना, लहा विपुलमति ज्ञान नवीना।।

ऋद्धि सिद्धि तुम नेक सु पायी, प्राणी मात्र को जो सुखदायी।
तेरह विध चारित को पाला, जिस पर मोहित मुक्ति बाला।।

चउ छह पक्ष अशन तुम करते, कर्म कालिमा चित की हरते।
वर्षा शीत उष्ण शुभ योगा, कर्म नाश हितु धरे त्रियोगा।।

तप कल्याणक पूजन करते, भव्य पाप मल अपना हरते।
हम सब तेरी पूज रचावें, निश्चित स्वर्ग मोक्ष पद पावें।।

दोहा- तप कल्याणक अर्चना, पाप पुंज दहकाय।
संयम नौका जे चढ़ें, शिव वनिता परिणाय।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त-श्री वृषभादि वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ज्ञान कल्याणक पूजन

स्थापना

दोहा- ज्ञानावरणी नाशकर केवल बोधि पाय।
सुर नर गण पूजें सदा, समवशरण सुखदाय।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्त-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति जिनेन्द्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्त-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति जिनेन्द्र समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्त-श्रीवृषभादिमहावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति जिनेन्द्र समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

(दोहा छंद)

जल निर्मल निर्मल करे, आतम का सब मैल।
कल्याणक शुभ ज्ञान का, पूज गहूँ शिव शैल।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

चंदन तन का ताप नश शीतलता प्रगटाय।
भवाताप नशने यहाँ, चंदन रहे चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत से निश्चित मिले, अक्षय मुक्ति वास।
अक्षत तव पद मैं धरूँ, पाऊँ सिद्ध निवास॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥

वास पुष्प की वासना, तजूँ करूँ निज वास।
सुमन चरण तव में धरूँ, पाऊँ सिद्ध निवास॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

अन्नादिक भोजन सभी क्षुधा नहीं नश पाए।
केवल जिन मैं पूजता, स्वात्म भोज मिल जाए॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञान प्राप्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप बिना जग अंध है, दीप देय परकाश।
केवल ज्योति पूजता, धर मन में विश्वास॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

वसुविध कर्म नशावने, धूप अग्नि में खेय।
वसुविधि नश वसु गुण लहूँ, लखूँ सिद्ध को ध्येय॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

सब ऋतु के फल लायकर, निष्फल जीवन जान।
केवलज्ञानी को जजूँ, फल पाऊँ निर्वाण॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

नीरादिक वसु द्रव्य ले, पद अनर्घ्य के हेत।
भाव सहित मैं नित जजूँ, पाऊँ सिद्ध निकेत॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

ज्ञान कल्याणक के अर्घ्य

छंद-सोरठा

लह्यो केवलज्ञान, फागुन वदी एकादशी।
आदिनाथ भगवान, तव युग चरणों में रमूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णैकादश्यांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक देह, लही अर्द्ध विधि नाशकर।
सम-अवसरण सुनेह, सित ग्यारस शुभ पौष की।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषशुक्लैकादश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशा विधि जंजाल, कार्तिक कृष्णा चौथ की।
जाने लोक तिहुँ काल, जिन संभव, संभव किया।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आई पौष चौदश, क्षपक श्रेणी जिनवर चढ़े।
अभिनंदन प्रभू नित, त्रययोगों से मैं जजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषशुक्लचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर धर्मसभा, चैत शुक्ल एकादशी।
केवलज्ञान सु महा, पूजा कर मैं भी लहूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैतशुक्लैकादश्यांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ला पूनम, शुभ केवल लक्ष्मी लही।
फैले ज्ञान रश्मी, पद्म स्वामी पद पद्म में।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लपूर्णमायां केवलज्ञानमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदी षष्ठी, दोष अठारह नश दिये।
सुरनर गीत गातै, सुन प्रभुवर दिव्य ध्वनि॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णाषठ्यांकेवलज्ञानर्मंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सतमी फागुन असित, प्रभु सयोग केवली हुये।
खुशियाँ छाएँ अगणित, चन्द्रस्वामी पद पूजतै॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यांकेवलज्ञानर्मंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक तन, कार्तिक सित द्वितीया महा।
जिन तीर्थ वर्तन, सुविधिनाथ जिन ने किया॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिकशुक्लद्वितीयायांकेवलज्ञानर्मंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया ज्ञान अनंत, शुभ सहस्य चौदस वदी।
सुरनरादि प्रणमंत, शीतल जिन के चरणों में॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णाचतुर्दश्यांकेवलज्ञानर्मंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद पाया अरहंत, अमा तिथि शुभ माघ माह।
मम प्रणाम अनंत, श्रेय केवली के चरण॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघअमावस्यांकेवलज्ञानर्मंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ दौज उजियार, केवल ज्ञानी जिन हुये।
मेटो मोह अँधियार, वासुपूज्य जग पूज्य हो॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुक्लदिव्तीयायकेवलज्ञानर्मंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर चारों अरि अंत, हुये सकल भगवंत तुम।
भर दो ज्ञान अनंत, विमल विमल कर दो मती॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णषष्ठ्या केवलज्ञानमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मावस चैत्र महान, फल पाया पद तीर्थ का।
अनंतनाथ भगवान, तुम पद में नंतो तिरे॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णाअमावस्यांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म विनाश, पौष माह पूनम तिथि।
फैला धर्म प्रकाश, धर्मनाथ केवलि हुये॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौषपूर्णिमायांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकटा केवलज्ञान, पौष शुक्ल दशमी सुभग।
शांतिनाथ भगवान, दस अतिशय युत देवता॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधु सित तीज महान, पंचम ज्ञान प्रकाश कर।
कुन्थुनाथ भगवान, कवलाहार रहित हुये॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लतृतीयायांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिनराय, गुणस्थान तेरह लिया।
सुर नर अति हर्षाय, समवशरण इन्द्रन रचा॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिकशुक्लद्वादश्यांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया कर्म का छेव, पौष कृष्ण द्वितीया तिथि।
मल्लिनाथ जिनदेव, केवल ज्ञानी हो गये॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णद्वितीयायां केवलज्ञानमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाने नरभव सार, नवमी माधव कृष्ण की।
घाति कर्म निरवार, मुनि सुव्रत केवली हुये॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखकृष्णनवम्यांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विनी नखत उदय, अगहन शुक्ला ग्यारसी।
पाई शाश्वत विजय, घाति कर्म को नाशकर॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विनी शुक्ल एक, अर्द्ध अरि सब हर लिये।
पाया ज्ञान सु नेक, नेमिनाथ भगवान ने॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं अश्विनशुक्लप्रतिपदायांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णा चैत्र सुमास, धन्य चतुर्थी हो गई।
कीन्हा आतम वास, पार्श्वनाथ जिनवर नमूँ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघव वदी दशमी, केवल उजियारा हुआ।
फैली सु ज्ञान रश्मि, पूजूँ सन्मति वीर को॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लदशम्यांकेवलज्ञानमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चार घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
समवशरण रचना धनद, करे पाप की हान।।

(चौपाई)

मोह कर्म को आप नशाया, ज्ञानावरण नहीं रह पाया।
दर्शनावरण सर्व प्रकृतियाँ, अंतराय की तज विकृतियाँ।।

चार घातिया कर्म विनाशे, केवलज्ञान सुतत्त्व प्रकाशे।
सर्वदर्शी गतरागी स्वामी, बल अनंत तुम में शिवगामी।।

समवशरण में अष्ट भूमियाँ, पुण्य नीर की बहती नदियाँ।
मानस्तंभ चार सुखकारी, गोपुर द्वार चार अघहारी।।

बीस सहस सोपान बताये, मुहुर्त मात्र में भवि चढ जाए।
द्वादश सभा भव्य मन मोहे, तीन पीठ ऊपर जिन सोहे।।

परमौदारिक रूप तिहारा, मिथ्यातम हरता है सारा।
प्रातिहार्य वसु के तुम धारी, मंगल अष्ट सदा सुखकारी।।

केवल ज्ञानी महिमा न्यारी, गणधर ना कह पावें सारी।
कल्याणक की पूज रचावें, निश्चित केवल बोधि पावे।।

दोहा- मन वच तन को शुद्ध कर, केवल पूज रचाएँ।
मोह तिमिर अज्ञान सब, भवि का शीघ्र नशाएँ।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानकल्याणकप्राप्त श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नंत चतुष्टय सहित जिनेश्वर, प्रातिहार्य वसु शोभित हैं।
बारह गण के मध्य विराजित, भविजन जिन पर मोहित हैं।।
मानथंभ चउ अष्ट भूमियाँ, सहस बीस सोपान सजे।
ऐसे तीर्थंकर को वंदन, इंद्रादिक शत जिन्हें भजें।।

गुण छ्यालिस संयुक्त हैं, तीर्थंकर भगवान।
समवशरण में मैं जजूँ, पाने केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं समवशरण-स्थित-जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् मति श्रुत अवधि धारक, ज्ञान मनःपर्यय युक्ता।
यथायोग्य त्रेसठ हैं ऋद्धि, निश्चित भावी हैं मुक्ता।।
वृषभसेन को आदि लेकर, जिन को अर्घ चढ़ाता हूँ।
योगत्रय से गणाधिपों की, नित-नित पूज रचाता हूँ।।

लोकत्रय के केवली, अरु तिहुँकाल गणेश।
भाव सहित वसुद्रव्य ले, पूजें भव्य हमेश।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्ठिऋद्धिप्राप्त-गणधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक पूजन

स्थापना

चाल- श्रीमत वीर

मुक्ति रमा के कंत जिनेश्वर, सिद्ध गुणी निज आत्म निवासी।
सर्व करम रज आप मिटाकर, अविचल पद पाया भवनाशी।।
भाव द्रव्य नौ कर्म निवारक, अनुपम गुणनिधि अरु अविकारी।
आतम का सब वैभव पाने, मोक्ष कल्याणक धोक हमारी।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त श्रीवृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त श्री वृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त श्री वृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।।

(तर्ज- सुरपति ले अपने शीश...)

श्री सिद्ध प्रभु भगवान करो कल्याण, सु शिवपद दायी,
हम मोक्ष की पूज रचाई॥
क्षीरोदधि शुचि जल लाकर के, सिद्धों को नित्य चढ़ाकर के।
विधिका प्रक्षालन नित्य करूँ मैं भाई, हम मोक्ष की पूज रचाई॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

चंदन के कलश भराकर के, सिद्धों को पूजूँ हर्षाके।
कर योग रोध हे जिनवर शिवपद पाई, हम मोक्ष...।टेक॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

अक्षत के थाल भराए हैं, अक्षय पद पाने आये हैं।
भक्ति वश तेरे चरणों पूज रचायी हमें तेरी याद सतायी॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।

सब ऋतु के सुमन मंगाये हैं, हम काम नशाने आये हैं।
सिद्धों की पूजा कर निज की सुध आयी, हम मोक्ष की पूज रचायी॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

सिद्धों को चरु चढ़ाता हूँ, मैं अपनी क्षुधा मिटाता हूँ।
सिद्धार्चन से शाश्वत निज अमृत पायी, हम मोक्ष की पूज रचायी॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गौ घृत का दीप प्रकाश करे, मम मोह तिमिर का नाश करे।
पाऊँ मैं केवल ज्योति, अरज यह लायी, हम मोक्ष की पूज रचायी॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

दशगंध बंध विधि का खोले, शिव धूप चढ़ा हौले-हौले।
नादिकाल की अशुभ गंध नश जायी॥ हम मोक्ष की पूज रचायी॥
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

शिवफल दायक फल लाया हूँ, सिद्धों के चरण चढाया हूँ।
मम उर में विश्वास, कर्म जर जाई, हम मोक्ष की पूज रचायी।।
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

वसु विधि मय अर्घ बनाया है, मन वसु गुण पर ललचाया है।
निज सिद्धि पाने अर्घ्यं की भेंट चढाई, हम मोक्ष की पूज रचायी।।
ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मोक्ष कल्याणक के अर्घ्य

छंद-चउबोला

माघ कृष्ण चौदस को प्रभु ने, मुक्ति वधू को परिणाया।
अष्टापद से आदिनाथ ने, शाश्वत निर्मल पद पाया।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णचतुर्दश्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजित जिनेन्द्र चतुर्थ काल में, प्रथम हुये तीर्थंकर हो।
चैत्र सुदी पंचम को स्वामी, प्राप्त किया शिव शंकर हो।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लपंचम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर त्रय योग सूक्ष्म अति अपने, तुम अयोग केवली हुये।
चेत षष्ठी उजियारी आयी, शीश वातवलय तनु छुये।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लषष्ठम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वैशाख शुक्ल षष्ठी को, मोक्ष महल में चरण धरे।
अभिनंदन जिनवर को वंदन, भव-भव के संताप हरे।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लषष्ठ्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ सम्मेद शिखर से, सिद्ध निकल जिननाथ हुए।
चैत सुदी एकादशी प्यारी, सिद्ध जनों के साथ हुए।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लएकादश्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चतुर्थी आई, नाथ हुए शिवपुर वासी।
मैं जिनपद में अर्घ चढ़ाऊँ, बनने सिद्धालय वासी।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सुपार्श्व जब मोक्ष पधारे, फागुन वदि सतमी जानी।
आठ कर्म का फंदा तोड़ा, पहुँचे शिवपुर रजधानी।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन कृष्ण सप्तमी प्यारी, महाप्रयाण नाथ कीना।
सिद्ध बना अपने भीतर ही, जिनवर मुझे रमा लीना।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादो सुदी अष्टमी के दिन, सुविधिनाथ शिवपद पाया।
उसी भाव को लेकर में भी, पावन तव चरणों आया।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रपदशुक्लअष्टम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन सुदी अष्टमी मंगल, सिद्ध राज पद जीत लिया।
ऐसा ही पद पाने तुमको, मैंने अपना मीत लिया।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं अश्विनशुक्लाष्टम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन, सीधे पहुँचे सिद्ध सदन।
श्रेयनाथ स्वामी श्रेयस्कर, जिनवर तुमको नित्य नमन॥11॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणशुक्लपूर्णिमायांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादो सुदि चतुर्दशी प्यारी, कर्मों को आहूत किया।
मोक्ष गये मन्दारगिरी से, शिवनारी को संग किया॥12॥
ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रपदशुक्लचतुश्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णाषाढ़ अष्टमी पावन, निराकार शिवपद पाया।
विमल मति मम विमल भाव हों, अतः विमल पद में आया॥13॥
ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़कृष्णाष्टम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत चतुर्थी श्री अनंत जिन, मुक्ति श्री आधीन हुये।
अष्ट कर्म का नाश किया अरु, सिद्धालय में लीन हुये॥14॥
ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ सुदि तिथि चौथ को प्रभुवर, धर्मनाथ विधि नाश किया।
धर्म तीर्थ का किया प्रवर्तन, आत्मधर्म फिर प्राप्त किया॥15॥
ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ वदी चौदस शांति प्रभो, प्राप्त किया पद अविनाशी।
तुम्हें पूजते पूज्य बने प्रभु, हम भी मुक्ति अभिलाषी॥16॥
ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माधव सुदी एकम् कुंथु जिन, भव नश मोक्ष प्राप्त कीना।
तव पद में मुक्ति पाने को, अर्पित ये जीवन कीना।।17।।
ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लप्रतिपदायांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्रायनमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मावस चैत अरह जिन स्वामी, गये मोक्ष तज भव अटवी।
हे प्रभु मैं भी कर्म नाश कर, पाऊँ तुम जैसी पदवी।।18।।
ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णाअमावस्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्रायनमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ल पंचमी अवसर, शिव सुख पाया बालयती।
मेरा भी भव भ्रमण मिटा दो, मल्लिजिनेश्वर परमयती।।19।।
ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनशुक्लपंचम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्रायनमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिन नाशा विधि को, लेकर सुव्रत आलंबन।
फागुन कृष्ण द्वादशी के दिन, मेटा भव का आक्रंदन।।20।।
ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रायनमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वैशाख कृष्ण चौदस को, सिद्धालय में स्थान लिया।
कर्म नशें उनके जिनने भी, नमि जिनवर का नाम लिया।।21।।
ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्रायनमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल सप्तमी षाढ़ मास की, विधि अघातिया हनन किया।
ऊर्जयंत जा नेमी जिन ने, मुक्ति रमा से मिलन किया।।22।।
ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़शुक्लसप्तम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रायनमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुकुट सप्तमी का दिन पावन, पावन गिरि सम्मेद शिखर।
नाथ हुये शिवपुर के वासी, छोड़ दिया संसार भंवर।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणशुक्लसप्तम्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्ण चौदस के दिन, दीपों का त्यौहार हुआ।
महावीर प्रभु मुक्त हुये अरु, गौतम केवल ज्ञान हुआ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णाअमावस्यांमोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्रायनमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- द्रव्य भाव नो कर्म को, पूर्ण नाशकर आप।
मुक्ति रमा तुमने वरी, तजा सकल संताप।।

(तर्ज- हे चंद्रप्रभु तुम)

हे तीर्थनाथ जिनवर महंत भवि जीवों को सुख दायक हो।
सद् धर्म प्रवर्तक स्वात्म रसिक, प्रभु शिव पुर के अधिनायक हो।।
हम भक्तिभाव वश तव चरणों में पूज रचाने आये हैं।
तव गुण निधि लख निज गुण पाने, सुंदरतम भाव बनाए हैं।।
त्रेसठ प्रकृति नाश केवली, आत्म धर्म परचार किया।
नंतर योग रहित जिन बनकर, प्रकृति सर्व विनाश किया।।
अर्हत् पद को त्याग आपने, शुद्ध सिद्ध पद को पाया।
जिसे देखकर मुक्ति रमा का, भी मन तुम पर ललचाया।।
नंत काल तक गुण अनंत तुम निज चेतन के पाये हैं।
निज अनंत गुण प्रकटाने को निर्मल भाव बनाये हैं।।
सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन अनंत, बल सुख अनंत तुमने पाया।
अव्याबाध अवगाहनत्व गुण, अगुरुलघु सूक्षम भाया।।

वसु गुण से प्रभुवर मंडित, वसु वसुधा पर तुम राजित हो।
मम आतम के हर प्रदेश पर, नंत गुणों से साजित हो।।
निज चेतन की निधी आपने, नंत काल को पायी है।
अयोग केवली दूल्हा बनकर, शिव कन्या परिणायी है।।
निराकार तुम नित्य निरंजन, निष्कर्मा निकलंक बने।
अनुपम अचल अतुल अविनाशी, अकल अनंत अभेद बने।।
प्रभु चैतन्य सुपिण्ड सुगुण धन, नित आतम के भोगी हैं।
जो तुझको नित ध्येय बनाते, ध्यानी ध्याता योगी हैं।
ध्यान आपका रोग नशाता, भव भोगों का नाश करे।
इसीलिए हम नित्य निरंतर, ध्यान लगा पद वास करें।।
कल्याणक निर्वाण आपका, निश्चित मुक्ति दाता है।
भव्य जीव ही पंच कल्याणक की पूजा कर पाता है।।
दोहा- पूजा मोक्ष कल्याण की, पाप पंक को धोए।
दुख दुर्गति सब नाश हो, बीज पुण्य सुख बोए।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणक प्राप्तेभ्यो-चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

घत्ता- श्री सिद्ध अनंता, भज भगवंता, कर्म नशावन पूज करुँ।
वसु कर्म नाशकर, चरण वासकर, स्वात्मप्रतिष्ठा नित्य करुँ।

इत्याशीर्वादः / पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सिद्ध भक्ति

असरी जीवघणा उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार मणायारा लक्खणमेयं तु सिद्धाणं।।1।।
मूलोत्तर-पयडीणं बंधोदय-सत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा अट्ठगुणातीद-संसारा।।2।।
अट्ठविय-कम्म-वियला सीदी भूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठगुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा।।3।।

सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्धि-सब्भावा।
तिहु अण सिर सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे॥4॥
गमणागमण विमुक्के विहडिय-कम्म-पयडि-संघारा।
सासय सुह संपत्ते ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥5॥
जय मंगल-भूदाणं विमलाणं णाण दंसणमयाणं।
तइलोय सेहराणं णमो सया सव्व सिद्धाणं॥6॥
सम्मत्त-णाण दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥7॥
तव-सिद्धे णय-सिद्धे संजम सिद्धे चरित्त-सिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥8॥

इच्छामि भन्ते! सिद्ध भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त-जुताणं अट्ठविह कम्मविप्प-मुक्काणं अट्ठ गुण-संपण्णाणं उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं तव सिद्धाणं-णयसिद्धाणं संजम सिद्धाणं चरित्त सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाण-कालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अच्चेमि पूज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण-सम्पत्ती होउ मज्झं।

इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं कायोत्सर्गं करोमि।

भूमि शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा। (जल के छींटे लगावें)
ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। पुष्प क्षेपण करें।

सर्वशुद्धिमन्त्र

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकमान्यानन्यधर्मतीर्थंकराय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्राय पवित्रजलेन स्थलशुद्धिं होमकुण्डशुद्धिं पात्रशुद्धिं समिधाशुद्धिं, साकल्लशुद्धिं च करोमि।

(जल द्वारा पात्रों की शुद्धि करें)

यन्त्र स्थापन मन्त्र

अर्हं मन्त्रं नमस्कृत्य रत्नत्रयतपोनिधिं,
सिद्धयन्त्रं स्थापयामि सर्वोपद्रवशान्तये।

श्रीपीठे विनायकयन्त्रस्थापनं करोमि।

(यन्त्र स्थापित करें)

कुण्ड शुद्धि मन्त्र

भो वायुकुमार! सर्वविघ्नविनाशनाय महीपूतां कुरु-कुरु हूं फट् स्वाहा।

(वस्त्र से कुण्ड साफ करें)

भो मेघकुमार! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं झं यं क्ष्वीं क्षः भूः फट् स्वाहा।

(जल से भूमि शुद्ध करें)

भो अग्निकुमार! धरां ज्वालय ज्वालय अं हं सं तं पं स्वं झं यं क्ष्वीं क्षः भूः फट् स्वाहा।

(कपूर की डली जलाकर अग्नि से शुद्धि करें)

चूर्णानि संमर्द्य सितानि पीतानि रक्तानि हरिन्निभानि।
पात्रे निधायार्घ्यमनहर्यशील आचार्यभक्तिं प्रपहेद् यतात्मा।

(सौभाग्यवती स्त्रिया एवं अष्ट कुमारियाँ कुंड पर चूर्ण स्थापित कर क्षेपण करें)

कुण्डों पर मौली बन्धन

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चवर्णसूत्रेण त्रिवारान् वेष्टयामि।

(कुण्डों की कटनी पर सूत बांधे)

आसन मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रुं ह्रूं णिस्सहि आसने उपविशामि।

(आसन पर बैठे)

मौली बन्धन मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(हवन में बैठने वाले पात्रों के दाहिने हाथ में मौली बांधें)

मौनव्रत ग्रहण मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं मौनस्थिताहं मौनव्रतं गृह्णमि स्वाहा।

मंगल कलश जल शुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्म-महापद्म-तिगिंच्छ-केसरिपुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगा-सिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरि-कान्तासीतासीतोदानारीनरकान्ता- स्वर्णरूप्य-कूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्ध-जलसुवर्ण-घटप्रक्षालित- नव-रत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(मंत्र पढ़ते हुए मंगल कलश में जल भरें)

हवन विधि

मंगलकलश स्थापन

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्तिविधानाय पुण्याहवाचनार्थं मंगलकलशं स्थापयामि।

(ईशान कोण में मंगलकलश स्थापित करें)

दीपक स्थापन मन्त्र

रुचिर-दीप्तिकरं शुभदीपकं सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि

(दीपक स्थापित करें)

विनायक यन्त्र पूजा करके हवन का कार्य प्रारम्भ करें।

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा (जलम्)
ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमात्मेभ्यः स्वाहा (चन्दनम्)
ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्यः स्वाहा (अक्षतम्)
ॐ ह्रीं अर्हं नमो नृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा (पुष्पम्)
ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः स्वाहा (नैवेद्यम्)
ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तज्ञानेभ्यः स्वाहा (दीपम्)
ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तवीर्येभ्यः स्वाहा (धूपम्)
ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तसुखेभ्यः स्वाहा (फलम्)

द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे ह्यनर्घ्यमर्घं वितरामि भक्त्या।
भवे भवे भक्तिरुदारभावाद् येषां सुखायास्तु निरन्तराय॥

ॐ ह्रीं विनायक-सिद्धयन्त्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्ये कर्णिकमर्हदार्य-मनघं बाह्येऽष्ट-पत्रोदरे।
सिद्धान् सूरिवरांश्च पाठकगुरुन् साधूंश्च दिक्पत्रगान्।
सद्धर्मागमचैत्यचैत्यनिलयान् कोणस्थदिक्पत्रगान्
भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्रमहितान् तानष्टधेष्ट्या यजे॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि नवदेवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुत-ज्ञानायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं होमार्थं अग्नित्रयाधारभूतसमिधां स्थापयामि।

(होम कुण्ड में समिधा स्थापित करें)

अग्निस्थापनामन्त्रः

जिनेन्द्रवाक्यैरिव सुप्रसन्नैः संशुष्कदर्भाग्र-घृताग्निकीलैः
कुण्डस्थिते सेन्धन-शुद्धवह्नौ सन्धुक्षणं सम्प्रति-सन्तनोमि।'
ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्निस्थापयामि।

श्रीतीर्थनाथपरिनिर्वृति-पूतकाले, ह्यागत्य वह्नि-सुरपामुकुटोल्ल-सद्भिः।
वह्निव्रजैर्जिनपदेह-मुदारभक्त्या, देहुस्तदग्नि-महमर्चयितुं दधामि॥
ॐ ह्रीं चतुरस्रे तीर्थंकरकुण्डे गार्हपत्याग्नौ कृतसंस्काराय तीर्थंकर-परमदेवायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौकोर कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावे)

गणाधिपानां शिवयातिकाले-ऽग्नीन्द्रोत्तमागं - स्फुरदुग्ररोचिः।
संस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो, विघ्नौघ-शान्त्यै विधिना हुताशः॥
ॐ ह्रीं श्रीं वृत्ते द्वितीयगणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नौ कृतसंस्काराय-गणधरदेवायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गोल कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावे)

श्रीदक्षिणाग्निः परिकल्पितश्च, किरीटदेशात् प्रणिताग्निदेवैः
निर्वाणकल्याणक-पूतकाले, तमर्चये विघ्न-विनाशनाय।
ॐ ह्रीं श्रीं त्रिकोणे तृतीयसामान्यकेवलि-कुण्डे दक्षिणाग्नौ कृत-संस्काराय सामान्य-केवलिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(त्रिकोण कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावें)

आहुति मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं साधुभ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा,
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनायः स्वाहा,

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानायः स्वाहा, ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रायः स्वाहा।

पीठिकामन्त्राः

षट् त्रिंशत्पीठिकामन्त्रैः काम्यमन्त्रावसानकैः
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतीः॥1॥

सत्यजाताय नमः।	परमजाताय नमः।
स्वप्रधानाय नमः।	अक्षयाय नमः।
अनन्तज्ञानाय नमः।	अनन्तवीर्याय नमः।
नीरजसे नमः।	अच्छेद्याय नमः।
अजराय नमः।	अप्रमेयाय नमः।
अक्षोभ्याय नमः।	परमघनाय नमः।
लोकाग्रवासिने नमो नमः।	अर्हत् सिद्धेभ्यो नमो नमः।
अन्तःकृत सिद्धेभ्यो नमो नमः।	अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमो नमः।
अर्हज्जाताय नमः।	अनुपमजाताय नमः।
अचलाय नमः।	अव्याबाधाय नमः।
अनन्तदर्शनाय नमः।	अनन्तसुखाय नमः।
निर्मलाय नमः।	अभेद्याय नमः।
अमराय नमः।	अगर्भवासाय नमः।
अविलीनाय नमः।	परमकाष्ठयोगरूपाय नमः।
परमसिद्धेभ्यो नमो नमः।	केवलिसिद्धेभ्यो नमो नमः।
परम्परसिद्धेभ्यो नमो नमः।	अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

सम्यग्दृष्टे-सम्यग्दृष्टे। आसन्नभव्य-आसन्नभव्य। निर्वाणपूजार्ह-निर्वाणपूजार्ह। अग्नीन्द्राय-अग्नीन्द्राय स्वाहा।

आशीर्मन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।

(हवन करने वाले सब पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

जातिमन्त्राः

दशभिर्जातिमन्त्रैश्च तावद्-व्यग्रमानसः।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वेतावतिथाहुतीः॥
सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्यामि।
अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्यामि।
अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्यामि।
रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्यामि।
अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्यामि।
अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्यामि।
अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्यामि।
सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते। सरस्वती सरस्वती स्वाहा।

आशीर्मन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।

(प्रतिष्ठाचार्य हवन करने वालों पर पुष्प क्षेपण करें)

निस्तारकमन्त्राः

निस्तारकादिभिर्मन्त्रैः त्रयोदशमितैरयम्।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वेतावतिथाहुतीः॥३॥

सत्यजाताय स्वाहा — **षट्कर्मणे स्वाहा**
अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा — **श्रावकाय स्वाहा**
सुब्राह्मणाय स्वाहा — **अर्हज्जाताय स्वाहा**

ग्रामयतये स्वाहा **स्नातकाय स्वाहा**
देवब्राह्मणाय स्वाहा **अनुपमाय स्वाहा**
सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। निधिपते निधिपते। वैश्रमण वैश्रमण स्वाहा।

आशीर्मन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्यु विनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।

(पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

ऋषिमन्त्राः

ऋषिमन्त्रैर्महर्ष्युक्तैः अष्टादशमितैरथ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वेतावतिथाहुतीः।।4।।

सत्यजाताय नमः। **निर्ग्रन्थाय नमः।**
महाव्रताय नमः। **महायोगाय नमः।**
विविधद्धर्धये नमः। **पूर्वधराय नमः।**
परमर्षिभ्योः नमो नमः। **अर्हज्जाताय नमः।**
वीतरागाय नमः। **त्रिगुप्ताय नमः।**
विविधयोगाय नमः। **अङ्गधराय नमः।**
गणधराय नमः। **अनुपमजाताय नमो नमः।**

सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। भूपते भूपते। नगरपते नगरपते। कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा।

आशीर्मन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।

(हवन के सब पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

सुरेन्द्रमन्त्राः

अथ षोडशभिर्मन्त्रैः सुरेन्द्रादिभिरांजसैः।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वेतावतिथाहुतीः॥5॥

सत्यजाताय स्वाहा — दिव्यजाताय स्वाहा
नेमिनाथाय स्वाहा — कल्पाधिपतये स्वाहा
परम्परेन्द्राय स्वाहा — परमार्हताय स्वाहा
अर्हज्जाताय स्वाहा — दिव्यार्च्यजाताय स्वाहा
सौधर्माय स्वाहा — अनुचराय स्वाहा
अहमिन्द्राय स्वाहा — अनुपमाय स्वाहा

सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। कल्पपते कल्पपते। दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते। वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा।

आशीर्मन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।

(हवन के सब पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

परमराजादिमन्त्राः

मन्त्रैर्परमराजाद्यैअथ द्वादशसंख्यकैः।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वेतावतिथाहुतीः॥6॥

सत्यजाताय स्वाहा — अनुपमेन्द्राय स्वाहा
नेमिनाथाय स्वाहा — परमार्हताय स्वाहा
अर्हज्जाताय स्वाहा — विजयार्च्यजाताय स्वाहा
परमजाताय स्वाहा — अनुपमाय स्वाहा

सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। उग्रतेजः उग्रतेजः। दिशाञ्जय दिशाञ्जय। नेमि विजय नेमिविजय स्वाहा।

आशीर्मन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।

(हवन के सब पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

परमेष्ठिमन्त्राः

परमेष्ठ्यादिभिर्मन्त्रैः षडविंशतिमितैरथ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वेतावतिथाहुतीः॥7॥

सत्यजाताय नमः। **अर्हज्जाताय नमः।**
परमजाताय नमः। **परमार्हताय नमः।**
परमरूपाय नमः। **परमतेजसे नमः।**
परमगुणाय नमः। **परमस्थानाय नमः।**
परमयोगिने नमः। **परमभाग्याय नमः।**
परमर्द्धये नमः। **परमप्रसादाय नमः।**
परमकांक्षिताय नमः। **परमविजयाय नमः।**
परमविज्ञानाय नमः। **परमदर्शनाय नमः।**
परमवीर्याय नमः। **परमसुखाय नमः।**
परमसर्वज्ञाय नमः। **परमार्हते नमः।**
परमेष्ठिने नमो नमः। **परमनेत्रे नमो नमः।**

सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे। त्रैलोक्यविजय त्रैलोक्यविजय। धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते। धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा।

आशीर्मन्त्र

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु।

(हवन के सब पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

तत्पश्चात् जप मन्त्र की दशांश आहुतियाँ करें

विश्वशांति एवं कल्याण की भावना से निम्न शांति मंत्रों की आहुति दे सकते हैं।

वृहच्छान्तिमन्त्राः

1. णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
   ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यः सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।।1।।
2. ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु- विनाशनाय सर्वपरकृच्छ्रद्रोपद्रवविनाशनाय सर्व-क्षामडामर-विनाशनाय ॐ हां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।।2।।
3. ॐ हूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमंत्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः हूं सर्व-शान्तिं कुरु कुरु फट् स्वाहा।।3।।
4. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वविघ्नशान्तिर्भवतु स्वाहा।।4।।
5. ॐ ह्रां ह्रिं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।।5।।
6. ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थंकराय नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

7. ॐ अ ह्रां, सि ह्रीं, आ ह्रूं, उ ह्रौं, सा ह्रः जगदापद-विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।।7।।
8. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।8।।
9. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि- सत्प्रातिहार्य-शोभनपद-प्रदाय भ्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।9।।
10. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-शोभन-पदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।10।।
11. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य-शोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।11।।
12. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-शोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।।12।।
13. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्व-शान्तिर्भवतु स्वाहा।।13।।
14. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-शोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्व-शान्तिर्भवतु स्वाहा।।14।।
15. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-शोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्युं बीजाय सर्वोपद्रव-शान्तिकराय नमः सर्व-शान्तिर्भवतु स्वाहा।।15।।
16. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथाय प्रातिहार्याष्ट-सहिताय बीजाष्ट-मण्डन-

मण्डिताय-सर्वविघ्न-शान्तिकराय नमः शान्तिर्भवतु स्वाहा।।16।।

17. तव भक्तिप्रसादाल्लक्ष्मी-पुरराज्यगेह-पदभ्रष्टोपद्रवदारिद्र्योद्भवोपद्रव स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-प्रचण्डपवनानल-जलोद्भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूतपिशाच-कृतोपद्रवदुर्भिक्षव्यापारवृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु स्वाहा।।17।।

18. सम्पूर्णकल्याणमंगलरूपमोक्षपुरुषार्थश्च भवतु स्वाहा।।18।।

पुण्याहवाचन

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसञ्जाता निर्वाणसागर-प्रभृत-यश्चतुर्विंशति परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां।

ॐ सम्प्रतिकाल-सम्भववृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशति-परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां।

ॐ भविष्यतिकालाभ्युदय-प्रभवमहापद्मादिचतुर्विंशति-भविष्यत्परमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां।

ॐ त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमन्धरप्रभृतयो विदेहगतविंशति-परमदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां।

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां।

ॐ सप्तर्द्धिविशोभिताः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां।

इह वान्यनगर/ग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ता जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दान-तपो वीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु। सर्वजिनभक्तानां धनधान्यैश्वर्य-बलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्धन्ताम्। तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु कर्मसिद्धिरस्तु इष्टसम्पत्तिरस्तु। काममांगलोत्सवाः सन्तु पापानि शाम्यन्तु घोराणि शाम्यन्तु पुण्यं वर्धताम् धर्मो वर्धताम् श्रीवर्धताम् कुलगोत्रं चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु ह्रीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्र-चरणारविन्देष्वानन्द भक्तिः सदाऽस्तु।

शान्त्यष्टकम् (शान्ति भक्ति)

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् पादद्वयं ते प्रजाः।
हेतुस्तत्र विचित्र दुःखनिचयः संसारघोरार्णवः।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्णभूमण्डलो
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिलच्छायानुरागं रविः॥1॥

क्रुद्धाशी-र्विषदष्टदुर्जय-विषज्वालावलीविक्रमो
विद्याभेषजमन्त्र तोयहवनैर्याति प्रशान्तिं यथा।
तद्वत्ते चरणारुणाम्बुज-युगस्तोत्रोन्मुखानां नृणां।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसाशाम्यन्त्यहो विस्मयः॥2॥

सन्तप्तोत्तम-काञ्चनक्षितिधर-श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते।
पुंसां त्वच्चरण-प्रणाम-करणात्पीडाः प्रयान्ति क्षयम्।
उद्यद्भास्कर-विस्फुरत्करशत-व्याघातनिष्कासिता।
नाना देहि विलोचन-द्युतिहराः शीघ्रं यथा शर्वरी॥3॥

त्रैलोक्येश्वर-भंगलब्ध विजयादत्यन्त-रौद्रात्मकान्।
नाना जन्मशतान्तरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्र-दावानला-
न्नस्याच्चेत्तव पादपद्मयुगल-स्तुत्यापगावारणम्॥4॥

लोकालोकनिरन्तर-प्रविततज्ञानैकमूर्ते विभो।
नानारत्नपिनद्ध दण्डरुचिर-श्वेतातपत्रत्रयम्।
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः
दर्पाध्मातमृगेन्द्र-भीमनिनदाद्धन्या यथा कुञ्जराः॥5॥

दिव्यस्त्री-नयनाभिराम-विपुल-श्रीमेरुचूडामणे
भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर-प्राणीष्टभामण्डलम्।

अव्याबाध-मचिन्त्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम्।
सौख्यं त्वच्चरणारविन्द-युगल स्तुत्यैव सम्प्राप्यते॥6॥

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करोभासयं-
स्तावद्धारयतीह पंकजवनं निद्राति-भारश्रमम्।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्नस्यात् प्रसादोदय-
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत्॥7॥

शान्तिं शान्तिजिनेन्द्र शान्तमनसस्त्वत्पाद-पद्माश्रयात्,
सम्प्राप्ताः पृथिवीतलेषु वहवः शान्त्यर्थिनः प्राणिनः।
कारुण्यान्मम भक्तिकस्य च विभो दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वय देवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः॥8॥

शान्तिजिनं शशि-निर्मलवक्त्रं शीलगुणव्रत-संयमपात्रम्।
अष्टशतार्चित-लक्षणगात्रं, नौमि जनोत्तममम्बुज-नेत्रम्॥9॥

पञ्चममीप्सित-चक्रधराणां, पूजित मिन्द्र-नरेन्द्र गणैश्च।
शान्तिकरं गणशान्ति-मभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि॥10॥

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासन-योजनघोषौ।
आतपवारण-चामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः॥11॥

तं जगदर्चित-शान्तिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं पठते परमां च॥12॥

येऽभ्यर्चिता मुकुट-कुण्डल-हाररत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः।
तेमेजिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपा
स्तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवन्तु॥13॥

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु, शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः।

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवाव्याधयो यान्तुनाशम्॥14॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि॥15॥

तद् द्रव्यमव्ययमुदेतु शुभः स देशः
सन्तन्यतां प्रतपतां सततं स कालः।
भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण
रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षुवर्गे॥16॥

प्रध्वस्तघातिकर्माणाः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः॥17॥

इच्छामि भंते संतभक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाण-संपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं चउतीसातिसय-विसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेविंदमणिमय-मउड-मत्थयमहियाणं बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसिमुणिजदि-अणगारोवगूढाणं थुइसय-सहस्सणिलयाणं उसहाइवीर-पच्छिम-मंगल-महापुरिसाणं णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

(कायोत्सर्गं करोम्यहम्)

मण्डल विसर्जन

जगतः शान्तिविवर्धनमहसां प्रलयमस्तु जिनस्तवनेन मे (ते)
सुकृतबुद्धिरलं क्षमयायुतो जिनवृषे हृदये मम (तब) वर्तताम्

मोहध्वान्तविदारणं विशद् विश्वोद्भासि दीप्तिश्रियम्।
सन्मार्गप्रतिभासकं विबुधसन्दोहामृतापादकम्।
श्रीपादं जिनचन्द्रशान्तिशरणं सद्भक्तिमानेऽपि ते।
भूयास्तापहरस्य देव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम्॥

मंगलार्थं समाहूता विसर्ज्याखिलदेवताः।
विसर्जनाख्यमन्त्रेण वितीर्य कुसुमाञ्जलिं॥

ॐ ह्रीं अस्मिन् बिम्बप्रतिष्ठामहोत्सवे (कर्माणि) आहूयमान-देवगणाः स्वस्थानं गच्छन्तु अपराधक्षमापणं भवतु।

मंगल ध्वज विसर्जन

प्रमादाज्ञानदर्पाद्यैः विहितं विहितं न यत्।
जिनेन्द्रास्तु प्रसादास्ते सफलं सकलं च तत्॥1॥
अस्मिन्यज्ञे सुराहूताः शिष्टार्हत्प्रभुपूजने
इष्ट-मस्माकमापाद्य तुष्टा यान्तु यथायथम्॥2॥

(मंगलध्वज वेदी पर पुष्प क्षेपण करें)

यज्ञ दीक्षा समापन विधि

यज्ञोचितं व्रतविशेषवृतोह्यतिष्ठन्।
यष्टाप्रतीन्द्रसहितः स्वयमे पुरावत्॥
एतानि तानि भगवज्जिनयज्ञदीक्षा
चिह्नान्यथैष विसृजामि गुरोः पदाग्रे॥

अथार्हत् पूजासमापन-करणार्थं पूर्वाचार्यनुक्रमेण-सकल-कर्मक्षयार्थं भावपूजा-वन्दनास्तव-समेतं श्रीमच्छान्तिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

मुकुट, माला, यज्ञोपवीत, रक्षासूत्र का त्याग करें।

निर्वाण काण्ड (भाषा)

दोहा— वीतराग बदौं सदा, भाव सहित सिर नाय।
कहूं कांड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।1।।

चौपाई

अष्टापद आदीश्वर स्वामि। वासुपूज्य चंपापुरि नामि।।
नेमिनाथ स्वामि गिरनार। बन्दौ भाव-भक्ति उर धार।।1।।
चरम तीर्थंकर चरम शरीर। पावापुरि स्वामि महावीर।।
शिखर समेद जिनेश्वर बीस। भाव सहितबन्दौ जगदीश।।2।।
वरदत्त रायरु इन्द्र मुनिंद। सायरदत्त आदि गुणवृन्द।।
नगरतारवर मुनि उठकोड़ि। बदौं भावसहित कर जोड़ि।।3।।
श्री गिरनार शिखर विख्यात। कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।।
संबु प्रदुम्न कुमर द्वै भाय। अनिरुध आदि नमूं तसु पाय।।4।।
रामचंद्र के सुत द्वै वीर। लाड़नरिदं आदि गुणधीर।।
पांच कोड़ि मुनि मुक्तिमझार। पावागिरि बंदौ निरधार।।5।।
पांडव तीन द्रविड़ राजान। आठकोड़िमुनि मुकति पयान।।
श्रीशत्रुंजय गिरि के सीस। भावसहित वंदौ निशदीश।।6।।
जे बलभद्र मुक्ति में गये। आठकोड़ि मुनि औरहु भये।।
श्री गजपंथ शिखर सुविशाल। तिनके चरण नमूं तिहुंकाल।।।7।।
राम हनू सुग्रीव सुड़ील। गवयगवाक्ष नील महानील।।
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान। तुंगीगिरि बंदौं धरि ध्यान।।8।।
नंग अनंग कुमार सुजान। पंचकोड़ि अरु अर्घ प्रमाण।।
मुक्ति गये सोनागिरशीश। ते बंदौ त्रिभुवनपति ईश।।9।।
रावण के सुत आदि कुमार। मुक्ति गये रेवातट सार।।
कोड़ि पंच अरु लाख पचास। ते बन्दौ धरि परम हुलास।।10।।
रेवानदी सिद्धवर कूट पश्चिमदिशा देह जहं छूट।।
द्वै चक्रीदश कामकुमार। उठकोडि बंदौ भवपार।।11।।

बड़वाणी बड़नयर सुचंग। दक्षिण दिश गिरि चल उतंग।।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण। बंदौं भवसायरतर्ण।।12।।
सुवरणभद्र आदि मुनिचार। पावगिरिवर शिखर मझार।।
चेलना नदी तीर के पास। मुक्ति गये वदौ नित तास।।13।।
फलहोड़ी बड़गाम अनूप। पश्चिमदिशा द्रोणगिरिरूप।।
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहाँ। मुक्ति गये बंदौ नित तहां।।14।।
बालि महाबाल मुनि दोय। नागकुमार मिले त्रय होय।।
श्री अष्टापद मुक्ति मझार। ते बंदौ नित सुरत संभार।।15।।
अचलापुरकी दिशा ईशान। तहां मेढ़गिरि नाम प्रधान।।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय। तिनके चरन नमूँ चितलाय।।16।।
वशंस्थल वनके ढ़िग होय। पश्चिम दिशा कुंथुगिरि सोय।।
कुलभूषण देशभूषण नाम। तिनके चरणनि करूं प्रणाम।।17।।
दशरथ राजा के सुत कहे। देश कलिंग पांचसो लहे।।
कोटि शिला मुनि कोटि प्रमान। वंदन करूं जोर जुगपान।।18।।
समवशरण श्रीपार्श्व जिनंद। रेसंदीगिरि नयानानन्द।।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज। ते वदौं नित धरम जिहाज।।19।।
मथुरापुरि पवित्र उद्यान। जम्बूस्वामीजी निर्वाण।।
चरम केवली पंचकाल। ते बंदौं नित दीनदयाल।।20।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ। नित प्रति वंदन कीजे तहाँ।।
मन वच कायसहित सिरनाय। वंदन करहि भविक गुनगाय।।21।।
संवत सतरहसौ इकताल। आश्विनसुदी दशमी सुविशाल।।
'भैया' वंदन करहि त्रिकाल। जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल।।22।।

।।इति निर्वाणकाण्ड भाषा।।